राजस्थानी साहित्य सम्पदा

(निबन्ध - संग्रह)

सौभाग्यसिंह शेखावत
सहायक निदेशक
राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
बीकानेर

RAJASTHANI SAHITYA SAMPADA

•

प्रकाशक
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम,
बीकानेर

•

मुद्रक
साधना प्रेस
उच्च न्यायालय मार्ग, जोधपुर

•

प्रथम संस्करण १९७७ ई०

•

मूल्य : अठारह रुपया

प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी) बीकानेर राजस्थानी भाय नवीन सृजन नै प्रोत्साहन देवण रै साथै ही प्राचीन राजस्थानी साहित्य र उद्धार सारू भी प्रयत्नशील है। इणी योजना रै अन्तर्गत श्री सौभाग्यसिंह शेखावत द्वारा समय समय पर लिख्योड़ा महत्त्वपूर्ण निबन्ध राजस्थानी साहित्य सपदा' रै नाव सू प्रकाशित कर्‌या गया है।

सग्रह रा सगळा ही निबध शोधपूर्ण अर नई जाणकारी देवण वाळा है अर राजस्थानी साहित्य रै विद्यार्थिया तथा अनुसघानकर्तावा खातर खासतौर सू उपयोगी हैं। आशा है, ई प्रकाशन सू राजस्थानी प्रेमी लाभान्वित हुसी अर इ सू नवीन शोध-सारू प्रेरणा मिलसी।

दिनाक ३०-३-७७

धनजय वर्मा
सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य स गम (अकादमी)
बीकानेर

आमुख

अनुसधान क्षेत्र में अनेक अनुसधित्सुओ के प्रेरणा केन्द्र एव अकृत्रिम मधुर स्वभाव, मनस्विता एव सहायता की सहज प्रवृति के आगार श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के शोध निबधो का सग्रह 'राजस्थानी साहित्य सम्पदा" राजस्थानी अन्वेषको को अध्ययन अनुसधान के लिये प्रेरित करता रहेगा। श्री शेखावत के गहन एव व्यापक अध्ययन के साथ-साथ उनके मौलिक एव गम्भीर सर्वेक्षण, अनुशीलन एव मूल्याकन की स्पष्ट झलक सग्रह के सभी निबन्धो मे दिखाई देती हैं।

"राजस्थानी साहित्य सम्पदा' की उल्लेखनीय उपलब्धि उसका विषय वैविध्य है। सग्रहीत निबध केवल परिचय अथवा समीक्षा तक ही सीमित नही है अपितु इनमे साहित्य, सस्कृति एव भाषा के इतिहास मे नय नये तथ्य जोडने की विपुल सामग्री भी है। तमाच्छादित सदर्भो को प्रकाशित करने वाले ऐसे तथ्य है जो प्रचलित एव मान्य इतिवृत्ता का काया पलट कर देंगे। राजस्थानी रचनाओ एव रचयिताओ से सबधित इन निबधो में साहित्यकारो के मानसिक-विकास एव प्रभावशाली अभिव्यक्ति का सटीक परिचय मिलता है। लुप्त एव तमाच्छादित ग्रथो की खोज मे श्री शेखावत ने अपने जीवन का अधिकाश व्यतीत किया। उनके अध्यवसाय का ही यह सुपरिणाम है कि वे राजस्थानी साहित्य के इतिहास के अनेक नूतन तथ्यो को प्रकट कर सके। राजस्थानी साहित्य सपदा' के निबधो को देखकर किसी भी साहित्य प्रेमी को यह माग अनिवार्य लगेगी कि राजस्थानी साहित्य के पूर्णतर इतिहास का शीघ्र प्रणयन किया जाय। इस सग्रह मे केवल तथ्य परक अनुसधान की दृष्टि से भी यह एसी प्रचुर एव प्रामाणिक सामग्री है जिससे राजस्थानी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालो की अवधारणा का परिशोधन अनिवार्य हो जाता है। चारण साहित्य विषयक अत्यन्त विश्वसनीय सामग्री पहली बार इन निबधो मे उपलब्ध हुई है।

श्री शेखावत अपने निबधो मे अनेकानेक अनात और अख्यात रचयिताओ की ऐसी रचनाओ को प्रकाश मे लाए हैं जिनसे राजस्थानी का पाठक अब तक परिचित नही था। चादण खिडिया, हु गरसी, ओपा आढा, मल्लूनाथ कविया, सायाजी झूला नरहरिदास बारहठ, माईदान गाडण, हुक्मीचद खिडिया, आसकरण, सेभाचद, वीरभाण रतनू सगता सादू कवि चिमन, कृपाराम खिडिया, चैनकरण सादू, भूधरदास सूयमल मिश्रण, थिरपाल वाचक आदि। इन सभी साहित्यकारो की रचनाओ मे राजस्थानी भाषा, साहित्य एव सामाजिक परिवेश के सबध मे अत्यत महत्वपूर्ण स्रोत सामग्री उपलब्ध है। वितन अभिव्यक्ति एव लेखन प्रक्रिया की दृष्टि से भी इन रचयिताओ का राजस्थानी साहित्य पर व्यापक प्रभाव पडा है।

विषय-क्रम

विषय-क्रम

कवि चादरण खिडिया की रचनाएं



प्रसिद्ध कवि चादरण चारणों की खिडिया शाखा का व्यक्ति था। वह मारवाड़ के सूराचन्द ठिकाने के पाचडी नामक गाव का निवासी था राजस्थानी साहित्य के विद्वान् इतिहासकारों ने चादरण को सामान्य कवि घोषित कर उसकी उपेक्षा सी की है। 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तक में डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने चान्दरण के लिये 'चानरण खिडियो वि० स० १४९५ फुटकर रचनाएँ तथा नाटक' मात्र उल्लेख किया है। डा० मेनारिया ने न चादरण का वशपरिचय दिया है और न साहित्यिक परिचय ही। केवल वीर गाथा काल के कवियो मे उसकी नाम गणना की है।

'चारण साहित्य का इतिहास' के लेखक डा० मोहनलाल जिज्ञासु ने अपने ग्रन्थ में चान्दरण का प्राचीन काल के कवियो मे उल्लेख करते हुए इसे मारवाड परगने के बोर ग्राम का निवासी और जन्म तिथि अनुमानतः १३९३-९८ ई० के मध्य मानी है और राव जोधा राठौड़ के मडोर पर अधिष्ठित होने पर स० १५१५ मे टाडा के सोलखियों के पास से अपने पुरोहित दामा को भेज कर बुलाने तथा जैतारण परगने के भावलिया और खराडी नाम के दो ग्राम देने का उल्लेख किया है। डा० जिज्ञासु ने राव जोधा द्वारा चान्दरण को बुलवाने और दो ग्राम गोचालाय देने की साक्षी का छप्पय भी दिया है।[1] चानरण की रचनाओं के प्रसग मे लिखा है—"चानरण के बनाये हुए अनेक दोहे एव गीत चारण जाति मे प्रचलित हैं किन्तु प्राचीन होने के कारण उनका पता लगाना कठिन हो गया है।"[2]

---

१ चूक हुयौ चितौड राव रिडमल मारांणा।
दीनो चानरण दाय रंण कु भ रीसाणा॥
धर म्हारी दो छाड आपि श्रीमुख यो कहियो।
पटो नाय पावतो कवि टांडे जा रहियो॥
इम कहै राव राव्ळ सावौ भळै पुरोहित दामो मेलियो।
कर दीध मोहर नेग सभी गोधेलाय समप्पियो॥

२ चारण साहित्य का इतिहास, डा० मोहनलाल जिज्ञासु, पृ० १०१, ६२

'राजस्थानी सबद कोस' के सम्पादक श्री सीताराम लाळस ने कोश के प्रथम खण्ड म 'राजस्थानी साहित्य का परिचय' म लिखा है—'चानण खिडियो राव रणमल का समकालीन था। स० १४९५ वि० मे रचित उसका गीत उपलब्ध होता है"[१] तदनन्तर राव रणमल के चित्तौड म मृत्यु समय पर कटार द्वारा आक्रमक पर प्रहार करने का एक चार दोहो का गीत दिया है। गीत का प्रथम द्वाळा है —

अपूरब बात साभळो ग्रेही, रिम चूके अ्रित दिन रयण।
सूत तहिज काढो सुजडी, जागत काढ घणो जण॥

इस प्रकार राजस्थान के तीनो विद्वानो ने मध्यकाल के इस प्रसिद्ध कवि का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है। महाराणा कु भा टाडा के सोलखियो तथा मन्डोर के राव जोधा द्वारा सम्मानित चान्दण निस्स देह प्रतिष्ठा प्राप्त एव राज्य मान्य कवि था। नणसी सग्रहीत मारवाड के परगनो की विगत मे चान्दण को सूराचन्द ठिकाने के पाघडी ग्राम का निवासी अकित किया गया है और चान्दण के पिता का नाम लुम्बट (लुबट) बतलाया है। विगत मे यह भी वणन किया है कि पाघडी से वह महाराणा मोकल के पास चित्तौड गया। मारोठ (गोडावाटी) की विगत म लिखा है कि मोकल ने उसे मेवाड के दो ग्राम चूबरी और गुलछरी प्रदान कर अपने यहा रखा। ये सब घटनाएँ राव रणमल के स० १४९५ वि० मे चित्तौड म छलाघात से मारे जाने के आसपास की है। मारवाड की ख्यातो मे वणन है कि चित्तौड मे राव रणमल (म डोर) के मारे जाने पर उसका पुत्र राव जोधा मेवाड म भाग कर मारवाड मे आया और स० १५१० वि० तक मेवाड के राणाओ से प्रताडित तथा लडता भिडता रहा। राव जोधा के मारवाड की ओर पलायन कर जाने पर *चान्दण ने राव रणमल की मतदेह की दाहक्रिया* की ओर उसकी अस्थियो गगा मे प्रवाहित करने के लिये ले गया। स० १५१० तक राठौडो और सीसोदियो क पर स्पर आक्रमण प्रत्याक्रमण होते रहे। अ तनोगत्वा १५१० वि० म राव जोधा का मन्डोर पर अधिकार हुआ और उसने अपने विपत्तिकाल की समाप्ति के पश्चात चान्दण को बुलवा कर जोधपुर परगने के *खन्वा ठिकाने का सनडो, भीवावानी जाजीवाळ* तथा सोजत परगन का बीठारा और गोधाळाव चार ग्राम सासण म दकर कृतज्ञता प्रकट की।[२]

कवि चादण खिडिया रचित उल्लेखित गीत के अतिरिक्त राव रणमल राठौड पर रचित ११ सोरठे रणधीर राठौड की युद्ध वीरता के २२ सोरठे नीबा जोधावत क ३१ छन्द तथा भीमोत राठौडो पर सजित १७ सोरठे प्राप्त हुए हैं। ये तीनो रचनाए दोहा नायको की युद्ध वीरता,पराक्रम साहस आदि स सम्बधित हैं। प्राप्त रचनाओ की भाषा समसामयिक है।

नैणसी मुहता के नाम से प्रचलित ख्यात म राव रणमल के चित्तौड मे मारे जाने पर राठौड भीव, वरसल वरजाग भीमावत क चित्तौड म काम आने और भीमा चूडावत क पकडे जाने का वणन है। किन्तु जोधपुर राज्य की एक ख्यात मे

---

१ राजस्थानी सबद कोस, सम्पादक सीताराम लाळस, पृ० १२०
२ मारवाड रा परगना री विगत *राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान*, जोधपुर प्रथम भाग, पृ० ३७

व-जाग भीमोत के वृत्तात म वीकानेर के सस्थापक राव जीका का राव सूजा के समय जोधपुर पर चढाई करने का सकेत है। इस प्रकार वरजाग भीमोत के सम्बन्ध मे ख्यातो मे मतैक्य नही है। परन्तु कुछ भी हो, चान्दण खिडिया जोधपुर के राव जोधा का ममसा-मयिक और प्रीतिपात्र चारण था। उसका कवि रूप के बजाय, राव रणमल की चित्तौड म दाह्क्रिया करने के कारण राठौडा मे अधिक सम्मान और प्रेम था। यहा कवि चान्दण के काव्य के उदाहरण के लिये राव रणमल के सोरठे उद्घृत है—

ते थापेज त्रिनीग, मेवाडो मुरधर धणी।
जावँ जगम जीग, घरि आया वमामघन ॥ १ ॥

मळत मुणियण माट, मिळिया रिडमल मारवा।
पग तीजा लग पाट, चीतोडा द्रुड किया ॥ २ ॥

पठी कळजुग पूर, कुभो मन कूडा करँ।
चाचो मेरो चूर, राणान वर्ध थे रयण ॥ ३ ॥

कमधज जुन कियाइ, चीतोडँ गुण चाखिया।
मेळ तणा मन्त्र घाइ, राणा उवटीयो रयण ॥ ४ ॥

रवटीया अणवीह गहलाता ग्रहर नही।
सीह दुवारै सीह रादगुर बैठाव रयण ॥ ५ ॥

आधाणा गुण आह, वेसासियो सगपण वसै।
मारू राजा माह, सोह सात खणे मलगुर ॥ ६ ॥

कुण आगमे महपाल, पाट हथी चूरण प्रतख।
राणे ही रडमाल वेसवियौ वहिवा कियो ॥ ७ ॥

मेवाडा महि सार, सोहडा आगम सामठो।
कमधज कुजर मार सुनीइ सादळियो नही ॥ ८ ॥

ऊपर नीची आव, सोळै आगम मावठो।
चूना चलिव चेताव, जागावयो जडळग अणी ॥ ९ ॥

गहिळ न गो गजभीम, नीद अण नी सतपणो।
सूरे रिडमल सीम, जमदढ काढ जागवियो ॥ १० ॥

मडोर के राव चूडा के पुत्र भीम मे राठोडो की भीमोत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। जोधपुर के राव सूजा के शासनकाल (१५४९ १५७२) म राज्य क ममस्त कार्य-भार का दायित्व इमी भीम क वशज राठोड वरसल पर था। वैरसल का अनुज वरजाग भी अपने अग्रज के समान ही वीर, धीर और रजवट का निर्वाह करने वाला योद्धा था। चान्दण न वैरसल की वीरता सूचक १७ सोरठे रचे थे।

राजस्थान के उपलब्ध इतिहास ग्रथो मे वैरसल के वीर कार्यों का कही कोई वर्णन नही है। प्राप्त दोहो मे सूजा, वीसा, वरजाग, बीजा भाजराज आदि का नाम सकेत

प्राप्त है। लगता है कि वरसल ने जोधपुर के राव सूजा के शासनकाल में बाहडमेरा और पोकरणा राठौडो पर आक्रमण कर बाहडमेर के राठौडो से सूजा के पुत्र राजकुमार नरा की मृत्यु का बदला लिया था। सोरठा में तलवाडा की ओर के मल्लिनाथोत, जगमालोत, मंडलीकोत प्रशाखा के महेचा राठौडो के विरुद्ध आक्रमण करने और उनके मुखिया बीसा तथा भोजराज को वरसल द्वारा पराजित होने का वर्णन है। यह घटना सं० १५५५ वि० के लगभग की है।

इस प्रकार ऐतिहासिक वृत्तान्त की दृष्टि से भी कथित सोरठो का बडा महत्व है। राजस्थान के अनेक युद्धो की जानकारी राजस्थानी काव्य रचनाओ मे बोलती हुई जीवित है। वरसल (जोधपुर के राव सूजा का सेनानायक) और बाहडमेर के महेचो के मध्य लडे गये युद्ध की जानकारी का साधन अद्यावधि प्रस्तुत सोरठे ही कहे जा सकते है। तलवाडा स्थान के इस युद्ध मे महेचा के मुखिया रावल बीदा भारमलोत जसोल ठिकाने वाला का ज्येष्ठ पुत्र भी मारा गया था।

राजस्थान के इतिहास के पुनर्लेखन के लिये प्राचीन काव्य एक अत्यावश्यक स्रोत माना जा सकता है। नीचे की पंक्तियो मे चारण कथित भीमाता के सोरठे दिये जा रहे हैं—

माहेसर महमाई, भीम तणौ माची भगत।
थ्यौ सब कहे सवाइ वधियौ रावा वैरसल ॥१॥

असि परिया आम भापा ऊपहरी कर।
कामति पाख काम, बीसौ वैरसला सरिस ॥२॥

कळि आगै कळिमूळ, वरी फिर विसाहतो।
सार्दाळयौ सादूळ, बीसै सूज वाकारियौ ॥३॥

मणियड कवियण मोळ आख अठि ऊवारिया।
बीसौ वेरसला सरिस, वाल बाका बोल ॥४॥

ऊपरि अरि आथाण, बराबर बेढीमणौ।
भीम समोभ्रम भाण, पसर समो दीन्ही पसर ॥५॥

वैर वैर मराट, जगम जगमाला हीय।
सूणी साह मराट ऊकढिया ऊतारिया ॥६॥

वेढी वरहसालि तळवाडै तणियण समा।
कथन ज कहिया कासि, भोजा ताइ भारा थिया ॥७॥

ले सरवसि गिणी सारि, पुलि वसुधा सोह वरसल।
भोजन जपै भीमउत, पिणी आपो उवारि ॥८॥

विणि मारहया मार, भडा न कीधी भीमउत।
ढीले धरम दुवार, भला ज मूका भोजरज ॥९॥

माले मिणियड पाइ सात ज परिया साचियौ।
तैं मिहु पहरां ताइ, विमौ स फुलियो वैरसल ॥१०॥

सूना भीमा माल का विड़िया का राग ।
दद भाग खाविदो पर, गुरो गुरा गाज ॥११॥

सहि विड़कड़ियो दल, महमिल का भीमा मिलन ।
खड़ ऊजल आणियो तेह ज गजिया खग ॥१२॥

ओको माल म आणि, घर मिले मडियो गो ।
मिल्या की मनवाई ताम, गौर्वन्या निरसांणि ॥१३॥

धो ना तार ऊगाँ, प धरी स वाहन ।
धैंग बोगाल मई मारो की मुह जार ॥१४॥

गाज दूगों गाथि बड़िया ताड़ गाढे विभो ।
मड़ पोड़ भाराथि, खग गिरि पायो विड़ग ॥१५॥

ऊभीरा दगार, माग्रय नि.टा गाम्हा ।
धैंग पाई मार, माई जा। भीमडत ॥१६॥

मरा मेहा वीर, अरा मयी जुमटिक रागा ।
म वगाणिया बंटोर, विड़िया पत्जाणो विभो ॥१७॥

इस प्रकार चान्दण खिड़िया ने वीरम मालावत (वीरा), भाजराज, धैंरसल, राव चूंडा, अरजोग और धोरा आदि के तलवारा (वासावरा) के युद्ध का वर्णन किया है। तलवारा रा युद्ध गाधरा के अन्तरगण में मारगा लडा गया था। कवि ने "धो गो प्रह ऊगा, प धरी धै वाहन्" वर्णन किया है। इस युद्ध में कोई तीन सौ योद्धा मारे गये थे। महता राठोडा में जगाल वाले इस युद्ध में प्रमुख थे।

प्राप्त रचनाओ में वर्णित युद्ध घटनाओ के कालक्रम के आधार पर कवि का रचनाकाल वि० स० १४६५ से १५४५ तक स्वीकार किया जा सकता है। चान्दण राजनीतिज्ञ, मर्यादावादी और उच्च स्तर का काव्यकार था। महाराणा मोकल, महाराणा कुंभा, राव रणमल, राव जोधा, वरसल भीमोत और रणधीर राठोड जैसे युगश्रेष्ठ व्यक्तियो का प्रीतिपात्र होने से यह सिद्ध होता है कि वह स्वयं भी असाधारण व्यक्तित्व का धनी था।

कवि के जन्म तथा मृत्यु समय की कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नही है। चादण के कुल परिचय में उनके पिता मुम्मट और पुत्रों के धरमा, लुम्भा और सीहा खिड़िया का उल्लेख मिलता है। अत सम्भव है कि चादण के धरमा, लुंभा और सीहा तीन ही पुत्र हुए हो। मारवाड मे धरमा की सतति गाव कोविळिया, लुंभा के वशधर मराडी तथा सीहा के पुत्र पौत्र गोदरियो मे रहे

चान्दण के वशजा मे बद्रीदास खिड़िया और हुकमीचन्द खिड़िया डिंगल के श्रेष्ठ कवि माने जाते है। इनके वीरगीत तो बेजोड ही कहे जा सकते हैं।

चारण डूंगरसी और उनका काव्य



राजस्थानी साहित्य के सजन मे चारणा की रतनू शाखा के कवियो का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस शाखा के कवियो मे पाता रतनू रायमल जोधा का समकालीन, भला रतनू सूजा वालेछा का आश्रित करण रतनू राव वीरमदेव दूदावत का प्रीतिपात्र, ईसर रतनू राव जयमल्ल मेडता का सभाकवि, देवराज रतनू राजा रायसिंह बीकानेर का समसामयिक और भवाना रतनू प्रभति अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए हैं। डूंगरसी रतनू भी उल्लेखित कवियो का समसामयिक राज्यमान्य कवि हुआ है। राजस्थानी साहित्य के विद्वानो तथा साहित्यतिहास-लेखको ने उपरि निर्देशित कवियो तथा उनकी कृतियो का कोई उल्लख नही किया है। इनकी रचनाओ के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि य मध्यकालीन राजस्थानी काव्य के कीर्तिमान कवि थे।

डूंगरसी रतनू का व्यक्तिगत परिचय अभी अनुसन्धेय ही है, किन्तु प्राप्त रचनाओ क आधार पर साहित्यिक परिचय तो सहज प्राप्य ही है। डूंगरसी की रचनाओ मे वीरगीत, छप्पय दोहे और सोरठे छद उपलब्ध हैं। काव्यनायको तथा वर्ण्य विषय के आधार पर कवि का सजन काल विक्रमी सवत १५६० से १६४५ के मध्य स्वीकार किया जा सकता है। कवि के गाव की निश्चित जानकारी तो उपलब्ध नही है परन्तु जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह द्वारा चारणो के 'सासण' जब्त किये जाने से डूंगरसी रतनू भी प्रभावित हुआ था। उस जातीय सकट के समय जैसलमेर के साहित्य रसिक रावल हरिराज भाटी ने डूंगरसी की सहायता की थी। इससे यह प्रमाणित होता है कि वह मारवाड का निवासी था और विक्रमी सवत् १६४३ तक जीवित था। कवि ने रावल हरिराज भाटी के प्रति सम्बद्ध रचित एक गीत म उसकी प्रशसा और मोटे राजा उदयसिंह की भर्त्सना की है। गीत म वर्णित तथ्यों स यह भी ज्ञात होता है कि डूंगरसी देवा रतनू का पुत्र था।[1]

अद्यावधि अनुसन्धान से कवि रचित कोई ग्यारह वीरगीत, पन्द्रह कवित्त और तीन सौ पचास दोहे-सोरठे उपलब्ध हुए हैं। प्राप्त रचनाय वीर रस स ओतप्रोत मुक्तक काव्य है। अत रचनाओ के आधार पर कवि को मुक्तक का य प्रणेता माना जा सकता है। रचनाओ म कूंपा महिराजोत रा दूहा' तथा 'जयमल वीरमोत रा दूहा' नामक कृतियां कवि की सबस बडी

---

१ एक स्थान पर 'देवाउत' लिखा मिला है।

प्राप्त स्थान है । राठौड़ कूंपा मारवाड़ के प्रतापी राव मालदेव का बड़ा सामन्त और सेनानायक था । यह राठौड़ों के कूंपावत शाखा का पूर्वज था । मारवाड़ की ख्यातों में जैता और कूंपा की वीरता तथा चारित्रिक विशेषताओं का पर्याप्त वर्णन मिलता है । कूंपा ने दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूर के मारवाड़ पर आक्रमण करने पर संवत् १६०० वि० में अजमेर के समीपस्थ गिरी सुमेल स्थान के रणांगण में जूझते हुए वीरगति प्राप्त की थी । कवि ने कूंपा के इस बलिदान को ही अपने काव्य का विषय चुना है । कवि के समग्र पर विचार करने से पूर्व उनके द्वारा रचित सामग्री की सूची उपस्थित करना आवश्यक है । अतः नीचे की पंक्तियों में कवि के वीर-गीतों की सूची दी जा रही है—

१ गीत रावल हरिराज भाटी जैसलमेर रो—
रवि सूरज साम तुलागण सावण ।

२ गीत रावल हरिराज भाटी जैसलमेर रो—
भगवानां उग्रियाणि अनड़ाँ ।

३ गीत मालदेव अपराजात रो—
महा काइ कर जिणि करै सुर गाल पग ।

४ गीत मांडण कूंपावत राठौड़ रो—
मारण पतिसाह ऊपट मति मंडी ।

५ गीत चांदा वीरमदेवात राठौड़ रो—
वीर भायो रयणि मन मा वारारि ।

६ गीत राउ चन्द्रसेन मालदेवात रो—
वारारति घण रूप आवरतां ।

७ गीत चांदा वीरमदेवात राठौड़ रो—
साजि निय करि भाग वीर समाभव ।

८ गीत चांदा वीरमदेवात राठौड़ रो—
सूरत त सुभ चन्द सूरागुर ।

६ गीत राणा उदैसिंघ सीसोदिया रो—
आइ राउ सरिस धरता समसरि ।

१० गीत राउ नारायणदास राघवदासोत रो—
असपति री सकति सग्रहण आरति ।

११ गीत ईसर भगति रो त्रिकुटबंध—
आदि पुर अंत बिना अंक ।

ऊपर संकेत किया गया है कि उदयसिंह (जोधपुर) के कुपित होने पर जैसलमेर के रावल हरिराज भाटी ने डूंगरसी रतनू को अपने यहां आश्रय प्रदान किया था । कवि ने अपने वीर गीत में मोटे राजा उदयसिंह को अश्वत्थामा, रावल हरिराज की तलवार को

विष्णु का घर और स्वय को पाण्डव प्रपौत्र राजा परीक्षित के रूप मे चित्रित किया है । गीत विधान से कवि के अध्ययन, भावाभिव्यक्ति, रूपक निर्वाह आदि की परिचिति प्राप्त होती है । कवि के स्वय के परिचय के साथ साथ मारवाड मे चारणो के निर्वासन की प्रसिद्धि की ऐतिहासिक प्रामाणिकता के लिये भी यह गीत अति महत्त्व का है । गीत की पक्तिया इस प्रकार है—

अमयामा उदियासिंघ आगळा, जेसलगढ़र पाडवहर जाति ।
राउ परीखित हू रासी रावण, हरी चक्र रग सजियौ हरराजि ॥१॥
सभव द्रोण मालदे सभव, करण दूद अहिवन सुत कद ।
रथ अग लाग तणौं वळि रावण, नदन माल मन मद नद ॥२॥
पालण वाण कमध दळ पालण, सहु भर भगत वाजि अमहास ।
आप पराक्रम भुज आवरिया, बिहु जादवे चरर वाणास ॥३॥
जुजिठळ देवादि पडहर जोवता, घणू जावता कलधरि ।
किण्ही ऊवेल किय नह कीधी, हर ऊवेल करळ हरि ॥४॥

जैसलमेर-नरेश रावल मालदेव साहित्यानुरागी तथा उदार शासक था । वह स्वय विद्वान् और विद्वानो का आश्रयदाता था । जैन कवि कुशललाभ वाचक ने हरिराज के प्रोत्साहन से छन्द शास्त्र के ग्रथ 'पिगल शिरोमणि' और 'ढोला मारू री चौपाई' जैसी उत्कृष्ट राजस्थानी ग्रथो का सृजन सपादन और अनुपूर्ति की । रावल हरिराज प्रसिद्ध राजस्थानी कवि पृथ्वीराज राठौड (बीकानेर) के श्वसुर थे । हरिराज की राजकुमारी चम्पादे भी साहित्य रसिक विदुषी नारी थी । हरिराज के शासनकाल मे जैसलमेर विद्वानो के आदर सत्कार और मान-सम्मान के लिये प्रसिद्ध था । कवि डूगरसी ने अपने एक अन्य वीर गीत मे हरिराज की उदारता का वर्णन करते हुए उसे चकोरो के लिये चन्द्र चक्रवाको के लिये रवि, देवताओ के लिये अग्नि, वनस्पति के लिये मेघ (इन्द्र) की भाति ही कवियो के लिये पोषक अकित किया है । कवि ने 'आगति जथा' का निर्वाह करते हुए रावल हरिराज की दान वीरता के लिये कहा है—

ससि सूरिज मास हुतासण सावन, हकज बरसै इन्द्र हरा ।
पाळग पाच छठौ तू प्रिथमी, परमेसरि नीमधियौ परा ॥१॥
जिहडौ सोम अरक निल जादव, जोवता सुरमुख इन्द्र जिसौ ।
प्रमि हरिराज कीयौ जुगि पाछिल, तू पण कवि पाळगर तिसौ ॥२॥
सामि चकोरा चकवा सामी, सामी ब्रह्मा सुरमुख घणसामि ।
पळे हरा कवि मोटा पाळग, नव खण्डे छठौ ताहरै नामि ॥३॥
रूपक व्यणि अधार तरण रिपु, वसत वहनि बरसता विचारि ।
समता हूवौ मालदे सभव, सिरजे जिणी सिरजियौ ससारि ॥४॥

कवि डूगरसी प्रौढ साहित्यकार था। उसे डिंगल भाषा और छन्दशास्त्र की अच्छी जानकारी थी। बादशाह अकबर के प्रति लिखित छप्पयो से प्रकट होता है कि वह भी लक्खा बारहठ, जाडा मेंदू और दुरसा आढा की तरह हरिराज के माध्यम से अकबरी-दरबार तक पहुचा था। कवि के प्राप्त छप्पय आदि की सूची निम्न रूप मे है —

१ कवित्त अकबर पादशाह रौ—
घाट दुघट गिरविकट थट गाहट करण पट।

२ कवित्त अकबर बादशाह रौ—
ससि रगाल परठ वेय तू अर आणि वन्न छवि।

३ कवित्त अकबर बादशाह रौ—
साहि जाण खट भाख जाण दह च्यार निरतर।

४ कवित्त राउ मानसिंघ देवडा रौ—
खग राह्र मैं डसण छोह जीहा वळ दाखण।

५ कवित्त राउ मानसिंघ देवडा रौ—
मरण थट सामट वाज भूपाळ अचगळ।

६ कवित्त राउ मानसिंघ देवडा रौ—
धन तास तोखार जस तु बारहि वधा।

७ कवित्त पादा वीरमदेवोत राठौड रौ
सकळ विमळ कळ सभळ निश्चळ दळ वळ भ न तगित।

८ कवित्त पादा वीरमदेवोत राठौड रौ—
स्याम घटा सनाहि तास निसि जग रवि प्रगटी।

९ कवित्त पादा वीरमदेवोत राठौड रौ—
चडी हाथि गदा भीमण कौरव्व हणत।

१० कवित्त पादा वीरमदेवोत राठौड रौ—
मेर चलत ध्रू टळत सेस धर भार न भल्लत।

११ कवित ईसर भगति रौ—
राखि लज राहवी लक सीता सतवती।
दूहा जमल वीरमदेवोतरा—१९८

१२ दूहा कूपा महिराजोत राठौड रा १३१
दूहा पृथ्वीराज जैतावतरा—७०
दूहा जमल वीरमदेवोतरा—१९८

राठौड मेहराज का पुत्र कूपा अपने युग का दुधप वीर था। राव मालदेव के राज्य विस्तार मे उसका विशेष योगदान था। गिरी समेल के विकट युद्ध में, जिस मारवाड मे राड सम्बोधित किया जाता है, कूपा ने राव मालदेव के रणस्थल से पलायन करने

दिल्ली की विशाल वाहिनी से लोहा बजाकर राठौड़ा के लिये 'रणबका राठौड़' विरुद प्रचलित किया। 'बडी राड' म कूपा के सहयोगियो मे राव जैता बगडी वाला का पूरज, राव पचायण गीवसर का स्वामी, वीदो राठौड, खीवा ऊदो मूजाउत, भगराज रणधीरात आदि महायोद्धा वीरगति को प्राप्त हुए थे। गिरी समल के युद्ध पर अनेक कवियो की रचनाए उपलब्ध हैं। डूगरसी रतनू ने 'कूपा मेहराजोत रा दूहा' म कूपा के साथ मारे गए सभी बड योद्धाओ का चित्रण किया है। यह कृति बड दोहो म सजित है। प्रत्येक दोहे मे कवि युद्ध काय का चित्र-सा उभारता चला है। ओजस्वी शब्दावली म युद्ध के लिये कूपा न अपने घोडे को मगवाया। सईस घोड को सजाकर लाया। घोडा कैसा है सुनिये—

साहिब कजि सिणगारि, तेजी कीयो तुरातिब।
आगळि छाड आणियो, चाँटो चरभादारि॥

वाजि न चढ़ चळाउ, फिर मळाड़ फेरियो।
मेहा आगळ मारुडै, कीधो जाँणि कळाउ॥

असिमर फर वप आपि कडि कूपै जमदढ कमी।
कूत कमाण कळासिया, भिलवा ऊपरि कोपि॥

कमान कटार धनुष बाण और ढाल आदि आयुधो से सज्जित रणदूल्हा कूपा शत्रु-वाहिनी का वरण करने हेतु रण भूमि रूपी विवाह मडप मे पहुँचन के लिये उसी त्वरा से चला, जिस प्रकार दूर के विवाह ग्राम मे मुहूर्त पर पहुँचन क लिये बरात चलती है। कवि न निम्नाकित दोहो मे विवाह का समरूपक मडित किया है—

माभी कूपी माहि खाति हुयो लाडो खडै।
लाव पथि नेड लगनि जान क जाँणे जाहि॥

सीधू धमळ सुणाइ पुड ग्रीधण पाला किये।
परणै तिणि परिजाइ, मेछा धड महिराजउत॥

अणी तणे आसेय, लोही कूकू लाइज।
तण बाधावे तेय, मौड बधो महिराजउत॥

वाकिम भरियो बीद, चौंरी आरेयणि चड।
अरि छेदे अण नीद, मछरैतो महिराजउत॥

कूपा के साथी एक से बढकर एक वीर थे। वे रणभूमि मे शत्रुओ की ओर आगे बढना ही जानते थे। अद्वितीय वीर पचायन करमसिहोत सुमेरु शिखर तुल्य युद्ध में स्थिर जम गया। पचायन की अविचलता दर्शनीय है—

घडी घडी तो घाइ, खिसै नथी पँला खिसै।
पाचौ तिणि परिजाइ, मेर क जाणे मॉडियो॥
उरिवे अणि उघाण, तौ तताई तोलिया।
लोहै भरियो लोहडै, करमसीयोत कघाण॥

गव पचायन रूपक बना और वह शत्रुओ के मस्तकों को बाजर के सेहरों की भांति काटता हुआ शोभा पाने लगा—

करमणि रिणि खेचाण, करसै जिम दात्री कियौ।
आइया सिर वेडै सिरा, समहर मुइ सुरताण ॥

भारमल्ल का पुत्र वीरवर बीदा मराल की भांति कमल पुष्पो की तरह रिपु-कमला को कुचलता हुआ आगे बढा—

भ्रू अरि पाडे धारि, धड़ पोयण दळि पग धरै।
हास तणि गति हालियो, बीदौ बीरत वारि ॥
लोप दळ नवलाख, सँद क गो सुरताण रै।
भिडतँ भारमलोत सौहै तेरह साख ॥

राव जता शत्रुओ की श्वास रूपी सुगधि का रस पान करता हुआ रणागण मे विचरण करने लगा—

सौरभ ल्यै अरि सास फिलव घडा पठौ कमळि।
भमरौ जैतौ भणवियौ, ऊनावत असहास ॥

इस प्रकार युद्ध-चित्रा के चतुर चितेरे डू गरसी ने प्रत्येक दोहे मे एक-एक चित्र अकित किया है। ये दोहे वीररस के अनूठे चित्र उपस्थित करते हैं।

गीत और दोहो की भाति ही डू गरसी ने छप्पयो मे भी घटनाओ के छवि चित्र निर्मित किये हैं। राव मालदेव राठौड और बादशाह अकबर के छप्पयो म नायको की वीरता धीरता तथा रणकौशल का वणन है। वीरता और युद्ध चित्रो के अतिरिक्त कवि ने ईश्वर-भक्तिपरक गीत और छप्पय भी रचे थे। भक्ति के एक छप्पय मे कवि ने अनाथो के नाथ, अशरणो के शरण और मुक्ति देने वाले श्री राघवेन्द्र से प्राथना की ह कि उनके हाथ ही डू गरसी की लज्जा बची रह सकती है—

राजि लज्ज राहवी लका सीता सतवती।
राजि लज्ज राहवी, चीर पूरै द्रुपत्ति ॥
राजि लज्ज राहवी परणि सीता प्रतिपाळै।
राजि लज्ज राहवी, वेद ब्रह्मा रा वाळै ॥
भजीयै जनम दीजै सुगति, कृपानाथ डूगर कहै।
अनाथ नाथ असरण सरण, राजि हूत लज्जा रहै ॥

इस प्रकार यहा राजस्थान और राजस्थानी के एव अज्ञात कवि के काव्य से विद्वानो का परिचय कराया गया है। लगभग चार सौ वर्षों के बाद ये छद सूय की किरणो का दशन कर रह हैं। राजस्थान मे ऐसे अनेक कवि और कृतिया प्रकाशन की प्रतीक्षा मे हैं।[1]

---

१ यह सामाग्री साहित्य सस्थान, उदयपुर तथा श्रीनटनागर शोध सस्थान, सीतामऊ के सग्रह मे सुरक्षित है।

कवि नांदण की कुछ रचनाएं



नादण बाहरठ मुगल सम्राट अकबर के दरबार म सम्मान-प्राप्त प्रसिद्ध चारण कवि लक्खा बारहठ का पिता था। लक्खा का प्रभाव, चारणो मे उसकी प्रतिष्ठा, अकबरी दरबार मे स्थान और देशी नरशो मे उसकी आवभगत आदि विषयो पर चारणो के याचन मोतीसरा ने लक्खा और उसके समसामयिक चारण कवि दुरसा आढ़ा प्रशसात्मक छद रचे हैं और लक्खा के नाम से प्रचारित शाही रुक्के तथा किवदन्तिया के द्वारा उसकी प्रतिष्ठा का पता सहज ही मिल जाता है किंतु लक्खा के पिता एव ग्राम आदि के सम्बन्ध मे अभी तक कही कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नही थी। मुहणोत नैणसीकृत 'मारवाड के परगनो की विगत' नामक ग्रथ मे नैणसी न लक्खा का नादणोत (नादण का पुत्र) बतलाया है और महाराजा सूरसिंह द्वारा उस मोजत परगने का रेहनडी ग्राम प्रदान करन का भी उल्लेख किया है लक्खा की भाँति ही उसका पिता नादण भी अपने समय के चारण और क्षत्रिय समाज मे सम्मानित माना जाता था। किंतु नादण के विषय म राजस्थानी विद्वानो ने शोध खोज करने का कोई प्रयास नही किया है। यही नही राजस्थान के चारण समाज के प्रयत्नो से तथा चारणो द्वारा लिखित अपने जातीय परिचयो म भी नादण को कोई स्थान नही दिया गया है। चारण जाति का इतिहास भाग एक म भी नादण का कही अता पता नही है, जब कि सामान्य कोटि के चारण कवियों तक के नामो के सकेत परिचय उसमे प्राप्त होते हैं।

नादण जोधपुर के नानणयाई ग्राम का निवासी था। सभवत नानणयाई ग्राम का नामकरण नादण को उक्त ग्राम मिलने पर ही हुआ होगा। वह डिंगलभाषा का उत्तम कोटि का कवि था। नादण की प्राप्त रचनाओ मे उसके ईश भक्ति के कवित्त और वीररस के गीत उपलब्ध होते हैं। इन के अतिरिक्त 'गोगराज चहुवाणरा छद' नामक ५७ छदो की एक खण्ड-काव्य कृति मरुवाणी मासिक मे प्रकाशित हुई है।¹ इसमे चौहान वीर गोगराज (गोगाजी) के फिरोजशाह के साथ युद्ध कर वीरगति प्राप्त करने का ओजस्वी वर्णन किया गया है।

भक्ति के छप्पया म ईश्वर के प्रताप तथा नाममहिमा का प्रतिपादन किया गया है। इनसे कवि की भगवान के प्रति अनन्य निष्ठा और वैष्णव धम मे आस्था का बोध होता है। उदाहरण के लिए यहा प्राप्त सात छप्पय अविकल रूप मे उद्धृत किय जा रहे हैं—

---

१ —मरुवाणी वप ६ अक १०-११, पृ० २३ २७।

जाळोग्रळि नह जळ जलिहिं क्या गळे न जाग्रै ।
ग्रनिल क्यो ऊडवै वाउ जो उडडा ग्रावै ।।
नितुह जुगाजुगि नवो पछ नह थियै पुराणो ।
वेचि समा ग्रासोयोइ साथि ग्रावै सहिनाणो ।।
ग्रिपणह जेम धन उरि करै घणो घणो घणो होज घणो ।
'नादीया' नाम री तिम कर साचो सारगधर तणो ।।१।।

करणे भार सौ कोटि रतन लख कोटि रैंणायर ।
मूड सहस मोतीए सरवर ग्रोपति जा सायर ।।
गऊ सहस लख गान हमति लख कोटिन हैवर ।
पण जेत प्रिथ माहि ग्रछै धरती विचि ग्रबर ।।
ग्रनम्मै पन ताहो ग्रधिक 'नद' पयपै नारायण ।
त्रैलोक नाथ नाम ताहरा मूल न तूलं महमहण ।।२।।

सहस पयाग ग्रसमेद सहस सर सलिल सगच्छति ।
सहस वापि सौ वारि सहस धेनका सवच्छति ।।
सहस भार सौव्रन सहस भूमि स भौमी ।
सहस सति ग सहस ऊरणा सरोमी ।।
ग्रडसठि तीरथ ग्रवगाहि ग्रनि धम चाढि हेकणि घडै ।
श्रीराम नाम चेलो सबल ग्रज घण भरि उपड ।।३।।

मुगति दियण महमहण भुगति पूर दुख भजण ।
भूधर नेव भूयण माहि मुहर्ड जै मज्जण ।।
ग्रेती क्यों ग्रागमण जोति पिंड माहि जणाजण ।
लेखा सिमलै लियण लखे को सकै न लक्खण ।।
घण घणा थाट भजण घडण लाछि सुवर लका लियण ।
'नद पात्र पयपै नारयण सहस नाम तो पाइ सरण ।।४।।

जीत होई जुग सहस तते ग्रजस तप किज्जै ।
विना दम्भ वसि होइ ग्रसट परकाज सहिज्जै ।।
कोटि भार कुरखेति रुक्म दीज रवि सक्ट ।
गलियै जाइ हेमगिरि थाट लघे घट ग्रोघट ।।
दुरभेरा ग्रन दीजै ग्रघळ ले भ्याहळ लक्ख दह ।
मैसव्व तुहाळा श्रीरतन पासग नावै पन सह ।।५।।

नाम बाजि नारियण घीर होवै दद्धार।
नाम बाजि नारियण निध होइ साध ऊधार॥
नाम बाजि नारियण सब गढ़ सहु समप्प।
नाम बाजि नारियण धार अभिमाळ घ्रू थप्पे॥
ये जप नाम से निसार गत्र तोहु न बाई गण।
'गांगीयौ' कहै भूलां नग नाम न छाडौ नारियण॥६॥

पर्व ग पिड परहरे प्रबिन घन्ती पाधारे।
सयण दूर सचरे ययण बक्षम बीमारे॥
हुवै मंत्रि परहरिय हुवै हसो चाले।
बेडी फटिय कुरुड जाणि मार्तंड रिधाले॥
डर सद नगी पर सन दियैं कहै नगी बाहु ग ययण।
तिणि बार नाम तारण तरण नद समाय नारियण॥७॥

कवि की प्राप्त वीर रस की रचनाओं के नायकों के जातीय सम्बोधनों स्थानों तथा समय के आधार पर कवि का आश्रयक्षेत्र एवं समय १५ वीं शताब्दी का तृतीय चरण अनुमानित किया जा सकता है। गीतनायक मारवाड़ के बाड़मेर, शिवाना, सांचोर और सनराधा क्षेत्र के योद्धा हैं। किन्तु कथित भूभाग लम्बे समय तक जोधपुर राज्य से भिन्न स्वशासित प्रान्त थे। एतदर्थ जोधपुर के शासकों की ख्यातों एवं पत्राटकों में गीत नायकों के ऐतिहासिक वृत्तांत प्राप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में गीत-नायकों का परिचय जितना कुछ गीतों में प्राप्त है उतना ही अद्यावधि उपलब्ध हुआ है। नीचे नान्हण बारहठ के प्राप्त चार गीत दिए जा रहे हैं —

गीत राठौड़ बाहड़मेरा भगा हींगोळ री

त घमियो धणा भड़ा कळितावै, रिणवट कूंपर रूप रचा।
वळव करै फिरै वीरारसि, अहि जिम धारौ कूंत असा॥१॥
हाथि हुवो सग्राम तणी हर, थियै कळह तो प्रगट थियो।
लागुवा अडग्रा दिसता लागै, कमधज सावळ पनग कियो॥२॥
तीख कियै बळे मोडं तग, असिमर हय वहतौ अनड़।
अरियण डसण हुवै दळ आगळि, भालो भुमग सरोस भड़॥३॥
धूणी झाट तिता रिणी पोढ़े अणी चढ ताई मरै अरि।
जुधि 'हींगोळ' तणा प्रगडो जगि, वळकि छछाळो नागवरि॥४॥

उपर्युक्त गीत में कवि ने गीत-नायक के भाले को सर्प से उपमित कर वर्णन किया है। भाले और सर्प की गति की साम्यता दर्शाते हुए गीत-नायक के प्रहार की अमोघता का प्रभाव भी व्यक्त किया है।

गीत पचाइण चहुवाण सारगाउत री

हितवा स वींटीया अळग न होवै, छाए साख ऊपरि छर छान।
मणिधर तेथि जेथि मळयागर, 'पांचो' जेथि तेथि कवि पात॥१॥

मळगा लोभ न प्रामै श्रेतो, लुबधा प्रीति न छाडै लाल।
सुकवि जेति तेथि 'सागाउत', चदण जेति तेथि गिणि चील ॥२॥

वास थिया विळसत न विरचै, गुरतर सुपह विहै सारीक।
सोरभ तरि अहि वस सुखी सहि, मागण सुखी वन्ही 'मछरीक' ॥३॥

कवि ने पचायरा चौहान को मलयतरु और कवियो को सर्प बतलाकर गीत का सृजन किया है। चन्दन की सुरभि मे सर्पों को आनन्द मिलता है, उसी प्रकार याचक पचायन की सेवा मे रहकर सुख प्राप्त करते हैं।

गीत परवत रांदा री वीरता रौ

पोमामे किमू वहे सत्र पाछै भार नमी मचियै भाराथि।
'पत्रौ' घणै मिळि नीठ पाडियौ हक वहे न चडियौ हाथि ॥१॥

अकोकै मुहडे जो आवत, अतर कळहण तणी परि।
रहचति कटक सिगळ कोइ'रादो', बात करत कुण वैरहरि ॥२॥

पिंडी विहड ऊवरी अवाडै समहर अजम वहै सहि।
मुहियड जिणि पाडियौ'भदाउत', मुहियौ बोलौ तकोइ महि ॥३॥

मदा के पुत्र पवत को अपार शत्रुओ ने चारो ओर से घेरकर बडी कठिनता से रण मे गिराया। किन्तु एकाकी जो भी प्रतिभट उसके सम्मुख आया, वह तत्काल काल का ग्रास बन गया। उस वीर ने रण-भूमि मे पड़ने से पूव शत्रुता की चर्चा करने वालो मे एक को भी पीछे लौट जाने के लिए जीवित न छोडा।

गीत राउत भीमा रताउत री

विहसावे सुहड निभै निज नाइक समहर भौमि ऊछळे सार।
रिण गहिलै फेरियौ 'रणताउति', 'सेत्रावे' ऊपरि सधार ॥१॥

नाठै तोइ थळ धणी न छूटै, कळहणि काळ विलागौ कास।
भुइ अविहडा तणी भीमाजणि, घण झूझारि फेरियौ घास ॥२॥

मोकळ अचळ पाडीया भाऊँ, यह तजी बीजा-सुहड गिया।
कमधजि भला थळेचा केरा, कोट वेंद सलोट किया ॥३॥

उल्लिखित गीत मे रावत भीम द्वारा विरोधी योद्धाओ के प्रमुख मोकल और अचलदास को मारकर उन पर विजय प्राप्त करने का वणन है। कथित युद्ध जोधपुर राज्य के सेतरावा (सेत्रावा) स्थान पर लडा गया था।

गीत और छप्पयो की भाषा तथा वणन-शैली से नादण के उत्तम कोटि के कवि होने का प्रमाण मिलता है। गीतो के रचना विधान से कवि का प्रौढ़त्व भी प्रकट होता है।

सिद्ध कवि अलूनाथ कविया



राजस्थानी साहित्य एव इतिहास के लिए चारण जाति की अविस्मरणीय दन रही है। इस जाति ने अपनी प्रतिभा, चातुर्य दूरन्देशी और काव्य शक्ति से अनेक बार राजस्थानी इतिहास को नया मोड दिया ह। चारण जाति के इतिहासकारो के मत से चारणो की एक सौ बीस शाखायें हैं, जिन्हें 'बीसोत्रा' कहते हैं। इन एक सौ बीस शाखाओं मे एक प्रसिद्ध शाखा कविया चारणो की ह। यह शाखा अपने पूव पुरुप कविया के नाम से कविया कहलाने लगी। कविया चारणो मे उच्चकोटि के कवि, विचारक, भक्त और योद्धा उत्पन्न हुए हैं। कविया चारणो का राजस्थान मे आदि निवास-स्थान मारवाड का बिराई ग्राम था और मालनदे इनकी आराध्य देवी थी। मालनदेवी के आशीर्वाद एव आदश से इस शाखा के पूवज बिराई से सिणला ग्राम मे आए। दो पीढियो तक सिणला म रहने के बाद हेमराज कविया के घर प्रसिद्ध भक्त कवि अलूनाथ उत्पन्न हुए। अलूनाथ का ज म १५६० वि० के आसपास हुआ। ये डिंगल भाषा के ईश्वर भक्त श्रेष्ठ कवि थ। यद्यपि इनका कोई प्रबन्ध-काव्य अभी तक नही मिला है, पर प्राप्त गीत और पटपदिया मे इनकी सहज प्रवृत्ति, ईश्वर-भक्ति और काव्य-प्रतिभा का बोध होता है। निम्न पक्तियो म श्रेष्ठ भक्त कवि अलूनाथ और उनके जीवन-वृत्त पर सक्षिप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

अलूनाथ की भक्ति और काव्य से प्रभावित होकर आमेर नरेश महाराजा पृथ्वीराज कछवाहा के पुत्र बैरागर (रूपसिंह बैरागर) कछवाहा ने इन्हें कुचामन के पास जसराणा नामक ग्राम प्रदान किया। तब फिर अलूनाथ सिणला से जसराणा मे रहने लगे। चारण जाति मे इनकी सिद्ध भक्तो मे गणना की जाती ह और इनकी सिद्धि की अनेक किंवदतियाँ प्रचलित हैं। कहते हैं कि बलख के सुल्तान को किसी घटना विशेष स वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह गृहत्याग कर हिंदुस्तान में आ गया।[1] यहाँ अलूनाथ से इनकी भेंट हुई और दोनो ही एक दूसरे की भक्ति एव ज्ञान से आकर्षित हुए। बलख के सुल्तान के गुरु ने उसके गले मे मिट्टी की कच्ची हडिया (मटकी) डाल कर कहा था कि जिस दिन आत्म ज्ञान के आतप से यह हडिया स्वयमव ही पक जायेगी, उस दिन तुम पूण योगी हो जाओगे। इस हडिया को गले मे धारण किय रहने के कारण उसका नाम 'हाडी भडग प्रसिद्ध हुआ। शेखावाटी के प्रसिद्ध स्थान जीणमाता क पहाडो में हाडी भन्ग की गुफा है। 'हांडी भडगी पर अलूनाथजी का एक गीत और एक निसाणी 'सुल्तानी बलख बुखारदा मरे अपने सग्रह मे है।

---

१ सोलह महस सहेलिया, तुरी अठारह लक्ख।
तेरै कारण सावरा, छाडा सहर बलक्ख॥

भक्त कवि नाभादास ने अन्य प्रसिद्ध चारण भक्तो के साथ कोल्ह(अलूनाथ के पूवज) और अलूनाथ का अपनी भक्तमाल मे वरान किया है, जिसमे इन कवियो को चौरासी रूपको की रचनाओ मे निपुण बतलाया है। मूल षटपदी द्रष्टव्य है—

चौमुख चौरा चड जगत ईश्वर गुन जानें।
करमानद ओर कोल्ह ,अलू अक्षर परवाने ॥
माधो मथुरा मध्य साधु जीवानद सीवा।
ऊदा नारायनदास नाम माडन तन ग्रीवा ॥
चौरासी रूपक चतुर चवत बानी जूजुवा।
चरन सरन चारन भगत हरि गायक एता हुवा ॥

बीकानेर के कविराज भैरवदान ने अपने 'राजवश प्रकास' मे लिखा है—

अलू कविया हुव जोग निधान।
लख्यो खट् चनन को जिन ज्ञान ॥
किये तिन जोग के आठहु अग।
कियो हरि ते हिय हेत अभग ॥

मेवाड के आशिया चारण बखतराम ने अपने कीरत प्रकास काव्य के एक पद्धरी छन्द मे चारण भक्त कवियो के एक प्रसग मे लिखा है—

ईसरो भक्ति थभण अखड।
करमानद कोहल अलू अहुद ॥,
निज माधो मथुरा जीवनद ॥

इसी प्रकार किसी अन्य कवि ने कहा है—

ईसर अलू करमानद आनद, सूरदास पुनि सता।
माडन जीवा केसव माधव, नरहरदास अनता ॥

प्रभुदान मिथरण नाम के राजस्थानी कवि ने हरि नाम महिमा की महानता प्रदर्शित करते हुए निम्न षट्पदी मे अलूनाथ का उल्लेख किया है—

हरि सुमरण रै हेत बीरा तु बरु बजाई।
हरि सुमरण रै हेत, कन्ह कहै कमित कताई ॥
हरि सुमरण रै हेत, गीत करमाणद गाया।
हरि सुमरण रै हेत, सहस कवि जोति समाया ॥
हरि भगती रै हेत ईसर अलु, विसन भरण जाइ वांनियां।
जिण काळ मांहि पायो जनम, पढि रे हरि प्रभुदानियां ॥

यह तो राजस्थान के कतिपय विद्वान् कवियो की अपनी दृष्टि मे भक्त अलूनाथ का संक्षिप्त भक्त चरित्रचित्रण रहा, अब आगे उनके काव्य पर प्राप्य एक प्राचीन कवि का अभिमत प्रस्तुत किया जा रहा है।

कवितँ अलू दूहै करमाणद पात ईसर विधाचौ पूर।
मेहो छदे झूलणे मालो, सूर पदे गीतँ हरसूर ॥

इस दोहे मे सात कवियों के छन्दो की प्रशसा की गई है। अलूनाथ के कवित्त (पटपदिया) राजस्थानी कवि समाज मे अजोड गिनाये गये है। यद्यपि इनकी अद्यावधि प्राप्त कविताए मुक्तक ही हैं, पर उनमे ईश्वर नाम महिमा की महानता प्रतिपादित की गई है। ये अपन ज्ञान और अनुभूति से दीर्घकालीन राम नाम रूपी सोमरस से सराबोर हैं। भक्तिकालीन परम्परा के भारतीय कवियो मे अलूनाथ का महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी रचनाओ म नये-नये प्रतीको और पौराणिक कथाओ का प्रभावोत्पादक वर्णन पाया जाता है। भाषा में ओज और प्रसाद हैं तथा वर्णन मे सहज मार्मपण है। प्रत्येक षट्पदी का स्वतत्र अस्तित्व है और ये भक्तिरस से आप्लावित हैं। नीचे इनकी कुछ षट्पदिया उद्धृत की जा रही हैं—

रामावतार सम्बन्धी—

अचक पाल पर दळ विभाड फौज अणकळ।
निर्भ नाथ निगरब ससार ससनळ ॥
वडिम सती वस एकोतर तारण।
पर भीया परमुख सेन राकस सहारण।
मैदि लक जग ऊवरे राज करत रामणह ॥
ते कीयौ एम राघव तवै लखमण केन वभीखणह ॥१॥

धुरा लक धडहडे समद बधौ सर पजर।
अनळ झाळ ऊछळे धिखे धू वा धोळागिर ॥
कू भकरन करद (कटे) मथे महामण मैगळ।
हणू हाक हैवपण उलट गढ कीयौ उदगळ ॥
ओदरे मदोवरि ताम भै सपनतर आया सहम।
कोपीया राम रामण सरिस दळे सीस अमिस्यै दहम ॥२॥

किति किरन बिथुरिय डरिय अरि तिमर निसाचर।
कुमुद मुदित मन भनिन मुख नलिनी आनदधर ॥
अरि चकोर सतपत जपत जस चक्रवाक सुर।
नछत्र विपय छय गय अलोक त्रयलोक त्रिविध जुर ॥
रावन उलूक मुख मूक हुव अघ नयन आसान घट।
श्री रामचद्र दिनकर दरस कौसल्या प्राची प्रगट ॥३॥

कृष्णावतार सम्ब धी —

काराग्रहि जामेवि कणय मणि भूषण धारण ।
अद्ध निसा अष्टमी क्रस्ण भुम्र भार उतारण ॥
क्रन्ण कन्हि समिले मात जसुदा तिण रख्खय ।
हुवे कम निरवस हिये पित मात हरख्खय ॥
कप्पूर हलिद्रा कुमकुमा मिलय सग गोकुळ मही ।
निसि दिवस द्वार नदराई रे दधि कादव जमना वही ॥४॥

देवराज धरि दसा न या भूतेस भ डारहि ।
नाग नेस पणि नही न या धनराज दुवारहि ॥
घु दुरवा घूमत ग्रेह कर नेत्रह बाळ ।
दधि गिरिवर डोलियौ पनग धूजीयौ पयाळ ॥
अदभूत चरित्र व्रज अतरै पूरण द्रोए वीर कौ ।
आणद भलो समयो अलू देख्यौ नद अहीर कौ ॥५॥

पच एक पचास कोटि पावस्स निहस्सय ।
फळ तवाळ दधि अखित हरखि जसुवै ले आई ।
पसुपाळ, हुवे आणद वधाई ॥
सुर धेन सहित सुरतर कुसम सुरपति विनौ समच्चरै ।
धिक ग्रह धय गिरवर धरण किये अवगुण गुण करै ॥६॥

ब्रह्म वेय उच्चरय गीत तु बरु गाव ।
रभा अवसर रमै वीण सरसत्ती बजावै ॥
सिव अवलोकण करै इद्र सिर चम्मर ढाळै ।
व्यास उकति बरनवै पाउ गगा पख्खाळै ॥
ससि सोळह कळा अम्रित सवै सूरज कोट समधरै ।
अपरम तणा सिर ऊपर कमळा आरती करै ॥७॥

गोपन्नार चित हरण प्रेम लच्छणा समप्पण ।
कु ज विहारी क्रस्ण रास व्र दावन रच्चण ॥
गोवरधन ऊधरण ग्राह मारण गज तारण ।
जुरासिध सिसपाळ भिडे भू भार उतारण ॥
जमलोक दरस्सण परहरण मो भग्गो जीवण मरण ।
ओ मत्र भलो निस दिन अलू सिमर नाथ असरण सरण ॥८॥

महाराज गजराज ग्राह उग्रह्यौ सनेही ।
करि आव्यौ अयकु ठि दिव्य नारायण देही ॥
दधि भारथ कौरवां अतर वेळां उत्तारे ।
रौद्र दुजोवण सभा लाज द्रोपदी वधारे ॥

सूदरमण सखंध गदा पदम मधर पीत पियारी मुय ।
गोविंद वेग बाहर गरुड हरि जगनाथ पुरार हुव ॥९॥

चरण कमळ मघ्मपुरी रमानंर कज विराजै ।
सकर सेप विरचि राग सारदनि साजै ॥
वेत्रपाणि जय विजय सब्द कंहे समभावै ।
पीतवर घनस्याम महल भगतज्जण पावै ॥
मिळि हरख काटि करोस मैं हम ढेढ चामर सुकरि ।
माणद भेद कौतुक भलू क्है मन्त दरबार हरि ॥१०॥

नीचे की पंक्तियों में कुछ ऐसी षट्पदिया दी जा रही है, जिनमे नाम, महिमा, दृढता, शील-सन्तोष और आराध्य के प्रति अनन्य निष्ठा, विश्वास आदि की महत्ता का वर्णन है।

मार मेर पर चुगै चुगै पंछी फळ तरव्वर ।
गज कजळी वन चुगै चुगै डिग हस सरव्वर ॥
मनड चुगै आकास चुग पाताळ भुमगम ।
बेहर वन मै चुगै चुगै नित ठाण सुरगम ॥
जीव भो जतु सब्वही चुगै गाठे कहां गरत्थ है ।
चिंता म कर माचित्त रहे देणहार समरत्थ है ॥११॥

दईत राज कुण दळै पखे नरसिंघ नरेसर ।
काळकूट जीरवै मको पाखे भूतेसर ॥
घोस प्यास नह हटै, वहे मीपम हजारां ।
वरिया जानो वढ घरा नभ रै जळधारा ॥
ससारि आप सारत्थिया नारायण विन मनि नरां ।
माव न दूध सीकै मरय भलू कठ पयाहरा ॥१२॥

दाता उत्तर दियो खावै नहि करडो खाणो ।
श्रवणा उत्तर दियो वयण नहि सुणे वखाणो ॥
दिरगां उत्तर दियो दूर मावतो नह दीसै ।
नासा उत्तर दियो वास ना विसवा बीस ॥
जिह्वा किसोर गुण नाम जप, कसमस्सा लागो करण ।
टाळण विराम आराम तुक स्याम राम सरणो सरण ॥१३॥

दूधी ने देव रै थम फिरिया,चौरासी ।
माया हूत चमोर कियो रैदास उदासी ॥
तुरिये भवतारिया छान छीपे घर छाई ।
जोगता जैदेव री जगत जोणै जीवाई ॥
तारिया सर्यबर हर भलु दहे लाज मद गद दुख ।
स्वामी मनम गुर सेवता पराधेन पूरण पुरख ॥१४॥

सहज सीळ सतोख प्रथम जीवता पाळीजै ।
नारायण जगनाथ साध सगत समरीजै ॥
आसा त्रसना हीज सर्ते तेडत दूरीजै ।
ऊपजिये उदमाद जिय वैराग न मीजै ॥
चीतिये अमर जरिये अजर ध्यान अजपा धाइये ।
आप अेव गिणिये अलू राम रसे तव पाइये ॥१५॥

भक्त कवि अलूनाथ ने षट्पदिया के अतिरिक्त डिंगल गीत भी रचे थे। गीत चारण कवियों की अपनी निधि है। तब फिर अलूनाथ जैसा कवि गीतों की क्स उपेक्षा कर सकता था? अलूनाथ के अभी तक केवल दो चार गीत ही हमारे अवलोकन मे आये हैं, जिनमें दो गीत बूंदी के हाडा वीर सूरजमल पर प्राप्त हुए है। सूरजमल महाराना उदयसिंह और विक्रमादित्य के महाराना सग्रामसिंह द्वारा नियुक्त सरक्षक थे। महाराना संग्रामसिंह के ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी महाराना रतनसिंह ने अपने दोनो भाइयों की शक्ति को समाप्त कर प्रबल पराक्रमी वीर सूरजमल को छलाघात से मारने के लिए एक दिन आखेट के बहाने उन्हें बुलवा कर आघात किया। परतु, सूरजमल ने मरते-मरते रतनसिंह का भी सफाया कर उदयसिंह का मार्ग निष्कण्टक कर दिया। इसी घटना के सूचक दो गीत यहाँ दिये जा रहे है। गीत ओजपूर्ण है।

गीत सूरजमल हाडा रो

अलुभाणे पगे अगि उघाडै, विणि हथियारा वसत्र विणि ।
जेसाहरो दिगम्बर जाण, जातो दीठो घणे जणि ॥
बटुओ तेग कटारी बीटी, लाटी रई ऊपरै खाट ।
मुडतो आखडतो सूरजमल, विण पठो छांड खित्रवाट ॥
मछरीकै आए सूरिजमल्ल, भुजि उठे न कियो भाराथ ।
हाके न मिळियो हायुवै, हालियो डड लगाड हाथ ॥

दूसरे गीत में सूरजमल द्वारा मरते २ राणा रतनसिंह को मार गिराने का वर्णन है। गीत समसामयिक और ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। अब सूरजमल की कटारी विषयक गीत देखिए।

चहूवाण तणा पुरसातन चौरगि, त्रिजडॅ अक वळे तिरछो ।
सुजडी सूरिजमालि रतनसी, पाडीयो ऊडिया हस पछो ॥
सिर खड गयँ भगवती सूरा, अमत दह न कर अमीयो ।
वेवो गह समसीक चळोधर, ग आतमा पछै गमीयो ॥
सुत नारयण बहुते सारे, मदभ्रुद गति दाखे अपलि ।
चचळ गयँ सेल गुर चक्रवति, मारीयो राइ कटारमळि ॥
आवाहे प्रतिमाळो आर्हवि, सयण सहे समसेर सर ।
गैवपनाथ महारिप मिळीयो, नमा पराक्रम सूर नर ॥

कवि अलूनाथ ने जोधपुर के प्रतापी राजा राव मालदेव और अजमेर के शाही सूबेदार हाजीखां, पठान सरफुदीन, जयमल राठौड़ और महाराना उदयसिंह के मध्य हुए हरमाड़ा नामक स्थानादि के युद्धों एवं राव मालदेव तथा वीरमदेव दूदाउत (मेड़ता) ईसर वीरमदियोत, श्यामलदास उदैसिंघोत, तेजसी डूंगरसीयोत आदि योद्धाओं पर कवित्त तथा राव मालदेव की मृत्यु पर मरसिये भी लिखे थे। हरमाड़ा का युद्ध विक्रमाब्द १६१३ फाल्गुन कृष्णा नवमी और मालदेव की मृत्यु कार्तिक सुदि दूज १६१९ मानी जाती है। इससे कवि के १६१९ तक जीवित रहने का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होता है। कवि की शान्त-रस की रचनाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन्होंने अच्छी आयु प्राप्त की थी।

अलूजी की समाधि-स्मारक कुचामन के समीपस्थ जसराणा ग्राम में है। जसराणा में उनकी पावड़ियों की पूजा की जाती है और वहां के निवासी उस स्थान को अलूजी बापजी की समाधि कहते हैं। संभव है उनकी समाधि पर कोई मृत्यु-लेख भी अंकित हो। कुचामन के पहाड़ी दुर्ग में उनका लोह का चिमटा और धूनी होने की जनश्रुति है। राजस्थान के प्रतिभावान् एवं साधन-सुविधा प्राप्त विद्वानों को ऐसे भक्त कवि पर शोध-खोज कर इनकी रचनाओं के मूल्यांकन से साहित्य संसार को परिचित कराना चाहिए और साहित्य के साथ २ उनके जीवन, साधना, इति-वृत्तादि को भी प्रकाश में लाना चाहिए। भक्त कवि अलूजी की वंश-परम्परा में करणीदान कविया आलणियावास, गोपालदान चोखां का वास, रामदयाल फतहसिंह की ढाणी, हिंगळाजदान सेवापुरा और मानदान दीपपुरा जैसे विद्वान् कवि हो गये हैं। इन कवियों के घरानों से भी काव्य सामग्री संकलित करना आवश्यक है।

सांयाजी झूला का समय और उनके गीत



राजस्थान के चारण भक्त कवियो मे ईसरदास बारहठ माधादास दधिवाडिया, अलूनाथ कविया, नरहरिदास बारहठ और स्वामीदास (साया अथवा साइया) झूला का सर्वोपरि स्थान है। ये वे कवि हैं, जिनकी कृतियां राजस्थान और गुजरात के धार्मिक परिवारों मे नित्य पूजा-पाठ में रही हैं। इन भक्त कवियो मे साया झूला कृष्ण-भक्ति-धारा के कवि थे। सायाजी ने भगवान श्रीकृष्णचद्र की नागनाथ लीला और रुक्मणी हरण के घटना प्रसगो को उपजीव्य बनाकर नागदमण' रुक्मणीहरण' और अगदविष्टी नामक तीन खड काव्यो का प्रणयन किया है। नागदमण तो एक अत्यत ही लोकप्रिय कृति के रूप मे राजस्थान मे समादृत हुई है। सायाजी कृत रुक्मणी हरण को लेकर पृथ्वीराज की वेलि के साथ कल्पित अनुश्रुतिया पिछले वर्षो मे राजस्थान से प्रकाशित ग्रन्थो मे देखने को मिलती रही है किन्तु ऐसी तथ्य तथा प्रमाण विहीन जन श्रुतियो का न ऐतिहासिक महत्व है और न साहित्यिक उपयोगिता ही। इसी प्रकार साया जी के जीवन को लेकर भी गत वर्षो मे प्रकाशित शोध-प्रबन्धो, निबन्धो और सायाजी के ग्रन्थो की भूमिकाओ मे तथ्य विरुद्ध और असगतिपूर्ण मान्यताओ की स्थापनाए दोहराई गई है।

राजस्थानी काव्य ग्रथो के सपादको और अध्येता लेखको ने सायाजी का जन्म सवत् १६३२ और मृत्यु १७०३ मे स्वीकार का है। एक विद्वान् ने तो यहा तक लिखा है– 'अपनी समस्त कविता इन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के सम्बन्ध मे लिखी है, जो भक्ति रस से परिपूर्ण है।' यह सत्य है कि वे भक्त कवि थे और उन्होने श्रीकृष्ण चरित्र की घटनाओ तथा लीलाओ पर पर्याप्त लिखा है। किन्तु उन्होने तत्कालीन वीरो,दानदाताओ तथा समाज के विशिष्ट पुरुषो को अपनी वाणी मे स्थान ही न दिया हो, यह केवल कल्पना ही कही जा सकती है। इसी प्रकार सांयाजी के पिता का नाम स्वामीदास तथा बडे भाई का नाम मायाजी आदि भी निरी कल्पना और उनके चरित्र को विकृत रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास ही कहा जाना चाहिए।

यहा सायाजी के जन्म, रचनाकाल, आश्रयदाता और मुतक रचनाओ आदि पर सामान्य रूप मे इगित किया जा रहा है जिससे तथ्यहीन मान्यताओ की आवृत्तियो पर को पुर्नविचार करने की दृष्टि मिल सके।

सायाजी झूला का निवास स्थान ईडर राज्य का लीलछा गाँव था और उनके आश्रयदाता ईडर के राव कल्याणमल्ल राठौड थे। कल्याणमल्ल द्वारा सम्मानित किये जाने का वृत्तान्त गुजरात के इतिहास 'रासमाला' मे है। किंतु भ्रमणशील चारण-कवि किसी एक राजा के आश्रम मे रहते हुए भी अन्य राजाओ, ठाकुरो और सामन्तो के उदात्त चरित्रो का काव्यमय वर्णन कर पुरस्कार प्राप्त करते रहते थे। साया ईडर नरेश के आश्रित थे किन्तु उन्होंने तत्कालीन राजस्थानी राजाओ के दरबार और उनके विवाहादि मागलिक उत्सवों पर उपस्थित होकर लाख पसाव आदि ग्रहण किए थे। उनके लाख पसाव प्राप्त करने के विषय मे यहा दो प्रसगो की ओर सकेत किया जा रहा है, जो उनके जन्म और रचनाकाल आदि के बारे मे भी महत्वपूर्ण प्रकाश डालते है। ये सकेत दयालदास सिंढायच की ख्यात मे हैं। जो इस प्रकार हैं—तदनुसार बीकानेर के राजा रायसिंह राठौड उदयपुर के महाराना उदयसिंह की राजकुमारी के साथ विवाह करने गए, तब उन्होने सवत् १६३१ वि मे अपने समकालीन और सम्मानित कवि लक्खा बारहठ, दूदा आशिया, देवराज रतनू, प्रक्खा बारहठ, गपा तू कारा और खेतसी भाट के साथ साथ साया झूला को भी हाथी, सिरोपाव प्रदान किया था। उस अवसर पर राजा रायसिंह ने चारणादि कवियो को ५० हाथी और ५०० घोडे दिए थे।[1]

राजा रायसिंह ने अपना एक विवाह सवत् १६४९ मे जैसलमेर के रावल हरराज भाटी की राजकन्या के साथ किया था। इस विवाह पर भी उन्होने याचको एव कवियों को पर्याप्त द्रव्य प्रदान कर अपनी वदान्यता प्रकट की थी। जैसलमेर के इस विवाह मे भी राजा रायसिंह से दान प्राप्त करने वालो मे जाडा मेहडू, दुरसा आढा, देवराज रतनू आदि के साथ साया झूला का नामोल्लेख प्राप्त होता है।[2]

उपर्युक्त दोनो प्रसगो से दो बातें स्पष्ट होती है कि सायाजी ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की लीला वर्णन करने के अलावा राजस्थान के राजाओ के उदार कार्यों पर भी काव्य रचा था। द्वितीय तथ्य यह स्पष्ट होता है कि आज तक सायाजी का जन्म स १६३२ वि मे राजस्थान के शोध विद्वान मानते आ रहे है, यह गलत और आधार विहीन है। सवत १६३१ वि मे पुरस्कार प्राप्त करने का अर्थ है कि उस समय वह कम से कम दुरसा, लक्खा आदि के बराबर सम्मान प्राप्त करने के लिए उनका समवयस्क और ५० वर्ष का वृद्ध तो होना ही चाहिए। यही नही, साया कृत एक गीत सवत १६०० वि मे

---

(१) हाथी एक दूदै आसिये नू दीनो। हाथी एक देवराज रतनू नै दीनो। हाथी एक अखैजी बारट नू दीनो। हाथी एक बारट लाखजी नू। हाथी एक गैपै तू कारै सढायच नू दीनो। हाथी एक झूलै साइयै नू दीनो। हाथी एक भाट खेतसी गाव दागडै रै नू दीनो। —दयालदास की ख्यात, स डा दशरथ शर्मा—पृ० १२५

(२) दयालदास की ख्यात स डा दशरथ शर्मा—पृ० १२४-१२५

माया माह न लागो जे मन, गढवी तज लगी हर ग्यान।
लीधा भायावत चै लाध, स्र्स नाम फळ एक समान ॥२॥
भूला राव इसो नित भीले, किसन गगाजळ समोकरि।
वर दीधो एहवो निमभीवर, भगत सहुवै साख भरि ॥३॥
तु गोवळ घर रहे निरतर, रिदे तुभ्क चरणाँ हू रीत।
गायस तू गढवी त्रभुवण गुण, गायस हू थारा गुण गीत ॥४॥,

उपर्युक्त गीत के द्वितीय दोहाले की तृतीय पक्ति मे जो 'भायावत शब्द प्रयुक्त हुआ है वह भाया के पुत्र का द्योतक है। अत यह स्पष्ट है कि सायाजी के पिता का नाम भाया था।

सायाजी श्री कृष्ण के परम भक्त थे। उन्होंने 'नागदमण' और 'रुकमणी हरण' के अतिरिक्त भगवान् की महिमा का वर्णन करते हुए मुक्तक डिंगलगीत भी लिखे हैं। उनके गीतो मे ससार की अनित्यता ईश्वर आश्रय मे अभय, जीवन के प्रति पश्चात्ताप का प्रतिरोध आदि का वर्णन हुआ है। यहा उनके कुछ भक्तिगीत दिए जा रहे है।-उद्धृत प्रथम गीत म ससार के माया-मोह को पतग की छाह सम्बोधन कर क्षणिक बताया गया। गीत की पक्तिया हैं—

आसा-तर किसन तणी तजि आळी, सराहे सुख तणी ससार।
छाह कीतियक वार छिपवो, गुडी उडीजण तणी गवार ॥१॥
माया तण ग पडि महणारग, बूडेस हर विळगा विण बाह।
वार किती मूरख वीसामी, छिपती निहग तणी परछाह ॥२॥
मामा छ्या तणी माहियो, ओबुध पड भोगे अवस।
पडियो बस तू तण पडाई, वहे पडाई पवनि वस ॥३॥
हर सरिखो विसार ज हेतु, तू जाण बुध तुभ्क तणी।
भमती पडती तणी भरोसी, धाम टाळ बाह म धणी ॥४॥

पर गीत म सायाजी ने ईश्वर स याचना करते हुए उस स्थान की माग की है, हा पर सासारिक विग्रह-विरोध, तस्करी-तृष्णा, अकाल दुष्काल, जीवन-मृत्यु और राज र आदि का तनिक भी भय न हो। गीत इस प्रकार हैं—

त्रिसा त्रा नहि त्रिखा तन तावड होणि विजोग न रोग न होइ।
मोतू तठा आमिज माहव वाळो वह न गोरी कोइ ॥१॥
-सेध न नघ विरोध न खुधिया, कूड करम तन काळ कमोस।
-मा'सि इमवा मदमुतदन, रव क रदन तन रा वन रोस ॥२॥

) नागदमण सम्पादक मूलचद 'प्राणेश', प्रथम अध्याय, पृ० ७

प्रीसरण ताप भराप न पाप न, भटक हटक तन चटक प्रधार ।
दासि मुनी तथि व्रजवासी, खटक न भटक न दधार ।३।
जरा न जम डर मरण न जामण, पीड ■ परिश्रम पथ स पयाण ।
गिरवर गिर मुनौ वासि ज निणि गिहि, दूत दुकाळ न भाण न दाण ।। ।।

तृतीय गीत म भक्त कवि ने सासारिक याचना, प्रलाभनादि के प्रति अनास्था व्यक्त करते हुए लिखा है कि ह जीव ! भगवान् के द्वार रक्षक नही रहता है। र जाम्रा के दरबारो जसी भेंट, दशन, याचना आदि के लिए वहा प्रतिबधात्मक व्यवस्था भी नही है। वहा पहुँचने पर किसी प्रकार का प्रभाव प्रथवा प्राकाक्षा अधूरी नही रहती । इस प्रकार सायाजी ने ईश्वर के सब सत्ता सम्पन्न दरबार की प्रशसा करते हुए कहा ह । वह गीत है—

पछितावै काइ प्रीळिपाळि तौ, जीव गवार विचार जोइ ।
काठी ग्रहे भोळगत केमव, काढियो न होवत कोइ ।१।
द्वारपाळ नह देत दुहाई, घर काजि म फिरत घरोघरि ।
हरी पावडी उजाळत हाथे, हाथ न माडत राऊहरि ।।२।।
पर द्वारे द्वारे पाळीतौ, भ्रम करि सुणस विचारि मनि ।
इम जी करत अनत मुह भागी, इम न करत आगळी प्रनि ।।३।।
प्रथपति द्वारि अम्हीणा आतम, राखै जिणि तिणि ठौडि रहि ।
टहल करत हरि महल तणी तू, सहल हुवा तो महल सहि ।।४।।

यहा सायाजी के जन्म, पिता और रचनाकाल के विषय में कुछ प्रकार भूत तथ्य विद्वानो के लिए प्रस्तुत किए गए है। आशा है विद्वान सायाजी के जन्मादि के विषय म स्थापित धारणाओ पर पुनर्विचार करने के लिए इन पक्तियो म कुछ नवीन सूचनाएँ प्राप्त कर सकेंगे।



नरहरिदास बारहठ नामक दो कवि



राजस्थान के चारणों में नरहरिदास बारहठ लखावत और नरहरिदास सांवळोत नामक दो कवियों की पर्याप्त प्रसिद्धि रही है। ये दोनों ही कवि भक्ति काव्य रचयिता गिने जाते हैं। नरहरिदास लखावत ने तो ब्रजभाषा में भगवान के विभिन्न अवतारों को लेकर 'अवतारचरित्र' नामक महाकाय भक्ति काव्य का सृजन किया और नरहरिदास सांवळोत ने 'निसाणी रामचरित' में भगवान राम की जीवन-लीलाओं का वर्णन किया है। यहां पहले नरहरिदास लखावत पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

नरहरिदास बादशाह अकबर के दरबार में बैठक एवं सम्मान प्राप्त विख्यात चारण कवि लक्खा रोहड़िया नादणोत नानणियाई ग्राम निवासी का ज्येष्ठ पुत्र था। लक्खा स्वयं भी अच्छा कवि था। जोधपुर के राजा सूरसिंह ने लक्खा की काव्य सेवाओं पर मुग्ध होकर उसे मारवाड़ के सोजत परगने का रेहनड़ी गांव प्रदान किया था। इसी लक्खा के पुत्र नरहरिदास थे। नरहरिदास के छोटे भाई का नाम गिरधरदास था। ये दोनों ही भाई अच्छे कवि और पिंगल तथा डिंगल के विद्वान थे। महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने ऐतिहासिक महाकाव्य वंश भास्कर में चारण जाति के अपने पूर्वकालीन कवियों में सबसे पहले 'बारहठ नरहरिदास' कहकर इनका स्मरण किया है। जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह ने अन्य पांच कवियों के साथ नरहरिदास को भी लाखपसाव देकर सम्मानित किया था।[1] नरहरिदास का अवतारचरित्र तो आज से पचास वर्ष पूर्व तक राजस्थान के भक्त और विद्वत् जन समाज में तुलसीदास की रामायण की भांति अति समादृत कृति रही है। आधुनिककाल में ठीक प्रकार से प्रकाशन न होने से यह ग्रन्थ अब पिछड़ गया है। अवतार चरित्र के अतिरिक्त कवि की रचनाओं में नागौर के राव अमरसिंह के दोहे और २९ वीरगीत प्राप्त हुए हैं। खोज पर कवि की और रचनाएं भी मिलना संभव है। नरहरिदास का ब्रज और डिंगल दोनों पर पूरा अधिकार था तथा शांत और वीररस के काव्य रचने में वह प्रवीण था। कवि के प्राप्त काव्य से अनुमान है कि इनका समय संवत १६४८ से संवत् १७३४ तक

---

१ बारहठ नरहरि बरनि एक लख उजागार।

सूरज प्रकास भा० २ स० सीताराम लाळस, पृ० २१

रहा है। उक्त काल के योद्धाओ पर इनके गीत तथा दोहे मिलते हैं।-उपयुक्त मवत ही प० मोतीलाल मेनारिया और श्री सीताराम लाळस मानते हैं। इस काल के पूववर्त्ती और बाद के नायकों पर कवि की रचनाओ का न मिलना, इस अनुमान की पुष्टि करता है। यहाँ कवि के स्फुट गीतो के नायको के नाम और गीतो की प्रारम्भिक पक्तिया दी जा रही हैं। ये रचनाए विभिन्न अवसरो पर लड गए युद्धा से सम्बधित है।

निम्नाकित गीत नायको पर इनके गीत प्राप्त होते हैं—

(१) राजा सूरसिंह राठोड जोधपुर (२) राजा गजसिंह राठौड जोधपुर (३) राजा जसवतसिंह राठौड जोधपुर (४) राव अमरसिंह राठौड नागौर (५) राव कमसेन राठौड भिणाय (६) राव उदयभान राठौड बादरवाडा (७) जगन्नाथ राठौड जमराजोत (८) नाहरखान राठौड माडणोत (९) भगवानदास राठौड (१०) माधोसिंह राठौड (११) माधोसिंह मुकदसिंह राठौड (१२) रतनसिंह राठौड (१३) राजसिंह राठौड (१४) राजा रामसिंह राठौड भिणाय (१५) बिसनदास राठौड (१६) श्यामसिंह राठौड (१७) हरिसिंह राठौड (१८) राजा रामसिंह कछवाहा जयपुर।

इस प्रकार कवि ने अपने समकालीन मारवाड। नरेशो। मारवाड के जागीरदारो सामतो और योद्धाओ को अपनी रचनाओ के नायक बनाकर गीतो मे उनके वीरतापूर्ण क्रिया कलापो का वर्णन किया है। प्राप्त गीतो से प्रकट होता है कि कवि का रचना क्षेत्र मारवाड ही अधिक रहा है। नीचे कवि के प्राप्त गीतो म स प्रत्यक गीत के प्रथम दोहले की की एक एक पक्ति दी जा रही है —

(१) प्रबळ जास साहस सनस नवाकोटा प्रगट
(२) मिळे खुरसाणा मीरधरा उछळे दवग धोम
(३) सहियै जुध बलक खेति राउ मारू
(४) रिण पूगो इसै अभिनमो रासी
(५) करतो सल उभेल देयतो कमधज
(६) दळ सांस धणी आगळ दिल्ली दळ,
(७) कियो प्रथम साको वडो, दिल्ली करिणायरे
(८) अतुळ बळ अमर ने सहियो अमरख
(९) सगह सूर संग्राम दखिण धरै साफळै
(१०) सीमाडा साड सुत्रिय समहर
(११) वडिम वीटिया वरियाम वडाळा
(१२) फिरे देस दुरवेस वधि रेस दिल्लेस विचि
(१३) मिळे धाड मधकर मुकद कहर वेढीमण
(१४) तहि केहा खत्री पयप रतनो
(१५) इळा अतुळ आतम सवति ऊजळा आचरण
(१६) अरि फौजा वाज नत्रीठा घोरे

(१७) खवै वाजियै दिली दखिण धरैं ततखरै—
(१८) अनव्रविया सार धार ऊधमिया
(१९) हठि मिळन कळह खळा भाजण खगि
(२०) करि हेकणि स्याम उभै माटा मित
(२१) मिळि सेन मडोवर असुर गहणि मचि
(२२) कुळवाट चोत अगजीत कनोजा
(२३) मुहरि माडिज वाजि दिगविजय मडोवरो
(२४) वड कामि दळथभ गजसाह दळ तोड वदै
(२५) छिळै सेन साहण समद कमध ऊपरि छत्रा
(२६) धडहडिया सुणै बाजते ढोळै
(२७) मेळण रसातळ अभिनमो माडण
(२८) कुतब गोस अबदाळ सूफी मनै कळ दर
(२९) सरपदाह जनमजय पतिसाह भालण सिवो!

प्राप्त रचनाओं के आधार पर कवि के वर्णन-कौशल, सरल शब्दावली और भाव-सौन्दर्य का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए आसोप के ठाकुर राठौड रतनसिंह कूंपावत के गीत में कवि ने रतनसिंह के मुख से वीरता और वदान्यता के लिए अन्य योद्धाओं को कहलवाया है कि जो अपने सिर आ बीतने पर शत्रु से युद्ध करते हैं तथा याचकों को दान देते समय मन मसोसते हैं, वे कैसे क्षत्रिय कहे जा सकते हैं ? गीत के द्वाले इस प्रकार पठनीय है—

तहि केहा खत्री पयपै रतनौ, चाह चढ़िया भांजिइ चड ।
मन भांपिया समापै मौजा वीरारसि चांपियां सिढ़ ॥१॥
सुयण समाह राजधर सभ्रम, ता पुरिखां न मनै तुडि ताण ।
अरि बिहिया हुवै आचारी, ओट दिया सूत्रै आराण ॥२॥
दळ आगळ खेमाळ दूसिरो, वदै अपर खत्रवट वरियाम ।
मन लाजिया थका दन मडै, सिर बाजिया करै सग्राम ॥३॥
कमध कहै देयतौ कळहतौ, इळ ता भडां किसी आवाहि ।
गिणिया जाइ रीझै आपे अथ, मिणिया जा माटीपण माहि ॥४॥
अणचितिया वारीस अतुळ-बळ, महि दूजा कूंपो कुळ मौड ।
अवरां सिरि पडते जुधि असमैं, रूकै भुज ओडै राठौड ॥५॥

अजमेर मेरवाडा के भिणाय का स्वामी राव रामसिंह राठौड अपने समय का पराक्रमी योद्धा और दातार माना जाता था। इसके यहा दिन रात रसोवडा चलता रहता था और वह आगन्तुक को किसी भी समय आये बिना भोजन कराए न जाने देता था, इसलिए यह

'रामसिंह रोटला' के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध था। यह जैसा उदार था वैसा ही दुर्धर्ष वीर भी था। धरमत के युद्ध से महाराजा जसवंतसिंह के भाग जाने पर भी रामसिंह धोलपुर के रणक्षेत्र में अनेक राजस्थानी वीर नरेशों व सामन्तों के साथ औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना से बहादुरी के साथ लड़कर काम आया। कवि ने रामसिंह की वीरता और अन्न दान की प्रशंसा करते हुए एक गीत कहा है—

अन अविया मार धार ऊधमिया, कमधज राई दिल्ली चै कामि।
रौद्रा दस थोमिया राम, राद्र कटक रेहंळिया रामि ॥१॥

मित अणरह अभंग कमाउत, ज सहज अजसैं जाधाण।
मिळिया द्वारि साहि जाइ भारथि, मिळिया भुगति मुगति मेछाण ॥२॥

कळि अण कळिति जलखंभ कटका, अगर हरा घर तैं अधिकार।
धान उभेळ छ खड नर धवियां धर रखपाळ विहडिया धार ॥३॥

चरू सुकाळ अभिनमा चौंडा, रूक बाह दुयजा रिणमाल।
दहुँवै करतब तणा दमामा, अ जगसिरि नीधग अपाल ॥४॥

राठौड वीर हरिसिंह उदावत रायपुर का स्वामी था। वह किसी युद्ध में सिर कट जाने पर तलवार के प्रहार से शत्रु सेना को काटता रहा और तलवार खंडित हो जाने पर कटार से दुश्मनों को मार कर धराशायी हुआ। हरिसिंह के जूझार होने के भाव को ग्रहणकर कवि ने सुन्दर भाषा में कहा है—

कुळवाट चीत अणजीत कनोजा, अग्नि लागा वेळा अधरि।
सामहि सख सुजडी नवसहस, हाथळियां वाहिया हरि ॥१॥
खिति खत्रभाग लाग खडेवा, पडिये सिर धाए प्रिसण।
विलमी वार सार वाढाळी, तुरग भूलो जत तण ॥२॥
असहा रूक सीसि आफळती, उरि चढिया अममाण उभारि।
ऊदाहरै सुजड अणियाळी पार हुव पूजाविया पारि ॥३॥
धड ऋट सावविया घ्रहड, आउध ता साखी अरण।
कळहणि साखि दाखि मोटा कुळ, मिळि सूरा कीधो मरण ॥४॥

डिंगल गीत कवियों ने अपने चरित्र नायकों के शौर्य और वदान्यता आदि गुणों का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करने के लिए रूपकों को बहुधा अपनाया है। नरहरिदास ने जयपुर के महाराजा (तब महाराजकुमार) रामसिंह कछवाहा को अपने एक गीत में तपोधनि, बादशाह औरंगजेब को जनमेजय और छत्रपति राजा शिवा को तक्षक बनाकर राजा जनमेजय के नाग-यज्ञ का सफल रूपक बांधा है। गीत की पंक्तियां दर्शनीय हैं—

सरप दाह जनमजय पतिसाह भालण सिवौ,
प्रथीपत किन्है हठि पड़ैं अणपार।
सरणि साधार खत्रभार परिया सगह

परीछत साहिजिहान सुत कोपियौ
सछक होमण गहण साह सुत ताणि ।
तपोधनि जहीं हिंदवाण चाढण प्रभति,
जरू रखपाळ अमिंघ सुथ जाणि ॥२॥
करण अहिमेद महवन हरौ कोपियो,
टळै न चळै जहागीर हर टेक ।
बाहा पै गारयक जिम हुवौ बहसि,
अभै पजर महासिंघ हर एक ॥३॥
अखिल रजरीत रा सिंघ लागा अरसि,
मुगणि मेछाण रा माण भागा ।
निभै नर-नाथ अही हाथ निरवाहियो,
अहि सिवौ छोडण दिलेस आगा ॥४॥
उगै राहा सिरै वधै कूरम अरश,
मन जगदीस सबळा तणा भाग ।
खोंद अरि अमावौ थको आडो खडै,
खोद सू राम अपाडियै खाग ॥५॥

दूसरा नरहरिदास भी बारहठ शाखा का कवि था। यह सावळ बारहठ का पुत्र था। इसके निवास स्थान और जन्म-मृत्यु तथा जीवन वृत्त की कोई जानकारी अद्यावधि उपलब्ध नही है पर सीकर के राव शिवसिंह शेखावत के ज्येष्ठ राजकुमार समर्थसिंह पर रचित गीत गुण भाखडी से कवि का समय सवत १७८० से सवत १८२० के मध्य माना जा सकता है। आठ दोहो के इस गीत मे राव समर्थसिंह की प्रशस्ति तथा पराक्रम का चित्रण किया है। उदाहरण स्वरूप दो द्वाले उद्धृत हैं—

बाका रावता दरगह थाट सेखावता रूप वर्णं,
ऊफण अमामे ओम पौरिस मे अथाह ।
सेवा री भजानवाह सामरथो महासूर
नीपणा निवाजै छाजै राजै नराताह ॥१॥
बाकडा बिड गा वाली गिड गा अनेक गाज,
सारसी करता द्वारि सोहियो सुडाळ ।
घणा आडो जाडे लोहे गाहडी री गाडो गिणा,
लाज पुज भीत लाडो सोहियो लकाळ ॥२॥

कवि के स्फुट छन्दो के अतिरिक्त भगवान राम की जीवन लीलाओं को माध्यम बनाकर रचित 'गुण रामावतार' शीर्षक निशाणी मिली है। यह १०६ छदो की रचना है जिसमे सक्षेप मे श्रीराम के जन्म, विवाह वनवास, रावण-वध और राज तिलक आदि घटनाए वर्णित है। नीचे निशाणी का अन्तिम अश उद्धृत है—

आई स अध्या आरती पर दुक्ख पहारे ।
सैण सहोवर सुखीया सुख रेंनि सिया रै ।
इण विध रामण जीति राम आ अवध पधारै ।
हुवा स मगळा अगळा रघ इद्रा वारै ॥१०६॥

इस प्रकार राजस्थानी काव्य मे एक ही नाम वाले अनेक चारण कवियों की रचनाएँ मिलती हैं जिनकी छान बीन मे सतकता और ऐतिहासिक घटनाओं का आधार ग्रहण किया जाना आवश्यक है, अन्यथा नाम-साम्य के कारण अनेक प्रकार के भ्रम उत्पन्न हो सकते हैं।



आईदान गाडण कृत शिवपुराण



हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की भांति राजस्थानी साहित्य में भी भक्ति-भाव धारा बही है। हिन्दी में कबीर, दादू, सूर और तुलसी जैसे संत, ज्ञानी और भक्तकवियों ने सांसारिक दुखों से पीडित और राजनैतिक वातावरण से क्षुब्ध जनसमाज को भक्ति का अमृत पिलाकर आश्वस्त किया था। राजस्थान में भी लगभग इसी काल में ईश्वरदास बारहठ, अलूनाथ कविया, कर्मानन्द, पृथ्वीराज राठौड़, केशवदास गाडण, माधोदास दधवाड़िया, नरहरिदास बारहठ प्रभृति कतिपय कवियों, भक्तों तथा साधकों ने अपनी वाणी से लोकमानस को भक्ति की ओर आकर्षित किया। इस धार्मिक आंदोलन अथवा भक्ति काल में राजस्थान में भक्तिधारा और वीरधारा दोनों अबाधगति से एक साथ प्रवाहित हुई हैं। इस काल की भक्तिपूर्ण रचनाओं में रामभक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा और शिवशक्ति भक्ति की प्रधानता मिलती है। इस काल के भक्तिकवियों ने अपनी रचनाओं एवं विचारों के द्वारा समाज को भली प्रकार से प्रभावित कर भक्त, भक्ति और भगवान की ओर मोड़ा है।

भक्तिधारा के कवि स्वयं उच्चकोटि के विचारक, अनन्य भक्त, श्रेष्ठ नीतिवेत्ता और सिद्ध कवि हुए हैं। भक्ति युगीन काव्य धार्मिकता, नैतिकता और सामाजिक ऐक्य की भावना से ओतप्रोत है। राजस्थानी कवियों ने युग की आवश्यकता को स्वीकार कर देशकालोपयोगी रचनाएं लिखी हैं। यदि उन्होंने किसी योद्धा का वर्णन किया है तो वह केवल योद्धा नहीं है, अपितु तत्कालीन समाज, राजनीति तथा जन भावनाओं का प्रतिनिधि एवं नायक है। यही राजस्थानी वीर काव्य का सर्वोपरि स्वर है।

भक्तिधारा के कवियों में आईदान गाडण नामक एक अज्ञात कवि की जानकारी मिली है। यह कवि बीकानेर नरेशों का आश्रित था। कवि प्रणीत "श्री भवानी संकरजी रो गुण सिव पुराण" नामक अपूर्ण ग्रन्थ देखने में आया है। श्री भवानीशंकर के गुण की कथा का आधार कवि ने शिवपुराण की कथा को माना है। आईदान गाडण रचित इस ग्रन्थ का आरम्भ का अंश इस प्रकार है —

छन्द आर्ज्या

आद सक्त सरसत आदेस, सुप्रसन गुणपति गंगा अर्धेस।
आपो मूझ असर उपदेस, मो मतिसार जपां महेस ॥१॥

भ्रपा निधान स्याम करणाकर, सेप भ्रजक रचे इत सुदर।
भ्रापे पोढिया भ्रागवड ऊपर, सुरपुर कर जळ सई मनोहर ।।२।।
भाजण घडण त्रिभोयण भामी, नाग नरा भ्रमरा, घणनामी।
।।३।।
पार ब्रह्म लीधी पर पूरण, निंद्रा किताई काळ नारायण।
भ्रछया थई जागिवा भ्रापण, विस्व त्रिगुण माया विस्तारण ।।४।।

छद वेखरी

भ्राद पुरस जागिया भ्रणाक्ळ, चेतन सक्ति सहेत निहचळ।
निंद्रा जोग निवारे नरहर, ईखियौ दिसा दूण वे ईस्वर ।।१।।

भ्रापो भ्राप न कोई दुजोयन, जळ पट सेप बिना पासे जन।
नाथ भ्रनाथ स्याम बहोनामी, जाय पोढिया भ्रतरजामि ।।२।।

विस्वनाथ ना बडे घणावण, माया त्रिगुण तणा फद मडण।
दीधो रचण त्रिभोयण दूवो, हरि हुकार सबद जद हूवो ।।३।।

कीधो सिस्ट कहण चे कारण, नाभी हूत पकज नारायण।
परम भ्रछिया रूप उपायो, उदित कमळ जळ बाहिर भ्रायो ।।४।।

कर भ्रसतूत ब्रह्म तप कीधो, दूवा सिस्ट रचण हर दीधो।
पोहोप प्रकास कियो पर पूरण, तेमि भ्रचित्र सुप थियो ब्रह्मतण ।।५।।

ब्रह्म भ्रकुट उग्र तेज सुविडव, भवभ्या प्रकट भ्रजोनी सभव।
तमो सरूप भरण रग त्रिनयण, त्रिजट पच सुप लेप पसम तण ।।६।।

पनगहार गज सुछ पाटबर, कठमाळ कप्याळ लिये कर।
वाहण व्रपम पिनाक ससत्रवण, भूत दईत भण ।।७।।

फठ जहर नीलै हेमाकर, सिंगी नाद जुगादी सुरेसुर।
परम रीझ दीधी दिय पुत्ती, सिव वामा जगत मा सत्ती ।।८।।

सिव पै तखत सुरा सारा सिर, वास दियो कैलास विसभर।
परगहे सम्रध भ्रस्टसिध पास, करे रजा स रास कैलास ।।९।।

तदनन्तर कवि ने भगवान् पशुपति नाथ शकर के निवास-स्थान कैलाश का बडा सुन्दर किन्तु सक्षिप्त वर्णन किया है। फिर त्रिपुरासुर के कैलाश पर भ्रागमन का विस्तार से वर्णन कर उसका वध करवाया है। इसी क्रम में महिषासुर वध, दक्ष का यज्ञ, सती का यज्ञ मे जाना, वहाँ भस्म होना यज्ञ विध्वश भ्रौर देवताभ्रों द्वारा प्रार्थना करने पर दक्ष को पुनर्जीवन प्रदान कर तपस्या में बैठना, सती का हिमालय में जन्म लेना, वहाँ शिशु लीलाएँ करना, शिव से साक्षात्कार होना,भीलो और शिव का युद्ध,ताण्डव नृत्य भ्रौर विवाह प्रसग का वर्णन किया है। शिव की बरात का बडा भ्रनूठा वर्णन किया गया है, कुछ स्थल भ्रवलोक्य हैं —

कहाया सिव हैम हूता यथ्यन, महावाधियो हेम आणद भर्न ।
कर ज्याग आरभ उछाह कीधा, दिसे ही दिसे नू तरा हेम दीधा ।।
सताबी सिव आविया जान सज्जे, गुडे गोड वाजिन गो थाप गज्जे ।
भ्रगुटी कटि मोट वागा भसमी, पलट्टे कटि नाग पागो पसमी ।।
मिणीमाळ रुड फुणहार मौजे, विख भख्ख नै चख्ख पावक्क चौजे ।
कर डमरू चाप सूळ कपा, छजेळ अब रगे तुचा अग छाल ।।
अपानाथ बिमाह उछाह कीधा, लखा भूत प्रेता लार लीधा ।
इसा रूप सू रुद्र की जान आवी, वळे श्रीमुखा नाद सिंगी बजावी ।।
बधाई दई हेम आवे बधाई, पबराज पासे घणू मौज पाई ।
महाजोध आठै कुळै साथ मेळै, सजे आविया हम साम्हा समेळै ।।
निज नाथ तातो करे जेथी नदी, बधे तोरणा सीध श्रीहत्य वदी ।
मना आरती साज काजै महेस, अटक्के खडी रूप देखे अनेस ।।
भणी एम मैणा उमा तात भूलो, सनमथ देखे न कीधो स सूलो ।
कियो काज भोळा गिरा काज केहो, इसी डीकरी माहरी बींद एहो ।।
बडा देवता नार कूड चियाणी, जोगी ने जोय काज यो वृथ्य जाणी ।
जेठाणी देराणी न सासू नणदी, बहु पास आवास बदा न बदी ।।
अबुधि इसी बुधि कीधी अनेसी, सतु डीकरी किथ्य ऊभी रहेसी ।
ठिकाणा न को ऊभरा कमठ्ठाणा, महिरान उदी थान वासो मसाणा ।।
घणू साथरा पाथरा मोर घासे, पळेटो जितो नाह पवन्न पासे ।
निकू दास खवास "याती गि"याती, जितु योवळा भूत प्रेता जमाती ।।
धूतारो ठगारो नरो दभ धारी, कुचारी बिजारी सु पाखड कारी ।
कपट्टी लपट्टी घटी माहकारी, गिरज्जा कज बीद एहो भिमारी ।।
जियो राजरीत नही ऊ चजाती, बडेरो न को साथ साथी बिराती ।
मुगट जट मौड मडे तमासा, पखे पार लूब फुणधार पासा ।।
भखे पार बिख धतुमार भग, गळे भूपणे ठाठ भूले पनग ।
खुले कान भोती जठे काम खोटो, महागार री मुद्रका भार मोटी ।।
निजां केस रा बदणा लेस नक्की, उडे राख चो पास अग अधक्की ।
किये नाग ने बाघ री खाल मघे, बजाबा गळे अगारा सींग बधे ।।
किये त्रब मे काच्छ हत्थे कपाळ, मही चख्ख ज्वाळा गळे मुडमाळ ।
वळै तेकी नोबता धीह वग्ग, असवार पाला नको मुह अग्गे ।।
मसत्ती हथी नको मद्माता, तुरगा नको पूरिया तेज ताता ।
सिहासन सगळा नको रत्थ सोधो, गिणो टापरे आय ऐकीज योधो ।।

करू जाए रो कत वाखाए केहो, उमा काज लाये जीय वीद ऐहो।
मुळक्कै करै मीढ रा मुल्खमोडा, जोडो सापरी पू छडी गठ जोडा ।।
सामीएा जोये कोई जिने समाया अठे माहरी डीकरी नाह आया।
अम्हाने जोगी देखता लाज आवै, पुत्री देव रम्भा इसौ वीद पावै ।।
बधान को रुद्र लीधा आवासां, सजोए रही आरती एक मासा।

कवि ने शिव वरात के सदभ मे हिन्दू नारी का अपनी पुत्री के प्रति सहज स्नेह, उसके पति की योग्यता, परिवार की आवश्यकता आदि प्रसगो पर बडा मार्मिक प्रकाश डाला है। मैना के रूप मे हिन्दू माता की मनोव्यथा का वास्तविक चित्रण कवि के सूक्ष्म निरीक्षण और गहरे ज्ञान का द्योतक है। विवाह मे साथियो-बरातियो का विनाद,हास्य और मस्तीभरा अल्हडपन स्वाभाविक है। सगे सम्बन्धियो एव दूल्हे तक की मीठी चुटकी लेना सामान्य उपक्रम है। हास्य की यह पक्ति कितनी मीठी है "जोडो सापरी पू छडी गठ जोडा।"

शिव के भयावने स्वरूप, बरातियो की आकृति एव उनकी पोशाको को देखकर मैना एक मास तक आरती सजोये खडी रही,तब देवताओ ने शिव से अपना मनोहर रूप प्रकट करने के लिए प्रार्थना की। तब फिर मैना ने प्रसन्न होकर भगवान रुद्र की बलैया ली। यथा—मरणा बारणा लूरा लेती महेस।" विवाह वर्णन से आगे की पक्तियो मे गणेश का सृजन,शिव गणेश का युद्ध शखासुर का वध, चारणो की उत्पत्ति, शिव की समाधि, कामदहन, कार्तिकेय का जन्म और तारकासुर युद्ध एव उसके वध तक की कथा का वर्णन प्राप्त है। आगे का अश त्रुटित है। प्राप्त प्रति के अन्तिम अश मे लिखा है—

हुआ तीन लोका माही सार हद, सही मगळाचार जैकार सद।
इसी भात जीते कइलास आयो वळै उमीया पुत्र जाओ बधायो ।।
रुद्र पाइ लागो घणी भाई रात्तो, लिया हेत सू तात छाती लगातो।

इसी प्रकार राजस्थान की भक्ति परम्परा के कवियो मे एकलिंगदान सिढायच, प्रभुदान मिश्रण, भोपा आढा और नाथू चारण की भी भक्तिपूर्ण कृतिया मिलती हैं।



कछवाही किसनावती और उसके पुत्रो के गीत



डिंगल का वीर गीत-साहित्य अति विपुल अति समृद्ध तथा वैविध्य पूर्ण है। गीतों की भूमिका के पीछे लगभग बारह सौ वर्षों की दीर्घकालीन उज्जवल परम्परा रही है। इस लम्बी अवधि में हजारो कवियो ने हजारो गीतो की रचनाएँ की है। राजस्थानी गीत साहित्य की ज्यो ज्यों शोध होती जा रही है, त्यो त्यो अनेक गीत और अनेक अज्ञात कवि हमारे सामने आ रहे हैं। एक ही शैली और भाव धारा पर एक ही नाम के विभिन्न समय के अनेक कवि और उनकी रचनाए अवलोकन मे आती है। इससे गीतो की जन प्रियता, उपादेयता और व्यापकता सहज ही अनुमेय है। डिंगलगीतसाहित्य मे युद्धवीरता और दानवीरता का तो बड़ा ही अनूठा वर्णन मिलता है। अपने चरित नायक के वैभव और सामर्थ्य, सचय और त्याग, भोग और,सयम आदि का गीतो मे सुन्दर वर्णन मिलता है। युद्धप्रेमी योद्धा जीवितावस्था मे ससार के सुखो का उपभोग और वीरगति प्राप्त करने पर स्वर्ग की सुन्दरियो का वरण कर स्वर्ग के दुर्लभ सुखो को प्राप्त करता हुआ अकित किया मिलता है। राजस्थान मे अगणित योद्धा हुए हैं और उनके वीर चरित्रो पर अनेकानेक गीत रचे हुए मिलते हैं। किन्तु फिर भी एक ही योद्धा और एक ही घटना पर लिखित गीतों मे भाव साम्य होते हुए भी वर्णनवचित्र्य पाया जाता है। योद्धाओ पर रचित गीतो मे अनेक प्रकार के सुन्दर रूपक बडी सबल शब्दावली मे गुम्फित प्राप्त होते हैं। राजस्थान का वीर एक पक्ष मे तो एक इन्च भूमि के लिए प्राणोत्सर्ग करता पाया जाता है और दूसरी ओर गाँव बाटता मिलता है। उसे एक ओर भूमि से ममता है तो दूसरी ओर वह उसके प्रति निर्मोही भी है।

डिंगल गीतों मे काव्य के नव रसो पर एक से एक अनूठे गीत रचे गये हैं। उनमे राजस्थान का स्थानीय वातावरण और लोक मानस की आकांक्षाओं का स्वर भी भली भाति गू जता रहा है। और इन सबसे बढ कर राजस्थान के इतिहास के तो गीत सर्वाधिक प्रबल आधार है। राजाओ-महाराजाओ के तो शिलालेख, ताम्रपत्र, पट्टे-परवाने खण्ड अथवा प्रबन्ध काव्य ख्यातें बातें, आदि मिलती हैं किन्तु सामान्य स्थिति के असाधारण वीरों के उदात्त चरित्रों के अनुसन्धान के लिए तो गीत ही एक मात्र साधन हैं।

जिस दिन राजस्थान के गीत-साहित्य का परिश्रम पूर्वक उसका विधिवत अध्ययन किया जा कर प्रकाशन होगा, उस दिन राजस्थान के इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओ का उद्घाटन होगा।

यहाँ राजस्थान से बाहरगए हुए एक वीर परिवार से सम्बद्ध आठ गीत प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इन गीतो मे दो गीत तो 'राजस्थानी वीरगीत' पुस्तक जो बीकानेर से छपी थी, मे प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु उन पर किसी भी प्रकार का ऐतिहासिक टिप्पण न होने से गीत नायक के स्थान, समय और प्रतिपक्षी योद्धाओ की जानकारी नही होती, इसलिए यहाँ उन्हे ले लिया गया है। राजस्थान के अद्यावधि प्रकाशित इतिहासो मे भी इन गीतो के आधार पर घटित घटनाओ का उल्लेख प्राप्त नही है। गीतो के नायको का इतिहास इस प्रकार है—

जोधपुर के राव मालदेव (वि० स० १५८९ १६१६) के २२ राजकुमार थे, जिनमे राजकुमार राम सब से बडा था। राम ने युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। फलत मालदेव ने राम को मारवाड से निष्कासित कर दिया था। तब वह अपने ससुर महाराणा उदयसिंह के पास चला गया। महाराणा ने उसे केलवा की जागीर प्रदान की। किन्तु मेवाड से वह बादशाह अकबर की सेवा मे चला गया। कुमार रामसिंह के द्वितीय पुत्र कल्ला (कल्याणसिंह) हुआ। कल्याणसिंह के यशवतसिंह और उसके राव जगन्नाथसिंह हुआ जिसने सवत १६६१ वि० मे मालवा मे अमभेरा राज्य की स्थापना की।[1] राव जगन्नाथसिंह ने बादशाह जहांगीर की सेवा म रह कर जोधपुर के महाराजा गजसिंह के साथ शाहजादा शहरयार और शाहजादा खुर्रम (शाहजहा) के युद्धो मे भाग लेकर विजय प्राप्त की। यह घटना बिहार, उडीसा और बगाल के किसी भी युद्ध की हो सकती है। राव जगन्नाथसिंह का विवाह कछवाहा राजा जयसिंह की राजकुमारी किसनावती के साथ हुआ था। इस सम्बन्ध मे कछवाहों के लिखित इतिहास के अभाव मे निश्चित नही कहा जा सकता कि यह जयसिंह कहा का था। परन्तु अनुमान है कि राजकुमारी किसनावती जयपुर के महाराजा मिर्जा राजा जयसिंह की पुत्री थी। नीचे राव जगन्नाथसिंह का डिंगल गीत अकित —

गीत राव जगन्नाथ जसवतोत रो

सहरीयार उतराध-पूरब खुरम साफलै, वाजीया थाय दिव राय राजा।
विढे मुरधरा तणा सीम वाधारीया, राव जगनाथ गजवध राजा ॥ १॥
हिंदवा तुरका दळा आगल हुवे, लियो जस जैत वानैत लोयै।
करे गजगाह पतसाह दहवट किया, जाधपुर चाढियो नीर जोधै ॥२॥
कजधजा वेहू भाराथ सबला किया सवल साका किया सूर साखी।
अभग ऊदाहरे जिसी खेंसी अचड, रामहर तिसी अखियात राखी ॥३॥
भिडे भाला मुहे सात दल भाजिया, थाभिया सात दस हुवा दळ थम।
जुडे गजगाह पतसाह वहि जीविया, सूरवत जसावत जोवतासम ॥४॥

—किसना दुरसावत री कहीयो

१ मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ १४४ का फुट नोट प० रऊ।
२ क्षत्रिय गौरवमासिक, जयपुर, सन् (१९४७, अमभैरो का मामला) वर्ष २ अंक १४ पृष्ठ २१।

राव जगन्नाथसिंह के दो पुत्र हुए । प्रथम केशरीसिंह व द्वितीय सुजाणसिंह । अपने पिता के निधन के बाद केशरीसिंह अमझेरा का शासक हुआ । वह भी अपने पूर्वजों की भांति ही शाही सेवा में चला गया । बादशाह औरंगजेब के शासनकाल में वह दक्षिण के मोरीगढ नाम के दुर्ग का दुर्गपाल था । छत्रपति शिवाजी ने एक दिन अकायक मोरीगढ पर आक्रमण किया । किले में किले के रक्षकों के अतिरिक्त राव केशरीसिंह, उसका अनुज सुजाणसिंह, उनकी माता कछवाही किसनावती और दोनों भाइयों की पत्नियां भी मौजूद थी । मरहठों के अचानक धावे से वे वीर क्षत्रिय भी विचलित नहीं हुए और लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए ।

भारतीय मध्यकालीन और पूर्व आधुनिककालीन इतिहास में साका तथा जौहर करके सामूहिक रूप में वीर नारियों के अग्नि प्रवेश तथा प्राणोत्सर्ग करने और पति के शव के साथ अपनी कोमल काया को 'काठों' में आहूत करने का वर्णन तो बहुलता से प्राप्त होता है । परन्तु रणक्षेत्र में योद्धाओं की भांति शत्रुओं से लोहा बजाने वाली वीर वीरांगनाओं में महारानी कर्मावती हाडी, महारानी जसमादे हाडी याद बीबी, रजिया बेगम, अहिल्याबाई, समरू बेगम और रानी लक्ष्मीबाई झांसी की ही विशेष प्रसिद्धि है । उपर्युक्त वीर महिलाओं की ही तरह अमझेरा की राजमाता महारानी किसनावती कछवाही का इतिहास भी कम गौरव पूर्ण नहीं है । किसनावती ने अपने पुत्रों और पुत्रवधुओं के साथ मरहठों से सामना कर वीरतापूर्वक वीरगति प्राप्त की थी । नीचे साक्षी के लिए डिंगल गीत प्रस्तुत है—

गीत कछवाही किसनावती जी रो—

दवदाधी अेक अेक दुखदाधी किसनावती कहै सुरकोडि ।
गधारी न जुडी धारी गति, जुडी न कूंता थारी जाडि ।।१।।
सूरत धन जसिंघ सारखू भली भली अिहूं भुवण भणी ।
मा कैरवा तणी न कियो मत, तो जेही पांडवां तणी ।।२।।
अत प्रब माइ विहे तो मिलिया, कहिजे ज्यां बखाण किसा ।
दुरजोधन जिसडा दूसासण जुजिठिळ भरिजण भीम जिसा ।।३।।
केहर सूर लिया कछवाही, मुगति तण पथ चाली मात ।
जळी नहीं सूनी कूंता ज्यूं, रूनी न गिन गधारी रात ।।४।।

—मोरधन बोगसौ कहै

बोगसा शाखा के चारण कवि गोवर्द्धन ने महारानी किसनावती के समरभूमि में प्राण त्याग कर स्वर्ग पहुंचने पर देव समाज द्वारा उसके इस अद्वितीय कार्य की सराहना करवाई है । दुःशासन और दुर्योधन के मरण पर गांधारी घर में बैठी दुःख के अश्रु गिराती रही और कुन्ती भी युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन के साथ महाभारत के युद्ध में नहीं लड़ी । किन्तु महारानी किसनावती अपने पुत्रों के साथ रण में जूझ कर स्वर्ग गई ।

राजस्थानी नारियों ने विषमताओं के समक्ष आत्मसमर्पण कर अश्रु कभी नहीं गिराये। अग्रिम गीत में किसनावती के शीश का कण्ठहार बनाने के लिए उत्सुक शिवा और शिवा का वर्णन पढ़िए—

गीत दूजौ कछवाहीजी रौ—

भारथ मझि मडै दूसरौ भारथ, रथ राखियौ जुवण ग्रहराज।
उमिया ईस बिनै आहुडिया, किसनावती तणा सिर काज ॥१॥*
चित्त सूरति पेखे कछवाही, हुवौ विमोहती पदम हथ।
आनमी उतवग ल आन्म, सक्ती रूप कहियौ सकथ ॥२॥
रुद्र घरणी कहियौ साभळ रुद्र, आगाळग तैं लिया अनेक।
जैसीघ घी तणौ धू जोता, उमर भमी लियो मो अंक ॥३॥
हर दरगाह न्याय मा हालै, बिसन वाटियो कर विचार।
सत्रहमौ सिणगार सिवासिव, सिर आधौ पूरौ सिणगार ॥४॥

—गौरधन बोगसौ कहै

किसानवती से सम्बन्धित प्रस्तुत गीत में उसको दुर्गा और उसके दोनों पुत्रों का काला-गोरा भैरव मान कर वर्णन किया है—

गीत कछवाही किसनावती जी रौ—

कळह दोय बेटा गोरो काळो है थट पाडे वजर हियो।
चावड देवणो रण चाचर, कछवाही अवतार कियो ॥ १ ॥
केहर अनैन सुजाण हचकिया कळ, सीले लूण दिलो र साह।
वहू हाथा करे महादेवी बीसा हाथा जिसी हथवाह ॥ २ ॥
खेतरपाळ पूत पिव खेले, पूजा चढ पड अणपार।
कर जात्रा सिव दळ कहियो, कळा नमो तो जजकार ॥ ३ ॥
साको कर गढ दे माथा सौं, जगड धणी उजवाळ जग।
पुत्रा बहू सहेता पधारे, सबळी लाज कधारे खग ॥ ४ ॥

—भैरवदास जो येहड रौ कहियौ

पाचवां गीत किसानवती के वीर पुत्र राव केशरीसिंह पर कहा गया है। गीत में शिवाजी मरहठा के आक्रमण का स्पष्ट उल्लेख हुआ है और उसी युद्ध में केशरीसिंह के मारे जाने का भी।

---

*प्रमुख अमुख चर नारद ओसर, त्रिपति पाच मिळि पाच तत।
हू सर तिरपति सुज जाण हरि त्रि सगति त्रिहू रति तिरपत ॥
(राजस्थानी वीर-गीत, गीत १०७, पृष्ठ ११८)

गीत राव के केसरीसिंघ जी रो

उठो केहरी सिवराज आयो, सबळ मेळे साथ।
जगावत अवसाण जोतो, हमे वा वरि हाथ ॥ १ ॥
हलकार भीरू बडा हिन्दू, ताहरा तुरताण।
समसेर भाले करो सेहरा, साभळे सुरताण ॥ २ ॥
दूसरा जसवत आज दिखणी, मुजां पा भरभार।
कुळ रीत दाखव जोध काळा, ऊजळा अमवार ॥ ३ ॥
कर कळह साको कमध केहर, दाव खत्री दाव।
जुध करन गजबध कला जेहो, रथे बैठा राव ॥ ४ ॥

— बारहठ जसौ कहै

छठा गीत भी राव केसरीसिंह पर है। गीत मे गढ को अपने शरीर के साथ दृढ़ता से बाँधे रखने का वर्णन किया गया है—

गीत राव केसरीसिंह जगनाथोत रो

कीधी आगात वात अत केहर, छिळतै मच्छर गगहरी छात।
गोरी तूझ गळे बाघो गढ, तै गढ गळे बाँधियो गात ॥ १ ॥
डिगियो नही करड धड देखे, निवड गजड सुत निडर निगेम।
तो घड अनड जडक्यो ताई, त घड अनड ततौ उर तेम ॥ २ ॥
छाडाहरा न पाडी छेटी, मेरी दखण महण कर मील।
तस हर तो उ डील तागुळ, दुरग जुत नागळियो डील ॥ ३ ॥
राव वणाव जीये सूर रिध गल वाधिया तणो गुणाव। -
कैवी चाढ़िया कोट केहरी, पाडै कलू धडै दे पाव ॥ ४ ॥

—गोरधन बोगसो कहै

सातवें गीत मे केशरीसिंह द्वारा शत्रुओं को सिर देने तथा गढ न सौंपने का वर्णन है। कवि ने केशरीसिंह के पूर्वजो के रणदाक्ष्य का भी स्मरण करवाया है—

केसरीसिंघ री गीत—

मडियो भाराथ करण गढ मार्थ, राव जगनाथ तणे कुल रीत।
गज चित्राम तणा माहन गत, चढै न ऊतरियो बड चीत ॥ १ ॥
कोट चढ़नै राव केहरी, मारू नरा नखतरा मील।
सुज किम रहै भाजतै साजे पटहथ लिखत तणा पर पील ॥ २ ॥
त चाढियो मलाई चक्तै, सिधुर तणा लिखत साभाव।
कोट पलट राव केहरी, काया पलट किसो कहाव ॥ ३ ॥

भागो भीर शरीर भाजियो, भीत चित गज माहुत भग।
माधवै राव दियो सुमायो, दियो न छाया करैं दुरग ॥ ४ ॥

आठवां और अन्तिम गीत राव केशरीसिंह के अनुज वीर वर सुजानसिंह पर रचा हुआ है। सुजानसिंह केशरीसिंह के साथ ही काम आया था। यह गीत यह भी स्पष्ट करता है कि औरंगजेब के पक्ष में ये माता, पुत्र और पुत्रवधुए लडी थीं।

गीत सुजाणसिंघ जनायोत रो

गढ़ पडिये भल अनड गहमह होवे, आपण पो घरि प अघण।
सूरज कहे सपेसो सूजे, ऊभो रथ राखे अरुण ॥ १ ॥
औरंग सुध्ध बधव मुह आगल, थाठा बिच रिणथम थियो।
दणियर कहे अचभो देखो, कमधज आवारीठ थियो ॥ २ ॥
घड वेहडा मुहे खगधारां, बगतर नर करतो बिसुध।
अचरज हुवो प्रभाकर आखे, जगड समोभ्रम तणो जुध ॥ ३ ॥
अरक करे त्रिपतो जुध औसर, सदीतो सतिया थान सुर।
साथे राव केहरी सूजो, गो अस जीपे खनीगुर ॥ ४ ॥

—करमचन्द बोगसो कहै

इस प्रकार राजस्थान के डिंगल गीत अपने कलेवर में अनेक युद्धों और युद्धवीरों की गौरव गाथाए सजोये हुए हैं। राजस्थान के इतिहास के लिए ऐसे गीतों का प्रकाशन अति आवश्यक है।



कविवर हुकमीचंद खिड़िया



राजस्थान की पुनीत वसुधरा वीर प्रसविनी रही है। यहाँ की प्रकृति सदैव से ही कवि-समाज के आकर्षण का केन्द्र रही है। वीरांगना की जननी राजस्थानी भूमि ने अपनी गोद में वीर पुरुष, सती नारियों और वीर भावनाओं के प्रेरक कवियों को उन्मुक्त हृदय से लाड लड़ाया है। और यही कारण है कि यहाँ के वातावरण में वीर भावनाओं का स्वर गुञ्जित रहा है। वीर वातावरण के प्रसारक कवियों में चारण कवि, राजपूत कवि, मोतीसर कवि, सेवक कवि और ढाढी जाति के कवियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। किन्तु इस वातावरण के निर्माण में सर्वाधिक सेवाएँ चारण जाति की रही हैं। चारण समाज ने सहस्राधिक कवि रत्नों को उत्पन्न कर राजस्थान की कीर्ति और राजस्थानी साहित्य की श्री वृद्धि के यज्ञ का अनुष्ठान किया है। यही नहीं, चारण समाज ने राजस्थानी वीर-वातावरण की सफल अभिव्यक्ति के लिए राजस्थान की काव्यभाषा डिंगल और उसके विशिष्ट रचना प्रकार गीतों की भी रचनाएं की। डिंगल गीतों में राजस्थान का वीर हृदय शत-शत धाराओं में मुखरित हुआ है।

चारण जाति के डिंगल गीतकार कवियों में हुकमीचंद खिड़िया का उच्चतम स्थान है। यद्यपि अद्यतन प्राप्त गीतों से यदि मुक्तक गीतकार ही प्रगट होता है और उसके गीतों में युद्ध की सैं धव स्वर-लहरी का गान गूंजता है। इसके मूल में मुख्य कारण गीतकार के समय की राजस्थान की राजनैतिक परिस्थितियाँ ही अधिक रही हैं। मध्यकाल के कवि हुकमीचंद के सामने देश में व्याप्त अशान्ति, मरहठा और राजाओं के पारस्परिक संघर्षों और राजनैतिक परिवर्तनों का वातावरण था। योद्धाओं, राजनेताओं और स्वाधीन चेता सामान्य जन का ध्यान एक मात्र अपने सुरक्षित देश की रक्षा, स्वत्व का आरक्षण और आक्रान्ताओं की शक्ति का परिशमन करने पर आधारित था। डिंगल गीतों के आलोचकों ने डिंगल कवियों को आश्रयदाताओं के प्रशंसक और गीतों को व्यक्तिगत प्रशस्तिपरक काव्य कह कर उसकी महत्ता को सीमित करने का प्रयास किया है, किन्तु गीतों के आलोचकों ने गीतों के रचनाकाल के वातावरण की ओर आँख मूंद कर ही ऐसा लिखा जान पड़ता है। डिंगल गीत लेखकों ने समाज और प्रान्त की तत्कालीन आवश्यकताओं तथा समय की मांग को ध्यान में रख कर योद्धाओं को उत्साहित करने के अपने कवि-दायित्व को निभाया है। जिन योद्धाओं पर आज डिंगल गीत उपलब्ध होते हैं वे एक आदर्श व्यक्तित्व के धनी तो थे ही, पर साथ ही समाज के प्रतिनिधि और उसकी आकांक्षाओं एवं आदर्शों के रक्षक भी थे। आज की भाषा में वे समाज की भावनाओं के प्रतिनिधि नेता थे।

मध्यकालीन डिंगल कवियों में हुकमीचन्द उन्नत कोटि के कवि स्वीकार किये जाते आ रहे हैं। उनके गीतों में समाज और प्रांत की भावनाएँ एवं आकांक्षाएँ समाहित हैं। सुकृत की प्रशंसा और दुष्कृत की भर्त्सना करने की उनमें क्षमता थी। और यही कारण है कि उन्होंने निष्पक्ष न्याय के लिए बड़े से बड़े राजा को भी दुत्कारने में संकोच नहीं किया।

व्यक्तिगत परिचय की दृष्टि से डिंगल के अन्य कवियों की भाँति ही हुकमचंद का परिचय भी यथातथ्य एवं क्रमवार उपलब्ध नहीं है और न ही उनकी समग्र रचनाएँ भी किसी एक स्थान पर संग्रहीत प्राप्त होती हैं। कवि द्वारा रचित गीतों के नायकों के समय के आधार पर कवि का रचना काल विक्रमाब्द १८०० से १८६० के मध्य निश्चित होता है। प्राप्त गीतों के आधार पर ज्ञात होता है कि कवि का अधिक सम्पर्क किशनगढ़, शाहपुरा, बूंदी और अन्त में जयपुर राज्य से रहा था। महाराजा ईश्वरीसिंहजी के निधन के बाद तो उनके उत्तराधिकारी महाराजा माधवसिंहजी प्रथम के राज्यारोहण पर वे जयपुर दरबार के कवि बन गये। महाराजा माधवसिंहजी ने कविवर को मालपुरा परगने का वनढिया ग्राम सासण के लिए प्रदान कर सम्मानित किया। महाराजा माधवसिंहजी के स्वर्गवासी हो जाने पर उनके पुत्र महाराजा प्रतापसिंहजी जयपुर से भी इनका अति उत्तम सम्पर्क रहा। अनुश्रुति के आधार से खड़िया जाति के पुरखों का मारवाड़ में खराडी ग्राम मूल-स्थान था। खराडी ग्राम के नाम से ही उनकी 'खिडिया' जातीय सम्बोधन की प्रसिद्धि प्रचलित हुई मानी जाती है। किन्तु हुकमीचन्द का खराडी में बँट नहीं रहा। एक बार उन्होंने खराडी का अपना पैतृक भू भाग प्राप्त करने के लिए तत्कालीन जोधपुर नरेश विजयसिंहजी से प्रार्थना भी की। पर खराडी के अन्य भाइयों ने प्राचीन प्रमाण प्रस्तुत कर उनके उस दावे को प्रमाणित नहीं होने दिया। इस पर महाराजा विजयसिंहजी ने नवीन 'शासण' देना चाहा पर वह उन्होंने लेना स्वीकार नहीं किया। यद्यपि उन्हें इस अधिकार से वञ्चित रहना पड़ा। किन्तु 'सापुरसांसिंह बाज खग ये विदस चढि चढि चरै" के अनुसार उन्होंने अपनी प्रतिभा और काव्य-बल से नवीन ग्राम प्राप्त किये। हुकमीचंद ने अपने समकालीन सभी राजस्थानी नरेशों से सम्मान प्राप्त किया था।

कवि के समय, रचनाकाल और तत्कालीन राजस्थानी योद्धाओं से उनके सम्पर्क एवं उनके अद्यतन प्राप्त साहित्य की परिचिति की दृष्टि से उनके गीतों की प्रथम पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत कर देना लाभप्रद सिद्ध होगा। और इस क्षेत्र में अन्वेषण करने वाले विद्वानों को इससे सहायता प्राप्त होगी तथा उनकी कतिपय अज्ञात रचनाओं की शोध खोज के मार्ग में सरलता बढ़ेगी। प्राप्त गीतों की सूची—

१ वेदा वरणी अलोका भेदा तुलज्जा तुरणी वाना
२ पब्वे उठाये हणू ज्यू चाहै मुनि जेम सिंघ पीण
३ दृका वाज ववहर सहर होइ दळ हिलोहळ
४ थभे पाथाध परखा सीम नैभ जे पयाळ थडै
५ महाक्राधणी गनीमां हूत हुचवे नरिन्द माधा

६ अनड मेर अग उतग गया अजे ऊनरत
७ अहसनाथ घड़ी चूक मरजाद छड तसत री
८ वेता वायबा अलगी भप लेता मेन वबी
६ भाळा वूठतो वराळी तापो वाहता अकाळी भाट
१० हेळा आणपी सिंध ज्यू एवे आच हूत हिलोळिया
११ दळानाथ पाराथ अग उमग आमत दसत
१२ सिधा अपारा नागेमहारां पारावारा स्रोर सघ
१३ धोळा ऊपटे रतगा जाणं फुहारा छूटै
१४ महा पाटीलो मरोडदार अयी सू तोणिया मूछां
१५ राजे मुनि जे मुनेस रूप नागा साजे नागराज
१६ बिलद दीठ राजी हटा जटा गग वहण री
१७ जमी सहावा नागे द्र लोव उपावां विरच जाणी
१८ ताळी खुटवे विहगा मागा वाज लाप वज्रताळी
१९ वरी अग विफळा हुवां वरी मजळा वरी
२० एळा इन्द्र सू जूभवा क्रोध ऊपता अजन्द्र आयो
२१ धूजे सतारो भटक्का पार पळे आसमान घमं
२२ हले हाथळां जोर साबूता घटा ज्यू घोर सा हुकै
२३ वागा कपडी सतारा सेन वाळी चोड खेत बीच
२४ दत्ता ताळीसा खूटीया वज्रधारा सा छूटीया डाणा
२५ प्रचड फैल फौजा पसर पयोनिध पारिया
२६ सरण रायजण चरण वाखाण करे सिघ
२७ भडा न खूटा गयदा पीठ न लगी लाह मे भाळां
२८ अळं देण दुसहा पडण पैण तीरा पडै
२९ राळे चाढिया जरहा काळा काबिया कपोळा रगे
३० असभ ऊपटे क्रोध अळ साहपुर नद अटव
३१ बागी ऐरावा रवावा व्हे भवावा माला सारा बध
३२ ज्वाळा जेठ री जेहडी जगी बीज माळा जाणे
३३ तोडे खेरता नग्रीठा खागा वागा धाकारीठ तत
३४ भगे आलसा अमाप तोपा लगे आसमान भाळां
३५ लगो लाय प्रतरोम षिखतो रयो घोम लखो
३६ गगा एकही तरणा बार ऊधासोन चल्ले गेण
३७ चमू आयडे चोवडा घाटी ओघाटी अयवा चल्ले
३८ घडीया अरोड माधव नृप याटा
३९ घमस बाजि नाळां गरद चढावे धोमसा
४० कमळ ऊजळे रद्र चद्र मिळे ताणे कळा

४१ फीला प जमी मचोळबो हिलोळवो सिंघ ज्यू फौजा
४२ नरां भजै चसम्मा चढ नागेन्द्र विसम्माए नद
४३ पगा जेणि रुघनाथ बस नाथ सिर ऊपरा
४४ हुरी प्रबाडी अनोप रगा मूल सिरी जरी हेम
४५ प्रसम क्रोध भळ लोम लहरा तुरस
४६ द्रोण तोलवो मारुती रेव रोकबो प्रजा नरिंद
४७ चडी छाक ले प्रामखा गूद कोण चीला रजा चलै
४८ गिरद धूज धू सा महा बीर नद गडिया
४९ ज्वाळा जूप रोस माफा ज्वाळा तूप रो भौधणो जोध
५० प्रळै साथवा फूटियो सिंघ वारध क लोप पाजा
५१ ईखु पाथरो क वज्र सुरनाथ रौ भलूळ भोघ
५२ वडी बाजता वरम्मा पीठ पनागा ऊघडी केत
५३ प्रळै भाळबो पिनाकी चक्र उछाळवो रमापती
५४ तू तो बजावे धरणोई यू न बाजे एक हाथ ताळी
५५ प्रोपे वूजळ माळि विळमभल्ल श्रामत्ति
५६ जयवारण मखड जोत मछया मालप्पी
५७ प्रवापुर गिर उदे भीत ऊजळ करणाळ
५८ पातल भूप प्रमाण सुभि निजरा सभालियो
५९ व्याज प्रसन वरियाम जाजुळी पहली जकडियो
६० सवळा भाथण सोध इळ जळ भौडा ऊवळै
६१ बाज नवीबां हाक घण गाज प्रबागळ
६२ गिरवका बिच राजगढ रचि मढ सहर वा
६३ प्राडी भामळा प्रासखा फूटे सामळा जुतैल प्र रवी
६४ धिकै श्रोध हरसाह जग वटा घर दुरमद पटाधर दोवै
६५ गजब जरग घर वेच दिखणाद दल लाग गढ

डिंगल गीतो का बहुत बडा भाग वीररस मे पाया जाता है। हुकमीचद के गीतो मे भी वीर काव्य धारा प्रक्षुण्ण प्रवाहित हुई है। इनके गीत किसी वातावरण मात्रकी झाकी न दिखा कर सचित्र वातावरण उपस्थित कर देते हैं। श्रोता एव पाठक के सामने एक सजीव दृश्य घूमने लगता है। ऐसा जान पडता है कि नेत्रो के सम्मुख युद्ध लडा जा रहा है। श्रोता के हृदय मे वीरता हिलोरे मारने लगती है। भुजाएँ फडक उठती हैं और मस्तिष्क उत्साहमय वातावरण का अनुभव करता है।

वीरगीतों मे हुकमीचद के गीत बडे सतोले और टकसाली गीत हैं। एक ही प्रसग पर कवि के एक से अधिक गीत प्राप्त हैं फिर भी उनमे पारस्परिक भाव-साम्य होते हुए भी शाब्दिक पुनरावृत्ति नहीं मिलती है। यह कवि की रचना प्रतिमा और शब्द कोष एव प्रवीणता का

द्योतक ही कहा जा सकता है। कवि ने अपने गीत नायकों की उत्कृष्टता प्रकट करने के लिए रामायण, महाभारत और पुराण प्रसिद्ध श्रेष्ठ वीरों को उपमाओं के लिए चुना हैं। अपने समग्र गीतों में कहीं भी हीन उपमाएं नहीं दी हैं। कवि वीर रस का सिद्ध कवि होने के अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र और तान्त्रिक विद्या एवं आध्यात्म विद्या का भी पूर्ण ज्ञाता था और यही कारण है कि इनके गीत देश काल की सीमा रेखा का उल्लंघन कर चतुर्दिक ख्याति अर्जित कर सके। डिंगल काव्य-पारखियों ने इनके वीर गीतों को गरुड़ शावक की संज्ञा से विभूषित कर सम्मान प्रकट किया है—

घडिये रा आखर घणा, रूपक राढ़ि गीत।
हुकमीचंद रा ढालिया, गुरड बचां जिम गीत॥

भाषा भाव और शब्द चयन आदि में इनके गीत विरल हैं। अन्य डिंगल गीत रचयिताओं के गीत सुन्दर होते हुए भी इनकी समता करने में सहजता से सफल नहीं हो पाते। हुकमीचन्द के परवर्ती अनेक प्रसिद्ध कवियों में महादान मेहड़ू के गीत भी अत्यन्त सुन्दर बन पड़े हैं। किन्तु कवि-समाज ने दोनों के गीतों का अन्तर दर्शाते हुए लिखा है—

हेरवा गीत हुकमीचन्द कहिया, पेरवां गीत महादान फेंकें।

महादान के गीत कवियों की चर्चा के विषय रहे, पर हुकमीचन्द के गीतों की तुलना में वे यों ही फेंके हुए व्यक्त किये गये हैं। और यही नहीं, हुकमीचन्द के बाद कविया करणीदान महादान, बखता खिड़िया, बांकीदास आशिया और महाकवि सूर्यमल जैसी प्रकाण्ड प्रतिभाओं की विद्यमानता में भी किसी आलोचक काव्य हृदय के मुख से निकल पड़ा—

'गीत गीत हुकमीचन्द कहगो हमैं गीतड़ी गावा'

इस प्रकार मध्यकाल के कवि समाज में हुकमीचन्द के गीतों की शीर्षस्थ गणना हुई है। कवि हुकमीचन्द] के देहावसान पर रतनसिंह बारहठ रचित एक शोक गीत प्राप्त हुआ है जिसमें हुकमीचन्द के समसामयिक चारण जाति के अन्य विशिष्ट नर रत्नों का स्मरण करते हुए उनकी विशिष्टताओं को प्रकाशित किया है। कवि की रचना के प्रति कवि समाज की आदर भावना और मान्यताओं के प्रकटीकरण के लिए उक्त गीत प्रस्तुत किया जा रहा है—

सागर सिद्ध कवेसर हुकमो, नृपत महेस हरो बुधवान।
चार पदारथ आछा चारण, उरा लिया पाछा भगवान॥ १
कवियो सत खिड़ियो महडू, कवि, गिणता आदो करण सिमार।
दूजो रतन अनमोल दीधा किसा गुनह लीधा करतार॥ २
आं बिन करण रहणियो ऊणो जिण विध सुकव विहूणो जीव।
पातां प्रीत करे त पोस्या, देयर कोस्या भला दईव॥ ३
आसग धरम रोड़ता जद ग्रे, हुव नप नरम जोड़ता हाथ।
हरि अव वरण मसकत्यां हिलसी, पूण मही भिळसी कवि पात॥ ४

उपर्युक्त उद्धरणों से डिंगल कवि समाज में हुकमीचन्द का स्थान निश्चित हो जाता है।

हुकमीचन्द ने अपने गीतो को सरस बनाने के लिए कल्पना का पर्याप्त प्रश्रय लिया है। पर उनमें राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास संस्कृति, कला और अभिप्रेत वातावरण के अकुर सरलता से समाहित हैं। डिंगल काव्य शास्त्र की मान्यतानुसार डिंगल गीत १२० प्रकार के हैं, जिनमे भाव अभिव्यक्तिकरण के विभिन्न नियम स्वीकार किये गए हैं। हुकमीचन्द ने भी अपने गीतो में रचना प्रणाली के न्यूनाधिक रूप से सभी तरीकों को अपनाया है। कतिपय गीतों में तो एक ही भाव प्रकारान्तर से गु जित रहा है, पर शब्द प्रत्येक दुहाले मे नवीन आवरण ओढ़ कर प्रयुक्त हुए है। इसस श्रोता तथा पाठक का आकर्षण उत्तरोत्तर बढता चला है।

काव्य शास्त्र की भाँति ही डिंगल का अलंकार विधान भी अपना अलग ही है। अनुप्रासादि शब्दालकारो के प्रयोग तो डिंगल म अनायास ही पाये जाते हैं। डिंगल की अपनी विशेषताओं में वयण सगाई—वण मैत्री—अपनी विशिष्ट धरोहर है। हुकमीचन्द के गीतो मे यह अलकार अपने सभी स्वरूपो म उपलब्ध होता है। इसी प्रकार रीति शास्त्र के आचार्यों द्वारा स्वीकृत जथाओं के विभिन्न प्रकारों का भी कवि के गीतों में सुन्दर प्रयोग परिलक्षित होता है। कवि हुकमीचन्द डिंगल गीत काव्य के लब्धप्रतिष्ठित कवि थे। उनके गीतो मे वीर रस की अजस्र धारा के साथ ही पृथ्वी प्रेम, स्वातन्त्र्य प्रेम स्वामी धर्म, सती धर्म, शरणागत रक्षा, कर्तव्य पालन, परोपकार महिमा, भक्ति महत्व, दानादि मानव के महत्तम गुणो का भी सम्यक् वर्णन हुआ है। निवेदन के प्रमाण के लिए संक्षिप्त उदाहरण अवलोक्य है—

शरणागत रक्षा—

> किनम उतराध दिखणाद दळ मोधता, छत्रधरण रोधता माण छीजा।
> यह खुनी सबळ साल राख कवण वीर तो बिन रायसाल बीजा॥

शरणागत की रक्षा राजपूत का अभिन्न धर्म रहा है। राजस्थानी वीरो ने इस कर्तव्य का पालन सहस्रो बार अपने जीवन की आहुति दे कर किया है।

धरती प्रेम—

राजस्थानी संस्कृति मे भूमि को वीरो की भोग्या माना है और इसलिए 'वसुधा वीरां री वधू, वीर तिका ही वींद' का सगर्व घोष किया है। इसी स्वरूप को सामने रख कर कहा है—

> खाटी बखतेस भूप भोम जिका पाँण खाग, खागाँ पाँण जकी भोम दाटी जैतखभ।
> धावा धाँण घेतलातू बाजता विरोधी घाटी, अजा दूजा वीर पाटी साझना अमभ॥

वीरपति के रहते उसकी पत्नि को कौन अपमानित कर सकता है ? और पृथ्वीपति की विद्यमानता में उसे अन्य कैसे भोग सकता है ? इसी भाव को पढ़िये—

पमस पाजि नाळा गरा घदावै ग्राम रा, घरथ विय गोम रा नजर माव ।
थोर निन परावे सपो श्याणित यगा, जमा ज्या गू रगा वेमि जाचे ॥

तरुण नायिका रूपी पृथ्वी को तरुण कान्त रूपी नरेश ही विकसित कर सकता है। महाराजा 'माधवसिंह जयपुर पर कवित गीत का द्वाला यों है—

रजे सप दुण्डिद रामचन्द्र सा, गजे नोबत निहग नाद सिन्धू माज सा।
सची इन्द जेम विससंत मुग माज सा, महो मुगधा तरुण पत महाराज सा ॥

स्वामी भक्ति राजस्थानी चरित्र का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। अपने स्वामी के राज्य-सरक्षण के लिए जीवन की बाजी लगाना राजस्थान के लिए सामान्य घटना रही है। स्वामी भक्त सामन्त 'ऊभा धणी' स्वामी की भूमि का दलित किया जाना कैसे सहन कर सकता है? कवि के शब्दों में वर्णन है—

जूझ मरो साहसी किसोरवाळो तीन जाम, रचो भीमनाद कीन दळा सूरो रण।
दळा जोधागेसवाळो नू पर्य जालमो ऊभो, जालमो पाडिया पछे ऊपपे जोधारा ॥

काव्य मे चमत्कार-प्रदर्शन का मूल साधन अलंकारों को माना है। अलंकारो से रचना मे उक्ति वैचित्र्य आ जाता है। डिंगल कवियों ने अपने प्रिय अलंकार वयण सगाई के अतिरिक्त हिन्दी के विभिन्न अलंकारों का प्रयोग कर अपनी रचनाओं को मनोरंजक एवं रोचक बनाया है। हमारे कवि हुकमीचंद के गीतो मे उपमा रूपक, उत्प्रेक्षा और अनुप्रासादि काव्य-शास्त्र के बहुविध अलंकारो के स्वाभाविक प्रयोग पाये जाते हैं।

युद्ध-वर्णन मे कवि हुकमीचन्द ने अपनी मौलिक सूझ को दर्शाया है। वैसे संस्कृत के मूर्धन्य कवि कालिदास, बाणभट्ट आदि की युद्ध वर्णन-शैली की जानकारी कवि को रही है, ऐसा भासित होता है। युद्धार्थ सेना के प्रस्थान करते समय घोड़ा की पद-टापो से उठी हुई रज राशि से आकाश का आच्छन्न हो जाना आदि का रघुवंश, कादम्बरी आदि काव्यो में वर्णन मिलता है, फिर यदि इसी परम्परा को विकसित करते हुए हुकमीचन्द ने अपनी रचनाओ मे युद्ध क्रीडा देखने के लिए सूर्य का रथ ठहरवा दिया और शेषनाग का फन एव कूर्म की पीठ कसमसवा दी तो अनुचित क्या किया। अपने वर्णन को सजीव बनाने के लिए कवियो को कल्पना के सहारे छलांगें लगाने का अधिकार तो रहा ही है। तब फिर किसी की उत्कृष्ट कल्पना को अतिशयोक्ति के हथौड़े से छिन्न विछिन्न करना क्या उचित कहा जायेगा?

हुकमीचन्द के गीतो मे तत्कालीन राजस्थान की युद्ध-संस्कृति के उपकरण शस्त्रों के नाम, उनके प्रयोग, अश्वो और गजराजों की पाखरें, जूनें योद्धाओं की युद्ध-पोशाकें, बाने आदि का अति अनूठा वर्णन पाया जाता है। आगे की पंक्तियो मे कवि के गीत उद्धृत कर उनके काव्य-रसास्वादन का प्रसंग उपस्थित किया जा रहा है।

सीकर संस्थान के अधिपति राव देवीसिंह शेखावत और शाही सेनापति मुतजाअली के मध्य श्यामजी की खाटू नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ था। शेखावत योद्धाओ की मार से शाही सेनापति

मुरतजाअली भडच भयभीत हो कर युद्ध-मैदान छोड भागा। इसी घटना को कवि के शब्दों मे पढ़िये—

गीत

ताळी खूटके विहगा मार्गा बाज लाग अच्चताळी,
पनगा फूटके कपोळा गजव्वा पडेव।
बरम्मा सूटके बध छूटके कोमडा बाग,
सूटके सेखाणी देवो कुराणी भडेच ॥ १

वीर हाव डाक पडी डमरू कराळ वागा,
रोखगी कराळ वागा नेजा भाळ रूप।
वागा लाळ ओणी गजा गीधा चा पखाळ वागा,
रूवा नराताळ वागा प्रळैकाळ रूप ॥ २

मत्तो झूक लत्थोवत्था धारां धोम धोम मचै,
धीर बाज खचे बोम नच्चे रुद्र धाड।
घायसल्ला होदा व्हे छडाळा हूर बीर घूमे,
रायसल्ला रोदा व्हे हमल्ला हल्ला राड ॥ ३

चण्ड हाक वाणी व्है सीसाणी वाल्हाखाणी चले
घमन्ता उभळे गाळा गजाणी धडाक।
कुहासूरा भणी-पाणी ऊबाणी बाणासा मेळे,
लोहघाणी चडा बीच सेखाणी लडाक ॥ ४

समे रगे मत्थे तेग तावा पब्ब वब्ब तूटे,
काण भावा वमे बोम भमकाळ क्रोध।
चदवाळो डाणे लागो नेजा धमे मेछा चम्रू,
ज्वाळ दाडी रमे जाणे इन्द्रवाळो जोध ॥ ५

रीझ रीझ हूरा वरा वारवा रमाडे रगा,
जोगणी खलाडे जगा जमाडे सजूथ।
तेग झाड लागो घोडे धाडे खळा झाड़े तू ही,
बिभाडे विधू से पाड़े पठाणा वरूथ ॥ ६

खळाबोळ घडी भाठ झडी खाडाहळा झाट,
आकास हू पडी जाणे बीजळा असाढ़।
लोहा खासबाड वाढ़ तुरत्ता दिली नूं तेगो,
चोडे धाडे मुरतजाअली नू धके चाढ़ ॥ ७

गीत मे लाटानुप्रास की छटा तो भरी पडी है। किन्तु 'ताली' और 'बागा' शब्दो मे यमक का प्रयोग भी अति सुन्दर हुआ है। इसी प्रकार महाराजा राजसिंह पर कथित गीत के पाचवें दोहाले मे प्रयुक्त 'कमला' शब्द मे यमक देखिये—

सूरू घन पराक्रम त्रिय क्रमसा सणी,
धर्मीवर कुसम कमला सणा कूठ।
सोम डागां सणो गीरवाणां सणी,
वीर चढि विमाणां गयो वैकूंठ ॥

महाराजा माधवसिंहजी प्रथम जयपुर का 'सिंह आखेट' सम्बन्धी एक गीत उपलब्ध हुआ है। गीत में सिंहों की जातियां, आकृति शिकारियों के क्रिया-कलाप और सिंहों की क्रियाएं आदि का कवि ने ओजस्वी चित्रण किया है। बीच-बीच में उल्लेख अलंकार के नगीने भी बड़ी कुशलता से जड़े गये हैं। गीत का उदाहरण प्रस्तुत है—

हूले हाथळो जोर मावूना घटा ज्यू पारसा हुक्के, भभक्के सोरसा सूंला ऊठता मयद ।
तज जव्य दूता रूप भूप माधवेस तू ही, महावीर आकास्थं विरूपा मयद ॥१
थाट थका राह रा गिरदां धासाहूंग घेरे, थाट उछाहरां सें वाहरा हेरे थेट ।
जाहरां जिहांन जोध भडे तू जैसिंघ जाया, सिजायां नाहरां हूत अखाडा आखेट ॥२
सिंधू राग बाजे तूर तब्बलां अहारां साजे, पनागा समाजा साज भाजे भीत पाय ।
छछाहा लागूळ माथा दिव्वता जचासा छाज वीर नहा बाजें गाजें वध्य सा बलाय ॥३
पड़े भ्रद्र झटा सू पाखिया पमंगस पाणं, वाम साणे जटा सू नाखी जाणे वीर ।
भीमनखी वाखिया बुलाडे तू धाखिया भूप क्रोध रूप रातालिया डाखियाकठीर ॥४
जोधा जगी साजा जोम झालिया अनेवां जूटे, बिलमी करोला कूक फूटे वोम वाण ।
छाह साथे श्रीहथा हूं वढ़ूंवा नढक्के छूटे ज्वाळ रा पहाडा माथे तूटें वीज जाण ॥५
झाळा वध्य हाथला हूं झडा झूम झूम झले, धासाहूडे पडे के धूम धूम धावा घेर ।
बाजूपरी चाकाळिया बघेर बपड़ा बेरी सोने री पटेत सीह बावरेस सेर ॥६
श्राध भागा हूं उडता मगा आसमान अडे केही, जमडाढा जडे केही जमदाढा जोम
कुंजरा कपोला लाग आग झाला झडे केही, भीमडा रड केही पवे केही भोम ॥७
खग भ्रद्र अयोका के उतगा ठाहरा खड दुगमी साहरा पड ओका देस देस ।
कोमखी थाहरा तोका नितोका त्रिलोका कहे, नाहरा पछाड झोका क्रूरम्मा नरेस ॥८
आवेरा लेरीण यभ आसमान ऊताळियो बोळियो गनीमा थान लंकाला विरूप ।
प्रथीनाथ माधवेस महासूरा पखा पूरा, भूरा चहू बाता तिको चहू जुगा भूप ॥९

महाराजा बहादुरसिंहजी किशनगढ अपने समय के विवेकशील राजनीतिज्ञ और बहादुर नरेश हुए हैं। उन्होंने किशनगढ रियासत को आर्थिक, सामरिक और सुरक्षा की दृष्टि से आगे बढ़ाया और किशनगढ, रूपनगढ और अराई के किला का निर्माण किया। वे स्वयं भी डिंगल के उच्च कोटि के कवि थे। हुकमीचन्दजी का इनके पिता राजसिंजी और इनसे भी अच्छा सम्पर्क रहा था। किशनगढ दुर्ग के निर्माण पर हुकमीचन्द ने एक गीत बनाया था, जिसमें किले का अच्छा वर्णन किया है। नव दोहलें के इस गीत में यमकालंकार भी अवलोकिये—

गीत

थभे पाथोध परखा सीम नीम जे पयाल थंडे, भुमडे भुरज्जा जाल पब्बैमाळ भात्र ।
छत्रब्रह्मा ताव तेज जलो जे देखतां छेड, राहा बिहू बीच मडे किलो मारू राव ॥१
उत्तगा सफीलो घेर ग्रासेर पै ग्रचाल सो, उदे चन्द्रमाल सो कला सुमेर ग्रग ।
बिखमी सतारानाथ साल सो बणायो बका, दलानाथ दिली ग्राडो ढाल सो दुरग ॥२
कावी वाल माल तापा रग दीपमालाका सी, प्यालरा ले कराल काळका सी श्रोण पीध ।
धननजे ज्यू सरज्जाळ बुरज्जाळ घड पुरै, क्रोधगी लक्ताळ भू रे गुरज्जाळ क्राघ ॥३
लोह लाठ जेतथभ गिरदां गडा चो लाडो, दला लाखा माण गाडो बोल छोले दीह ।
जाजुली बीराणा माडा विसम्मो पडता जाडा, ग्राडो नवाकोटा कोट दसम्मो प्रबीह ॥४
रद्र भेम गाजा बीर बेछाड बहादरेस, फेंट हू जिहाज फोजा नेजा गजा फाड ।
पाळिया नरिन्दा निज सालियो सीमाड पहा, पारभियो किलो के जलानिग्रो पहाड ॥५
जगी हावा होता दग ग्रराबा हजारा जेण, तेण हू हजारा लगे हैजमा तुसम्म ।
नोखा तीरबारा हूँ हजारा भार खचे नथी, वदम्मा हजारा हुँता हजारा कुसम्म ॥६
कोस ऊभे घेरे ग्रोप ग्रद्रा धू ग्राटोप कीधा जत्र चोप चडी मडी कोप जग ।
साहसीक वीर हरे कठा दीठ कर सके, बको बीर घेर सके छिबन्तो निहग ॥७
है घटा हुमल्ला बाज बीर डाक हल्ला होत हल्यां तेग भल्ला व्है दूमाग्ग सल्लाहोक ।
नरा जोध पखिसखा ग्रावे जीवरखा नेडा, नावे जीवरखा जीवरखा हू नजदीक ॥८
बको घाट बराट सो देखत। सतारो बीघो, रीघा दलीनाथ दीधो हिन्दूवाण रग ।
बीजे गजवसी मड बेहरीन कीधो जीजो, देवग्रसी कीधो भूप केहरी दुरग ॥९

जयपुर राज वंश में महाराजा प्रतापसिंहजी विद्वान कवि और अनन्य कला-प्रेमी राजा हुए हैं। हुकमीचन्दजी ने महाराजा के युद्ध ग्राखेटो तथा हाथियो की लडाइयो पर गीत, निशानिया और दोहे रचे थ । गीतो मे हाथियो की लडाई के गीत का उदाहरण दिया जा रहा है । १

गीत

दत्ता ताल्रीसा खूटिया ग्रम्रधारा सा छूटिया डाणा मत्तारोस तारा सा तूटिया गैण माग ।
ग्राहुडता घोडे पव्व काला नथी ग्राहुटिया पत्ता खत्रधारी वाला जूटिया पिनाग ॥१
जोम E धीयागा सागा सूडाडड उछाजंता, बोम हूँ बिलागा विहू गाजता बाबाड ।
पटासा रूह जागा नीर मदासा बहता पटा, गडा जूहं बागा बीरभद्र सा बेछाड ॥२
व्है रदा रघाका भेडा भचाका ग्रसुडा हू त, पैवेंडा मचाका हुँता लचक्क पयाल ।
ग्रनम्मी ग्रोनाड जम्मी ढूढाड नरेस वाला, दुगमी पहाडवाला भूटके दताल ॥३
दूठता दुधारा दाव रहा व्है करहा दोहू, ऊठता लोयणा चढ़ मारा भीम भाग ।
घेछगी ग्रकारा रोस रूटता निघात बाणा, बेडीगारा महा धारा बून्ना बजाग ॥४

भम्मे माह लगरा दीठा भादवल्ले भाला, भगु डा उनीठा घल्ने चरखिया भाए।
मतगा मफर पीठा मजीठा रहता माता, भाकागीठा महागीठा गरीठा भाराण ॥५
मैं हल्ला गजदा नरातासासा मपटा भरे, हद्दां नाग बाना सा लपेटा भरे हाथ।
घला भाला सातो तेज तुटा बेग्र तारा घोड़े, मद्रजातो जुटा भूप घला रा भाराथ ॥६
कोप मगा जगा राह ऋतसा विछूटा बना, पतंगा पूत सा छूटा प्याला हाला पाय।
घेडा जाडी जोड़ जमदूत सा करासा बाणा सजनाला तोड़ काला भूत सा बसाय ॥७
घरखी हजारां हाथ भाला दावदारा घल, सहता सबल्ने मारा विछूटा सतग।
बापूकारा बोल फोजदारां नीठ याग्रा, महाजगां जैतवारा समारा मतग ॥८

कवि ने जिसप्रकार सिवार, गजराजो की लडाइया विलो भौर युद्धा पर भनेक गीत रचे हैं, उसी प्रकार तलवारें भौर भालादि शस्त्रो को भाधार बना कर भी सुदर रचनाए की है। मसून्द के धणी राव बाघसिंहजी क भाले की करामात सन्देहालकार म कवि के कौशल को परखिये—

गीत

इखु पाथरो क वज्र सुरानाथ रो मळूळ भोप सेल रुद्र हाथरो क जग्न मूल सार।
धूरम्बी छै माथरो क कोल छी दाथरो घाव, धूरम्बी भारथ रो क बाथरो चोधार ॥ १
साप मारतडरो क घडरा समत्र प्रथां हूह भख्ड खण्डरो क हाथ-भाथ हूत।
मसूल भामण्डरो क भलारा चकू रा तेज कालु रो प्रचडरो क भागभाल कूत ॥ २
बलं पचसीसरो क सीसरो सिवनत्र भाषा, डाच विहगेसरो क भतकाम डड।
सर बहान कीसरो क धवी मारात सेना, मला रा भधीसरो क बीर नाथ मड ॥ ३
जैतमालहरा हूत जूटवो जवार जुधा, केवियां चो लूटवो क बिना मीच काल।
हूहरो भदगरो क छूटवो हाकिये हेले छाकिये कमधरो क छूटवो छडाल ॥ ४

खेतडी के राजा भोपालसिंहजी विमनसिहोत बड़े दातार भौर उदार प्रवृति के व्यक्ति थे। कविवर हुकमचन्द के गीतो से ज्ञात होता है कि व भपने पिता की भांति ही कवियो का भादर-सम्मान करने मे भग्रणी थे। उनके एक गीत मे उत्प्रेक्षा का उदाहरण इस प्रकार है—

गीत

सिधां भपारा नागेसहारा पारावारा खीर सिंध, धीर तेज धारा धाम उधारा धूपाल।
तारकी भाकासचारा मोड ज्यू राकेस तारा भूगोल दातारा सारा सेखाणी भूपाल ॥ १
जटी जोम पारावारा धावा सुभ्रजटी जाणै, गैणवटी ताचा ऊच सुभावा गोवद।
चिलार पुलिन्द्र धावां चन्द्र ज्यू नखत्रा चावां, नरालोक दावै रूप विसप्रेस नद ॥ २
ईस धू रती रा धाम मीरा तातरमा भोप, सूर तेजमीरा सत मीरा दैत साल।
धलीपस खगा सुधा सीरां ज्यू मुनेन्द्र धीरां, महा भासतीक वीरा दूजो रायमाल ॥ ३

चन्द्र भाल 'पै उलाल वरस्साल तेज चड, गोपाल नागेंद्र भाल सुधागज गेर।
प्रथीपाल पचेमेक दातार ज्यू उजग्ल प्रथो, सोहियो भूपाल माला दातारां सुमेर ॥ ४

महाराजा माधवसिंहजी जयपुर और महाराजा जवाहरमलजी भरतपुर के मावडा-मडोली (तवरावाटी) के ऐतिहासिक युद्ध से सम्बद्ध एक गीत मिला है। गीत मे महाराजा माधव सिंहजी के पराक्रम का अतुलनीय वर्णन किया है। महाराजा माधवसिंहजी को हनुमान, अगस्त्य और शेषनाग की भाँति प्रतापी वर्णित कर जवाहरमलजी से लडने वाला एक मात्र समर्थ वीर घोषित किया है। गीत अवलोक्य है—

गयण अप्रोखे हणू द्रोण गिरद, समद जल न धोखे मुनिन्द्र सोखे।
नागइन्द्र सराखे खगिन्द्र माधव नरिन्द्र, जवाहिर ब्रजिन्द्र जुंध तुहिज जोखे ॥ १

राजनग वीर वाहे विकट गह नू, दध अंयग थान नू अगथ दाहे।
नवेकुल नाह नू नीठाह ग्रहण नभ, ग्रहण पतसाह नू महण गाहे ॥ २

उकासण मनड अजेवण अग उमाहे, महासिंध समाहे मुनिन्द्र मुहडै।
अहिसिली मोड पन्नाथ रणधरण अत्र, दिला छत्र तोड मत्र तु हिज दुहडै ॥ ३

वात भु भ वसप जैसाह नद महाबल, महिन्द्र सामन्द्र व्रजन्द्र दल मीच।
निर्मथियो अखडलनाथ पचम नवो, वीर खल खडल वसुधा मडल वीच ॥

विधानिक जथा के उदाहरण के लिए राजराणा राघवदासजी झाला देलवाडा की तलवार पर कहा गया गीत द्रष्टव्य है—

ज्वाला जेठ री जेहडी जगी बीज मघमाला जाणे भीम भाला वेहडी कराल नेणभास।
चड धू वेहडी कना उडडा असूल चडी, वीर गावोदास हाथा अहडी वाणास ॥१

फू का सेस तायवाली पवै अलंकार फूटी, वारधीस लायवाली तूटी झालवेग।
जभीरोस रूप जाग आदीत रसम्मा जाणे, तुझ करा जसारा अजागरूप तेग ॥ २

तायणी भीमेगगदा गजेन्द्र गूडला तोड, पवै वज्र-सोड इला नाकपती पाण।
कला दोज चद मान सिघ मला भला कीत, किना तो सग्राम बीजा भूझला केवाण ॥ ३

जाजुली कुठार राम रूठे भायजादा जाग, भरा सीस खायजादा जगी भाक ऊक।
हिंदूपति चायजादा साले सायजादा हिये राघो रायजादा वाली तायजादा रूक ॥ ४

सखाबीज ईस चडी फूक लाय जोत सार, वच्च इला कला क्रात फरस्सी वूवार।
खला धू तोडवा खेन खाग तो खापडू, खूटे, हेवे साय छुटे जाणे हवाई हजार ॥ ५

महारावल पृथ्वीसिंहजी बाँसवाडा और मरहठा सेना मे हुए युद्ध का गीत बडा अनूठा है। गीत पढिये—

छोला ऊपटे रतगा जाणे पतंगा फुहारा छूट, तागा गैण मगा तूटे उमगो त्रमीग।
तेग धारा तणा कै अभंगा माथे भौरा तूटै, सतारा सेन मू जगा जूट प्रथीसीग ॥ १

सळवर्ण नगीस थभा भूमोल ममावळेस, चौल रभा ओढ़के ऊतावळेस वीर।
बागा बांवळेस जागी जोधा भावळेस वागा, बांवळेस हूत सागां रावळेस बीर ॥ २
लोहाला गनीमां सू ताणे मूछां डाणे लागो, वेवाणे ऊवाणे बागो बीयो भीमक्रोध।
धांमळे रावसा पांणे हणुमान लव ऊमो, जग्मळे भारथा जाणे गुडाकेस जोध ॥ ३
महाप्रळे काळ रुद्र मच्छ ज्यू मचोलं मही, नोखगो भरि द्रावाळे तोले सिंध नीर।
धू गजा छजोलं तोले मानमान थको धारा, हैजम्मा बिरोळे यको दूसरो हमीर ॥४

रावराजा उम्मेदसिंह हाडा बूंदी और जयपुर के महाराजा ईश्वरीसिंह के मध्य लड़े गए युद्ध पर कवि के दो गीत प्राप्त हुए हैं। एक गीत मे उम्मेदसिंह को सिंह और ईश्वरीसिंह को हाथी बता कर सुन्दर रूपक चित्रित किया है।

तोड़ सेरवा नमीठ खाणां भागा भाखारीठ तत,
भागा पीठ फेरता गरीठ फौजा भेद।
सीधळी अघाया जुधा आयो ढूंढाहड़ो सामो,
मनडा ठेलतो भडा गयदा ऊमेद ॥ १
कोमंडे धमीस कीधा मूडडे अमागो कूंत,
ओमडे गैं थडे तडे चामडे ओवास।
आयो जाडो लास डडे भेलतो अक्षूनी अणी,
हाडो राव आडे थडे ठेलतो होवास ॥ २
उमगा धारियां भगा निहगा तोलतो आच,
रोलतो निखगा गजा कीधा चोल रंग।
धापडे डाखियो सीह ढोहतो मतगा चगा,
धमगा ढाहता जगा माहुता पतग ॥ ३
हेलतो अखेला खेल भैलतो बाहतो खगा
आण भू रेलतो भुजा उलालिय सेल।
जूजवेरा पैलती अरेग भडा तेग्रा जूथ
ठेलतो आबरा मेघाडबरा अठेल ॥ ४
वेवाणा ऊंनागा बागा झालिया डाकते काळी
गाजे छोह छाकते पनागा भडा गाज।
राडीमारो बीर अगी बुधा री अणमी राव,
सूरो जगी होदा गयो चगी घर्रा भाज ॥ ५
बाजता काहूळा आगी गाजता अराबा वोप,
पीठ फेर भाजता ढूंढाड़ा छोडे पाव।
धगी सेन डोह पाव रगी ठेलि खेत चोडै,
रगी तेग जीति ऊभो आप रगी राव ॥ ६

राजा उम्मेदसिंह शाहपुरा पर कथित बडा गीत तो अति प्रसिद्ध ही है। उम्मेदसिंहजी की वीरतासूचक एक निशानी और दूसरे गीत भी अति ओजस्वी हैं। महाराजा ईश्वरीसिंह के विरुद्ध लडे गए युद्ध पर लिखित गीत मे तलवार-प्रशंसा अवलोकनीय है—

झाळां वूठनी कराळी तापां वाहतो अकाळी झाट, तेणहू-कपाळी खुले आम्हा ताडीस ।
वका 'भूप ' ईसरेस ' काळीनाग ' सीसबागी, परा 'विहंगेसवाळी तुहाळी पाडीस ।। १

जागी फुतकारा बाज पताखा चालता जेहा, अठगी अरेहा काज भाळता ऊपेग ।
महाजंग पडी जाणे जैसा रा ऊरेग माथे, तुहाळी भाराथ वाळा वज्रभास तेग ।। २

मत्ता जूभहळी भोम सेहा घू आयास मली, आकुळे वदल्ली पीठ कोम भार ऊक ।
जोरावार खूनीनाग असरजी 'वीराध जोण, चल्ली राजपत्री ढाण वाराास मचूक ।।३

भामी तुर्क हथा झोका ऊमेद आहसी भूप, भडाके समठा वालकीट माय ।
नारीजा लसेस मा घुरबी ईसाणनाग माण तवी हाय पठा बाबी कोट माय ।। ४

इस प्रकार हुकमीचद के सभी गीत एक से एक बढ कर हैं। एक अन्य गीत मे युद्ध दृश्य का चित्र देखिये—

> चोचट्टा घूमट्टा सुभट्टा व्हे लट्टा चट्टा,
> आछट्टा बिचट्टा भट्टा पाछटा केवाण ।
> खेंगा ओरभे गैघट्टा मे उलट्टा पलट्टा खेले,
> छोहे जट्टाजूट घट्टा छूट्टा भट्टा डाण ।।

कवि का समय घोर अशांति और युद्धो का काल था। आये दिन युद्ध के डंके बजते थे। युद्ध में भाग लेना वीर का परमकर्त्तव्य होता है। वह अपने प्राणो की आहुति देकर भी वीर धर्म का पालन करता है। उसका आदर्श रणविजय या रणमरण ही निश्चित होता है। ऐसे काल मे जागृत कवि का जो कर्त्तव्य होना चाहिए वही कर्त्तव्य कवि हुकमीचदजी ने वीर योद्धाओ मे उत्साह का सचार कर पूरा किया है। कवि अपने कर्त्तव्य काव्य और उद्देश्य मे सफल रहा है।



कवि आसकरण और सोभाचंद



राजस्थानी साहित्य के निर्माण मे चारण, राव, राजपूत, मोतीसर, जैन और ब्राह्मण सभी जातियो के व्यक्तियो का योगदान रहा है। ब्राह्मण कवियो मे भाडउ व्यास पद्मनाभ, दामो, जीवणदास करला, भवानीदास व्यास आदि कवि विद्वान् प्रसिद्ध है। राजस्थानी के ब्राह्मण कवियों मे अद्यावधि अज्ञात आसकरण पुरोहित और सोभाचद पुरोहित महत्वपूर्ण कवि हैं। ये दोनो ही कवि ब्राह्मण जाति के पुरोहित गोत्र के थे। पुरोहितो का राजपूतो के यहा कुलगुरु के रूप मे सम्मान रहा है। यज्ञ, अनुष्ठान विवाह और अन्य सभी प्रकार के मागलिक श्रौतकर्मों के सम्पादन मे पुरोहित की प्रमुख भूमिका रहती है। सधि, विग्रह युद्ध और अन्य राजनयिक कार्यों मे भी पुरोहितो का अनुपेक्षणीय सहयोग राजाओ को मिलने के ख्यातो और इतिहासो मे उल्लेख पाये जाते हैं। विवाह, वाग्दान आदि काय तो लगभग राजा, जागीरदारो के पुरोहित की मत्रणा पर ही निश्चित माने जाते थे। इसलिये कुलगुरु के अतिरिक्त पुरोहित को राजस्थान मे 'पूत पीरोत' का सम्बोधन भी मिला। पुरोहित समाज विद्वान् होने के साथ-साथ राजनीति और राजदरबारा के रिवाज आदि का भी पूर्ण ज्ञाता होता था। जोधपुर के शिशु महाराजा-अजितसिंह राठौड के लालन पालन और सुरक्षा में जयदेव पुरोहित तथा उसके परिवार का योगदान अति प्रसिद्ध है। कवि आसकरण और सोभाचद पुरोहित-द्वय भी अपने समय के राज्यमान्य व्यक्ति और साहित्यकार थे।

कवि आसकरण मारवाड के सोजत कस्बे का निवासी था। वह पुष्करणा गोत्र का था। उसके प्रपितामह का नाम मालदेव, पितामह का गोदा और पिता का नाम जयराम पुरोहित था। जयराम महाराज अजितसिंह के बाल्य तथा वयस्क काल का ख्यातिलब्ध व्यक्ति था। महाराजा अजितसिंह ने शैशव काल मे मारवाड पर बादशाह औरगजेब का आधिपत्य हो जाने पर सासणिक और मदिर ब्राह्मणो के ग्राम भी बादशाह ने जब्त कर लिये थे। महाराजा अजितसिंह का अधिकार होने पर जागीदारो, ब्राह्मणो, चारणो और मदिरा का जागीरो के पट्टे पुन दिय गए थे। उदक और माफीदारा को अपनी-अपनी भूमि फिर से प्राप्त करने मे जयराम ने सहयोग दिया था। उसकी साखी म कवि चारण चारण के वशजो को गोघेलाव की भूमि दिलवाने के लिए कथित गीत का एक द्वाळा है—

दीनो सुकव राय चांदण नू, गोघेळाव सरीसो गाम।
तिण आज जानं तुरकाणं, अग सोमू वळसी जैराम॥

जयराम राजनीति में ही प्रभाव नहीं रखता था अपितु वह स्वय युद्धो मे प्रवेश कर शत्रुओ से दो-दो हाथ भी करता था। वह सोजत के स्वामी का अमात्य और सेना नायक भी था। जयराम की युद्ध वीरता पर सोजत के कवि मुकुन्द सेवग द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण गीत यहां अवलोक्य है—

गीत सपखरो

घाते पाखरा तुरगा पीप नीसाणा दीयसो घाव, अडाभीड फौजा लीया आवळा उघाम।
हैवरा रै खुरा हूत डूगरा पाधरा होवै, जोर तजै मिळो कत अवीयो जैराम ॥१॥

तुरग भीडिया तण सुचगा वडाळे तोल, बहादरां वेलीया सचळां साथ बल।
घरहरा त्रिया कहै प्रोहित नू जाय वदो, खैर घरा जावो काय नही हासाखेल ॥२॥

सोभत रै धणी तणै वजीरा अखाडसिद्ध, सकज्जो प्रोहित भुज साहस री साठ।
कामणी खळा री कहै आपरी जो राखो खळा, गोद रा सुतन हुता मती राखो गाढ।
पार पखै दळा हूत पूजै कूण कीया पाण, लसकरा लवा जराम भुजै लाज।
केवीया री नार कहै माहरा हूत मिळो मरो काय आई विना राखो आप माज ॥४॥

इसी वीर पिता का पुत्र कवि आसकरण पुरोहित था। वह छद और काव्य का सुपठित विद्वान् था। इतिहास का ज्ञाता तथा परमेश्वर का परम भक्त था। महाराजा अभयसिंह राठौड, जोधपुर के दरबार मे उसकी सम्मननाय बैठक थी। महाराजा अजितसिंह के स० १७६३ वि० म जोधपुर पर अधिकार होने पर उसने महाराजा अजितसिंह पर काई ८ सोरठ लिखकर तत्कालीन राष्ट्रभक्ति का गायन किया। यथा—

झालर री झणकार, जगम अज जमाविया।
हुरमावाळा हार, मन बीभळी महीपती ॥
रजधारी रजपूत, अजमल असुर अहारिया।
तुरका रा ताबूत, गज कीया गजसिंघ हर ॥

महाराजा अभयसिंह के प्रसिद्ध दरबारी कविराजा करणीदान कविया कविवर आसकरण के मित्र कवियो म थे। करणीदान ने सकडों युद्ध गीतो के अतिरिक्त यहा के राजा अभयसिंह की अहमदाबाद-विजय को लक्ष्य कर 'बिडद सिणगार' तथा 'सूरज प्रकास' काव्यो का प्रणयन किया। आसकरण ने करणीदान के प्रति लिखा है—

धवि ने किसु कहीज कीरत, लाखां मुहि सौभाग लहे।
वहे न करै वडाई वारणी, कविया करणीदान कहे ॥
गीतै गुणै गुणां को गावै, धणा धणी जीह जप धणा।
दिन दिन कळा प्रदीपे दीप, अभतपाल विजपाल तणा ॥
गाहे गिणै न आवै गिणती, सुजस वसै सतरूप सराय।
जोड बीया तिका थित जाव, नाथहरा जस आय न जाय ॥

पढती वेस धरीने पढतैं, सबजा सवज सभाव सधीर।
अवर देम मौरतो थांण, वीसा सो भजरौ वर वीर ॥

भासकरण ने सुदर टकसाली गीत लिखे हैं। महाराजा अमर्यसिंह के जीवनकाल में उनके तथा उनके सामत योद्धाओ द्वारा लडे गए युद्धा पर भासकरण रचित गीत मिले हैं। भासकरण के काव्य का राजस्थानी साहित्य के इतिहास लेखक उचित मूल्यांकन कर सकें, इसी अभिलाषा से यहां उनके कुछ गीतो की सूची दी जा रही है—

१ गीत सोरठो साणौर—अगरा जीत जोतरा जामी भांमी भूपत प्रतगात
२ गीत पणकट सपखरो—करे कसीसां कबाणा बाणा केवाणा केवाण घसे
३ गीत सावझडो—पत राखो पतितां सत सहायक नामक सतो
४ गीत सावझडो—अवनी पत वाराह ऊधारी, सिरजण सबळ राज रो सारी
५ गीत साणोर सोरठो—धर रे मन काम किसन था कायर, सायर लहर तिरण ससार
६ गीत साणोर सोरठो—सुणो भो अरज सीयावर साहिब, विरदे राज गरीब निवाज
७ गीत साणोर प्रस्ताविक—अवर म कवि हरि कहि मन आतम
८ गीत साणोर प्रस्ताविक—अपरा पत आंक किसा कव आक
९ गीत साणौर—मे दोइ बात अवध कथ ईसर, भादा राण भलो कुळ भाण
१० गीत साणोर—फतमल हसत उदे भण फावै, मॅ चतुरग अमग अगाध
११ गीत साणोर—चारणा मे चूक कोई मत काढो सत चित होय सुकहण सुभाव
१२ गीत साणोर—खळ खड विहड किया खित खाधा
१३ गीत साणोर—मघ वाही गाही धड गैवर
१४ गीत साणोर—कल्ला कीरत वर्ण कदे न कोई कभी
१५ गीत साणोर—आहुडे कडै चढ लड तरवारिया
१६ गीत साणोर—गडडनाळ गोळा हुआ ग्रिष बोळा गयण
१७ गीत साणोर—कलम र इलम विलम कांय ना कर
१८ गीत साणोर—कवि ने किसु कहीजै कोरत लाखा मु हि सोभाग लहै
१९ गीत हसमग—ऊच सिर खान बोलीयो ऊची
२० गीत कडखो—कहै कामणी मत सरतत कीजे अमग नेर नाह अमसाह आयौ
२१ गीत साणोर—सूरज केहर नरजि सॅघ माहब सरस,
२२ गीत साणोर—का देती कलम इलम बधती कळा

गीतनायको म महाराजा अमर्यसिंह राठौड जोधपुर करणीदान कविया ईसरदास भादा फतहचन्द हाथीराम व्यास रणछोडदास पुरोहित ठाकुर शेरसिंह मेडतियारिया अमीदास

सिकदार दौला सिक्दार रतनसिंह भंडारी अखेराज पुरोहित के पुत्र और वद्धमान भंडारी आदि के नाम उल्लेखनीय है। गीतों के अतिरिक्त महाराजा अजीतसिंह पर रचित आठ दोहे जगदम्बा का एक कवित और दस दोहे उपलब्ध है। जगदम्बा की स्तुति सम्बन्धी दोहों में योगमाया के प्रताप का वर्णन किया है। देवी विषयक एक दोहा है—

> झळहळे मिलकत झूल मे, जोगण जोग जुगत ।
> महिमा कव केही मुणे सोखण सत्र सगत ॥

गीतनायकों तथा गीत विषयक घटनाओं के समय के अनुसार कवि का सजनकाल सवत १७७५ से स० १८०४ तक स्थिर किया जा सकता है। महाराजा अभयसिंह और गुजरात के प्रान्तमाल सरबुलन्द खान के मध्य हुए अहमदाबाद के युद्ध पर कवि रचित अधिक गीत मिले हैं। कवि के प्राप्त गीतों में अन्तिम गीत स० ८०४ में बीकानेर के महाराजा गजसिंह के समय जोधपुर और बीकानेर के बीच लड़े गए युद्ध में रतनसिंह भंडारी की मृत्यु विषयक है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि १८०४ वि० के तत्काल बाद ही सभवत कवि का निधन हो गया होगा। विषय की दृष्टि से वीरता और ईश्वर-भक्ति कवि का वर्ण्य विषय है।

पुरोहित कुलोत्पन्न द्वितीय कवि सोभाचन्द की राजस्थानी रचनाएं भी उपलब्ध हुई है। गीत-नायकों तथा युद्ध प्रसग वर्णनों से अनुमान लगाया जा सकता है कि सोभाचन्द आसकरण का समकालीन और सभवतया अनुज ही हो। कवि सोभाचन्द रचित गीतों की प्रथम पक्तिया इस प्रकार है—

१ गीत सपखरो—ईडा भाटा अभा रा कामेती इळा उवारँउ
२ गीत साणोर—असल हरा अरिराव वेध कार्छरा ऊपना
३ गीत साणोर—साची बात जगत सराहै
४ गीत सांणोर—सुजस ससार दातार दाखै सकी
५ गीत साणोर—करे हाक बीराण दईवाण कीधी कहर
६ गीत साणोर—सांवत सांवता सिरदार सिधाळो
७ गीत पखाळो—सालम सिरदार उदार सिधाळो, नाहर करवा नामो
८ गीत सांणोर—वाह अभसाह परधान तो ओहवा
९ गीत सावझडो—करग झाल केवाण तुरकाण पर काळरा

सोभाचन्द रचित उपयुक्त गीतों के नायक ठाकुर सुजाणसिंह भाटी, रतनसिंह भंडारी दीपचन्द गोकुलदासोत मेहता, अमीदास सिकदार, दौलजी सिकदार, ठाकुर भीमप्रतापसिंह मोहनदासोत जोध निवासी अमरी, दोलतराम व्यास आदि राज्य मान्य व्यक्ति हैं। गीतों व रचनाकाल के आधार पर कवि का समय सवत् १७८७ से सवत १८०४ निश्चित किया जा सकता है। गीतनायकों के आधार पर यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि कवि जोधपुर क्षेत्र का ही था और सभवत आसकरण का सहोदर ही हो। कवि के काव्य के उदाहरण के

सिए मारवाड के जालौर क्षेत्र में भमरी ठिकाने के ठाकुर भीमराज (भीमसिंह) जोधा पर रचित एक गीत पठनीय हैं। भीमसिंह ने जोधपुर और बीकानेर के बीच श्रावण वदि १३ स० १८०४ मे लडी गई लडाई से सम्बन्धित है। उसमे भीमसिंह के ललाट पर कृपाण का गहरा घाव लगा था। कवि ने उसी का गीत मे वर्णन किया है—

गीत

करे हाक बीराणा दईवाण कीधी महर, गोड रिम लाग भट खेल गिणयौ।
सिव वदन ऊपरा चद ज्यू सोहियो, भीम मुख सामुहे लोह वणियौ ॥१॥

भिडण भाराथ ससमाथ बेहीमणा, थळा बीका दळा प्रजड थोभै।
ससि सकर रै मुगट ज्यू सोभतो, सुत पता सार सहिनाण सोभै ॥२॥

ओरीयौ पवग भणभग मेळे भणी खळा पाड लगा रुधर खळकै।
ओपीयौ जटाधार भमीधर ऊगतो भाणहरि धार री भाव भळकै ॥३॥

पिता रा प्रवाडा ऊजाळे पाटपत, बाप सू सवाई अचल बेटो।
जोरवर जोध जोधा तिलक जाणियौ कवर प्रखियात वड कोध खेटो ॥४॥

आसकरण और सोभाचद पुरोहित के अतिरिक्त जीवणदास बल्ला, सिद्धा ब्राह्मण और बालकिसन भट्ट (ब्राह्मण) भी डिंगल के श्रेष्ठ गीत रचियता हो चुके हैं। जीवणदास और बालकिसन महाराजा अजितसिंह जोधपुर के समसामयिक कवि थे। बालकिसन ने महाराजा अजितसिंह की सांभर विजय पर कहा है—

सर सैभर ऊसर कर सुजडा, मारे घणा दिली चा मीर।
रवदा तणी भोगव राजा, कळ नारी भारी काठीर ॥

यहा डिंगल के दो सर्वथा अज्ञात कवियो की रचनाओ का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है। ऐसे अनेकानेक उच्च कोटि के राजस्थानी कवि आज भी बधेजो, बस्तो की अधेरी कोठरियो मे छिपे पडे हैं।

कविवर वीरभाण रतनू-
नवीन वृत्तान्त



ऐतिहासिक काव्य 'राजरूपक' का रचियता वीरभाण चारणो की रतनू शाखा का कवि था। वह मारवाड के सिवाना भूभाग के ग्राम घडोई का निवासी और जोधपुर के महाराजा अभयसिंह राठौड का आश्रित कवि था। महाराजा अभयसिंह की अहमदाबाद-विजय पर विचरित कविराजा करणीदान कविया के 'सूरजप्रकास' काव्य और कविवर बख्ता खिडिया के 'अहमदाबाद झगडा रा कवित्त' के स्थान पर वीरभाण का 'राजरूपक' काव्य कहीं अधिक ऐतिहासिक महत्त्व का है। वीरभाण ने महाराजा अभयसिंह के सैन्य अभियान पथ मे ठहरने के स्थानो, सामन्तो के नाम पते और तिथियो का प्रमाणिक विवरण इसमे दिया है और ग्रंथ को केवल इतिहास तक ही सीमित न रखकर यथा प्रसग युद्धो का वर्णन, षट-ऋतु वर्णन आदि के द्वारा सरस भी बनाया है। किन्तु 'राजरूपक' अभयसिंह के लिए रचा जाने पर भी उसके पिता महाराजा अजीतसिंह का सम्पूर्ण इतिहास प्रस्तुत करने मे सक्षम है। अजितसिंह का जन्म, दुर्गादास, सोनग, तेजसिंह, मोहकमसिंह, अर्जुनसिंह प्रभृति राठौड वीरो के युद्ध, अजितसिंह का बाल्यकाल, शिक्षा, पहाडों में स्थिति, शाहजादे अकबर और राठौडो का आपसी समझौता, अकबर का बादशाह औरंगजेब से विद्रोह प्रभृति छोटी-बडी तत्कालीन सभी घटनाओ का तिथिक्रम से 'राजरूपक' में वर्णन किया है। वस्तुत 'राजरूपक' कवि है, लेखक के रूप में वीरभाण राजस्थान का एक इतिहासकार-कवि था।

वीरभाण ने अजितसिंह और अभयसिंह का काव्येतिहास तो लिखा परन्तु अपने स्वय के विषय मे कहीं तनिक भी सकेत नहीं किया। न राजस्थान के विश्वविद्यालयो से चारण-कवियो पर शोध-उपाधियां प्राप्त करने वाले विद्वानों ने ही वीरभाण की अन्य काव्य-साधना तथा जीवन-वृत्त पर किसी प्रकार का प्रकाश डाला है। यही नहीं, वीरभाण के विषय में पण्डित रामकरण आसोपा ने 'राजरूपक' की भूमिका में प्रारम्भिक रूप में जितनी जानकारी दी है, उसी पर सन्तोष कर शोध-पण्डित अपना काम चलाते रहे है। यद्यपि उसमें दी गई अनेक बातें बाद की शोध-उपलब्धियों से अप्रमाणित ठहरती हैं। उदाहरण के लिए यहां यह प्रवाद प्रस्तुत कर रहे है कि अभयसिंह ने कविया करणीदान को तो सम्मानित किया था परन्तु वीरभाण को नहीं। इसके विपरीत वीरभाण की प्रशंसा में लिखित

कवियों की रचनाओं में महाराजा अभयसिंह द्वारा वीरभाण को सम्मानित करने के संकेत उपलब्ध होते है। निम्नांकित उदाहरण वक्त कथन को स्पष्ट करते है—

'दला' दूसरा भला कविराज मालम दुनी,
लेखि थिर रहण चै देखि लाहै।
अखर तौ 'भाण' 'जोधाणपति' अरधिया,
चित अखर सुणण 'दीवाण' चाहैं ॥१॥
छति उकति देखि मिलवा करै छत्रपति,
दे सको अन्नपति भोज रा दादि।
अभत कर गीत 'कमधापति' बुलावै,
'आहड़ा पति' तो गीता करै यादि ॥२॥
सायर्ण वायका अमर जड़िया सुपह,
पात घड़िया जुतै खता पावै।
वडा गुण देखि राजा 'अभ' वादियो,
राण वादण गुण रीझ राव ॥३॥
'रतनुवा' राव कविराव ब्रह्माण रख,
हुवे कुण वादगर अवर नर होड।
'अभै' करि कोड कायब जिकै अरधिया
कायवा सुणण 'जगतो' करै कोड ॥४॥

उल्लिखित गीत मे वीरभाण के काव्य-कौशल पर महाराजा अभयसिंह द्वारा 'वादिया' 'अरधिया' शब्द प्रयोगों से सम्बद्ध कवि का सम्मान करना व्यक्त होता है। इस प्रसग मे महाराना जगतसिंह उदयपुर द्वारा भी उसके काव्य पर प्रसन्न होकर आमन्त्रित करने की सूचना प्राप्त होती है।

महाराजा अभयसिंह ने 'राजरूपक' काव्य के प्रणयन पर वीरभाण को स्वर्ण का कण्ठा स्वर्णमुद्रिका, स्वर्ण के कडे, सिरोपाव और जामा आदि वस्त्र भेंट कर कविराजा पद से भूषित करने का प्रमाण भी तत्कालीन रचनाओं मे पाया जाता है। साक्षी के लिए एक कवित्त द्रष्टव्य है—

माळा सोवनिया कनक मूदडा कडाळा।
जामा जरकसिया सदळ सिरपाव सुढाळा॥
मौज दरक हैमरा छात बदरा समपै सर।
'वीर' मूठि नेग अवि लिरै थापियो कवेसुर॥
रतनुआ राव दळराज री थळ सिणगार अण ऊधरे।
पूजियो भोज सिंधू सुपह विजयेन्द्र जैसलगिरे॥

इस प्रकार अभयसिंह के अतिरिक्त कवि को जैसलमेर से भी ऊँट और घोडे प्राप्त होने का कवित्त मे उल्लेख है।

कई शोध विद्वानों ने वीरभाण के वृत्तान्त में लिखा है कि जोधपुर नरेश अभयसिंह के पांचवें वंशधर महाराजा मानसिंह ने जब यह सुना कि करणीदान कविया को तो महाराजा अभयसिंह ने पुरस्कृत किया था और वीरभाण रतनू को नहीं किया, तब मानसिंह ने " वीरभाण के पौत्र को जो उस समय विद्यमान था, गाव से बुलाकर 'घडोई' नामक ग्राम इनायत किया।"[1] किंतु, यह कथन भी तथ्य सम्मत नहीं जान पडता है 'घडोई' ग्राम रतनू शाखा के कवियों को सिवाना के राणा देवीदास जैतमालोत ने भेंट किया था, जिसका मारवाड के परगना की विगत में तथा मारवाड सम्बन्धी अन्य ख्यातों में भी उल्लेख है—

सिवाणा था कोस १३ पू दिसी दत्त राणा देवीदास बीजावतरी। चारण नींबा करमावत नै पीथो टोहावत जात रतनु काका भतीज नु। हमै चारण दाना किसनावत नै नराईण सेता रा न ईसर मेहाजळ रौ नैं भारमल मना रौ छै।[2]

अत यह स्पष्ट है कि 'घडोई' रतनू चारणों के अधिकार मे महाराजा मानसिंह के पूर्व से ही चली आ रही थी फिर मानसिंह का वीरभाण के पौत्र को भेंट करने की बात कल्पना ही सिद्ध होती है।

वीरभाण के पूर्वजों तथा उसकी संतति पर अद्यावधि कोई सामग्री प्रकाश मे नहीं आई है। वीरभाण जैसे कवि पर बहुत कार्य होना आवश्यक है। उसके कृतित्व में भी विद्वानों को केवल 'राजरूपक' का ही ज्ञान है। यहां नीचे पहिले कवि का वंश वृक्ष-और फिर उसकी अन्य कृतियों की सूचनाएं दी जा रही हैं।

वीरभाण रतनू री सजरो

१ टोहोजी
२ पीथोजी
३ सूरोजी
४ नाथोजी
५ सिवदानजी
६ भागचदजी
७ सोमोजी
८ दलोजी
९ भोजराजजी
१० वीरभाणजी बेटा दोय
११ अखोजी ११ लाधोजी बेटा दोय

१ राजरूपक (सम्पा प रामकरण आसोपा), भूमिका पृ० ४
२ मारवाड रा परगनां री विगत (राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) पृ० २७७।

१ सतीदानजी	१ अभरामजी	१ महारामजी
२ मालदानजी	२ करणदानजी	२ चैनरामजी
३ हरदासजी	३ लछीरामजी	३ मोहदरामजी
४ भडोदानजी	४ सिवकरणजी[1]	

कविवर वीरभाण ने 'राजरूपक' के अतिरिक्त समकालीन योद्धाओं पर कवित्त दोहे, गीत और छंद भी प्रचुर मात्रा में रचे थे। जीवन के चतुर्थ चरण में कवि ने लीलाधाम भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र को अपनी सर्जना का विषय बनाया और भागवत् के दशमस्कंध पर 'भागवत प्रकास' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया। भागवत प्रकास' में दोहा, षटपदी, मोतीदाम, हूँखरी, नाराच, पद्धरी, त्रिभंगी आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया। कवि प्रणीत 'भागवत प्रकास' डिंगल भाषा की प्रौढ काव्य कृति है। 'भागवत प्रकास' की प्रसिद्धि और महत्त्व को दर्शाते हुए किसी कवि ने कहा—

मुहर मेह मंडियाह गाव दामा पूजाणा।
जीहा कहिया जिका, रीझ रहिया रावराणा॥

ब्रह्म वेद सारखा, भेद जाणग मन भाया।
प्रेम सको आखियो अरथ सुखदेव सवाया॥

जळ मगळ पवन नैसम जिकं, भोज सुतन न रहिया निभै।
'वीरभाण' अखर थारा वरण अमर कीध राजा अभै'॥

कविवर वीरभाण रचित स्फुट रचनाओं में ठाकुर देवीसिंह चांपावत के कवित्त और बख्तसिंह करणोत राठौड़ के गीत उपलब्ध हैं। बख्तसिंह प्रसिद्ध वीर दुर्गादास के सजातीय सहयोगी योद्धा केशरीसिंह का पुत्र था। बख्तसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह कछवाह (जयपुर) और राजाधिराज बख्तसिंह (नागौर) के मध्य 'गंगवाना' के युद्ध में राजाधिराज बख्तसिंह के पक्ष में भाग लिया था। कवि ने गीत में गीत-नायक की वीरता का आख्यान किया है—

करनौत बखतसिंघजी री रतनू वीरभाण रो कह्यो गीत

वणी वार सूरा जत अधूरा वीखता,
वार भागी जिकं सार वाळी
सिंघ बखतेस वळ दाखि जसिंघ सूं,
वाजियो केसरीसिंघ वाळो ॥१॥
धडक्तो कूरमा गजा दंतो धवा,
हडतो रिमापति समो हाथ।

---

१ संवत् १९७५ वि० की एक प्रतिलिपि के आधार पर।

फरणहर तुरी पीला वरिण करारो
मेळियो कवारी घडा माथै ॥३॥
अभैतन जोड बखतेस राजा अग,
लाख पैला मिर वाग लेते।
खेसिया भुजवळा थाट जाडा खळा,
दळा आदेसियो झाट देते ॥४॥
झीक पोहरा पड़ै बाढ कोरा झड,
दुगम रिण नीमड लड दइवाण।
त्रिजड खळ झाडि जळ चाढि कमधा तडै,
राडि पीठ ऊबरै बिया राजाण ॥५॥

इसी प्रकार वीरभाण रतनू का अपने समय मे पर्याप्त सम्मानित स्थान रहा है। उसकी काव्य रचना से तत्कालीन महाराजा अभयसिंह (जोधपुर), महाराणा जगतसिंह (मेवाड) और जसलमर आदि के शासक भी प्रभावित थे।



ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ : कीरत प्रकास



चौहान शाखियों की चौबीस शाखाओं में राजस्थान में खीची, देवड़ा, हाड़ा सांभरिया सानिगरा और साचोरा शाखाएं प्रसिद्ध रही हैं। इन शाखाओं में जिनका लम्बे समय तक सांभर पर शासन रहा वे सांभरिया, स्वर्णगिरि पर्वत के पास-पड़ौस जालौर भूभाग के शासक सानिगरा और साचोर स्थान के शासक साचोरा नाम से प्रसिद्ध हैं। मारवाड़ में सांभरिया चौहानों के मकराना, भाकाला, सानिगरा के चितलवाणा, राखी, (जोजावर) तथा साचोरा चौहानों के सखवास आदि उल्लेखनीय ठिकाने थे। साचोरा चौहानों के इतिहास के लिए 'कीरत प्रकास रूपक' एक महत्वपूर्ण खण्डकाव्य है। यह ग्रंथ महाराजा विजयसिंह जोधपुर के शासनकाल में नागौर प्रांत के मालावन सादू चारण चनकरण ने वि. सं. १८२२ में लिखा था। चनकरण महाराजा विजयसिंह, महाराजा भीमसिंह और महाराजा मानसिंह का दरबारी कवि था। महाराजा मानसिंह के धर्म गुरु देवनाथ ने जिन पच्चीस कवियों को हाथी और लाखपसाव दिया उनमें चैनकरण भी पुरस्कृत हुआ था।[1]

'कीरत प्रकास रूपक' जैसा कि नाम से ही प्रसिद्ध है, सखवास ठिकाने के सरदारों की उदारता तथा वीरतापूर्ण कार्यों की कीर्ति प्रसार के निमित्त रचित काव्य है। सखवास ठिकाने से पूर्व यहां के सरदारों का सांचोर पर शासन रहा। कवि ने अपने इस काव्य में साचोर तथा सखवास के शासकों की वीरता का दोहा, सोरठा, त्रोटक, निसाणी, पद्धरी, कुण्डलिया, दवावत, छप्पय (कवित्त) आदि २४४ छन्दों में वर्णन किया है। साचोरा चौहानों को सखवास स्थान महाराजा अजितसिंह ने सं. १७८४ वि. में प्रदान किया था। अजबसिंह साचोरा ने महाराजा अजितसिंह की विपत्तिकाल में सहायता की थी। उसके उपलक्ष्य में अजितसिंह ने अजबसिंह को सखवास की जागीर प्रदान की थी।

साचोर चौहानों में अनेक व्यक्ति बड़े योग्य, वीर, प्रबंधपटु तथा स्वामिभक्त हुए हैं। सामाजिक रूप में भी उनकी स्थिति तत्कालीन समाज में उन्नत तथा गणनीय थी। सांचोरा बरजांग, जयसिंहदेव, सोम्वा, सिखरा, वणवीरदास, राणा और बल्लू आदि बड़े प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति हुए। 'कीरत प्रकास रूपक' के अतिरिक्त राजस्थान के ख्यात ग्रंथों में भी उनकी वीरता तथा उदारता का उल्लेख प्राप्त है यथा—बरजांग ने जब जैसलमेर भाटियों के यहां विवाह किया तब याचकों को इतना अधिक द्रव्य दान किया कि अद्यावधि जैसलमेर में 'बरजांग चवरी' प्रसिद्ध है और उसके बाद न किसी ने जैसलमेर ब्याहने पर उतना दान दिया और न उस चवरी में विवाह करने का साहस ही किया।

---

१ बांकीदास री ख्यात, सं. श्री नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १७२

सिखरा, महाराजा गजसिंह जोधपुर का साला और राजकुमार दलपत का मामा था। उसके अधिकार मे तब खेजडली ठिकाना था। बरजाग के पुत्र जयसिंह का महाराणा उदयसिंह मेवाड की बहिन से पाणिग्रहण हुआ था। राणा, राव मालदेव का सम्मानित सरदार था। उस समय उसके अधिकार मे समदडी की बडी जागीर थी। राव बरजाग बडा वीर था। वह मलिकमीर यवन से लडता हुआ मारा गया था। उसके वीरगति प्राप्त करने पर साचोर मुसलमानो के अधिकार मे चला गया। राव वल्लू साचोरा सात सदी जात चार सौ सवार का मनसबदार था। वह संवत १७१७ वि मे मारा गया। महाराजा बख्तसिंह के समय राजसिंह ने बख्तसिंह की ओर से अकेले न ही जालौर, देवला के ठिकाना, सिरोही, पालणपुर, सिंधलावाटी राडधरा के राठौडो तथा कोलियो को दण्डित कर उपहार प्राप्त किये थे। पालणपुर के नवाब बहादुरखा से राजाधिराज बख्तसिंह के लिए नजराना प्राप्त किया था। राजसिंह ने गंगवाणा के प्रसिद्ध युद्ध मे बख्तसिंह के साथ भाग लिया था। महाराजा विजयसिंह के समय जयप्पा सिंधिया के नागौर मे छलाघात से मारे जाने के बाद रावत जैतसिंह सलूम्बर ठाकुर राजसिंह वीरमदेव कूपावत और विजयभारती आदि नागौर मे मारे गए, तब महाराजा विजयसिंह ने राजसिंह के पुत्र शभुदानसिंह और उसके अनुज शिवदास का सखवास के अलावा कापरडा और बगड (?) नामक स्थान दिये। शभुदानसिंह ने महाराजा विजयसिंह के समय जालौर क्षेत्र के बागियो को पराजित किया। तदनन्तर स १८४७ वि के मेडता के मरहठो के साथ के प्रसिद्ध युद्ध मे शभुदान और उसके पुत्र शेरसिंह ने भाग लेकर साहस प्रदर्शित किया। तदनन्तर युवराज भीमसिंह ने अपने दादा महाराजा विजय सिंह के समय विद्रोह किया तब सवत १८४९ मे भंवर स्थान के युद्ध मे उसने भीमसिंह का पक्ष ग्रहण कर जोधपुर के सेनानायक जगरामसिंह कूपावत तथा शिवचन्द भण्डारी से युद्ध किया। या कवि ने कीरत प्रकास रूपक मे सखवास के ठाकुरो के युद्धो के अतिरिक्त उनके विवाहो सतियो कमठानो के निर्माण आदि का भी वर्णन किया है। यहा इस ग्रन्थ मे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

कवि ने सरस्वती और गणपति की स्तुति कर सखवास वालो के पूर्वज दयालदास से वर्णन प्रारम्भ किया है, यथा—

'दयालदास' र दुझळ 'चत्रभुजसिंघ चहुवाणा।
चत्रभुज' रै अणथाळ, अभग नाहर अहनाणा॥
'अजब' 'लाल' 'परताप दलो' हादाल मक्नबर।
अजब' तणो अणबीह नयन गिरमर निर्भं नर॥
'राजान' हुवी अजवेस' र आजान चढतो वळा।
नादान दिना छत नखत सू, वधै प्रभत चहुवै वळा॥
मुरधर पत 'अभमाल' जगत सिरहर जगजेठी।
जिण हुदे जोधार कमध 'बखतस' कणेठो॥

'बखत' उभै आटिया दुरग गज वाज दरब्बा ।
वण धिराज वण वखत, साज सुवराज सरब्बा ।
जोधाण हूत चढ़ियो जदन, सज धिराज 'ग्रहपुर' दिसी ॥
लघुवेस परस साथै लियो, सिंघ चहुवाण राजसी ॥

तदुपरांत कवि ने राजसिंह की लड़ाइयों का वर्णन किया है। राजसिंह को महाराजा बख्तसिंह ने बादशाह मुहम्मदशाह दिल्ली के पास मरहठों के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के लिए भेजा था। कवि ने इस ऐतिहासिक तथ्य को प्रकट करते हुए कहा है—

छन्द पद्धरी

'बखतेस' जोधपुर गढ़ विराज। जोधपुर राळा सिर धरे काज ॥
तद साह दिल्ली 'महमद' तेण। जितरा हिंदू सिध हुकम जेण ॥
हद विधा मिळण पतसाह हूत। कमधेस कियो तन मना कूत ॥
चहुवाण सरस 'राजड़' विचार। तद विदा कियो दिस दिली सार ॥
वध श्रणी भमर छक जेण वेर। नसकरा आरवा अमर लेर ॥
दिस दिली हले 'राजड़' दुबाह। थिर मिले भार धुरधर थयाह ॥
सकतपुर उतन निज अडा सथ। अजवेस सुतन पोहतो अभग ॥
मिळ पातसाह दरगह मझार। चहुवाण वाह परगह उचार ॥
विध हूत मिळें बगसी वजीर। बधियो सग मिसन महावीर ॥
वस किया लिया आफरीवाद। दाखियो हिंदवा मरद दाद ॥
नव मोहरो कर 'बखतेस' नाम। तखतेस दियो सुभ निजर ताम ॥

चतकरण ने महाराजा विजयसिंह और जोधपुर के राज्यच्युत महाराजा रामसिंह तथा उनके पक्षधर मरहठा द्वारा लड़े गए मेड़ता और नागौर के युद्धों का सविस्तार वर्णन किया है। समकालीन रचना होने के कारण यह ग्रंथ इतिहास पक्ष के लिए बड़ा उपयोगी है। मेड़ता स्थान के युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है—

लसकरा मदपुर' आण सूर। सोहियो विजो' हिंदवाण सूर।
सुज 'अभा' सुतन नृप 'रामसाह'। निज उतन काज जिण नरानाह ॥
पेसवा' हूत मिळ दळां पैल। घट दिखण मुरधरा दिसी ठेल ॥
विजपाल' भूप तद कर विचार। भुज 'राजड़' रै तद दियो भार ॥
चालियो विदा हुय चाहुवाण। मरहठा दिसो छक अप्रमांण ॥
मिळ प्रथम 'दिली' गढ मझ मतार'। सरस पहिली सह समाचार ॥
'मेड़ते' प्रथम समहर मडाण। घण दळां नागपुर' थया घाण ॥
'रामेण' वही आयो रढाळ। विजपाल' अठी भूपत वडाळ ॥

मरहठों द्वारा नागौर दुर्ग पर घेरा डालने का कवि ने एक लम्बे निसानी छन्द में वर्णन किया है। मरहठों और राठौड़ों की सेना की तैयारी का वर्णन पढ़िये—

फौजां सामद फलिया दिखणाण दळां रा ॥
कमध सजे ग्रहपुर' किले विढ चहू वळां रा ॥

उभै लाख दळ ग्राहडे खित वेध भळा रा ।।
पहला समहर मेदपुर' झड ताप भला रा ।।
पछ समत्र वागा प्रबल छत्र उम छळा रा ।।
घोर हजारां घरहरे तहला तवळा रा ।।
होय समर दाहु दळ हिचे लोहा प्रघळा रा ।।
थिर 'नागाणी' थाविया कटवाण थळा रा ।।
फौज दवूला फरहरे रगा प्रघळा रा ।।
घोम नरावा घहहडे थह समर मळा रा ।।
खिति पडसादा खडहडे बोहू सोर वळा रा ।।
महरण हिळोळो मरहठा दौळां दवळा रा ।।
कमधज टीळा नाहरा सांमत सबळा रा ।।
दळ धिजिया दोहू दमगळा चितव्रत भचळा रा ।।
हकिया धर असमान घोम समहर सबळा रा ।।
भेळण गढ मरहठ भडा ठव चित ठवळा रा ।।
कमधज ऊवेळण कटक मरहठ जमळा रा ।।
लडना मरहठ नह लसी प्रणहिम जुवळा रा ।।
सारा कमधज ऊमसी रजवट निमळा रा ।।
गढ विच 'विजमल' मेरगिर रग ग्रद ग्रटळा रा ।।
मचियो खेध महाबळा बम घेक इळां रै ।।
समरत्था धुबिया समर 'जोधाण' 'सतारै' ।
जग डगमगिया जोवता क्रोध मतार ।।

राजसिंह के नागौर मे काम आने के पश्चात महाराजा विजयसिंह ने ठाकुर शभुदानसिंह और शिवदास को सम्मानित किया। कवि ने शभुदानसिंह और शिवदास का एक दवावैत मे सुदर रूपात्मक चित्रण किया है। धानोजी मरहठा के विरुद्ध लडे गये युद्ध के वर्णन का यह अश अवलोकनीय है—

धानू' गनीम से महाराज के दळ भारथ भया ।
जिम मे 'सिभुदान' 'सिवदास' नाहर के रूप थया ।।
जिस वखत मे उभ भ्राता अैसा चहुवाण ।
महाराज के काज भीम अरजण के प्रहनाण ।।
वडा राग का घोर नगारू मे बागा ।
कायरू का मन भागा ।।
सोर की पलीती ऊठी । तुरगा की वाग ऊठी ।।
गोळी तीरो की बीरखा मेघ का उनाळा ।
रुधर का प्रवाह छूटा मानू बिरखा रितु का नाळा ।।
तरवारो का पळाका बीज का मिळाव ।
समहर का झड मच्या मानू बिरखा रुत का भाव ।।
जिम वखत 'विजसाह' की चाड दोहू भ्रात छूटा ।
सादूळा सू मानू दोहू नाहर बिछूटा ।।

वि स १८४७ के मेवाड के युद्ध के पश्चात् हिलोडी ग्राम पर मरहठों के धावे का सामना करते हुए कु वर शेरसिंह राखवास का कवि ने उत्प्रेक्षा द्वारा सुन्दर चित्रण किया है—

सैंताळीस सै वरस मुरधरा पर गनीमा का कटक आया ।
दोहू दिस दाय लाख दळ का 'मेडत' समर थाया ।।

होणहार क तावै राठोडा की फोज जळी मरह्ठा की पत भई ।
जिस त नवकोटी मारवाड हैक्प हुई ॥
जिस वखत म नागोर' सिभूदान' सरसिंघ' दोहूं बाप बेटा ।
घरा का मार धार ऊभा खत्रवाट का विरद घेटा ।
नागोर' किळां तूं ग्रासर कर झटल्या ।
सोभाचद भडारी हुता भीवराज सिंघी श्राय मिल्या ॥
मरहट्ठ की वहीर ग्रासपास दौडी ।
पाच स ग्रसवार जिसका रात का मुकाम ठहरिया गाव 'हीलौडी' ॥
रत की पुकार सुण सेरसिंघ कवर चढ्या ।
सो ग्रसवाह से वीस ग्रसवार टाळ कर कढ्या ॥
पाच स मरहट्ठ पर वीस ग्रसवारू की बाग ऊठी ॥
तिण वार का चहूवाण ऐसा मानू सना पर ग्रासमान की बीज तूटी ॥
मछरीक की वीर हाक बगी । मरहट्ठ की सेन भगी ।

कवि ने यह रचना पहिले सवत् १८५२ तथा फिर सवत् १८८० वि म सूचनिका ग्रादि ग्रौर रचकर सम्पन्न की थी । उसने साचोर ग्रौर सखवास के शासको की पीढियों का निम्न प्रकार नामोल्लेख किया है—

'प्रथीराज' महाराज 'रतन' 'पदमो 'लाखणसी' ।
'देवसिंघ 'जैतसी' ग्रीत 'हम्मीर' वहणसी ॥
बळ राजा महमद' 'ग्रासराव' नृप 'कीरतसी' ॥
'मलू' 'सूर 'सूमेर' भूप 'सीहो' दशरथसी ॥
'राम नम 'वीक' 'सोभ्रमसी' 'सांवतसी' 'वल्लू' जिसा ।
सुज साल राव सग्रामसी, ग्रेतला 'पातल' नप ग्रसा ॥
जग जाहर 'वरजाग' जीत सोभा पतसाई ।
जसलमेरां गरण कोड दन ग्रीत वडाई ॥
'जसिंघ 'बरजाग' र जेण कुल नींवो' 'राणो' ।
'महिकरण' 'सिखरो 'दाल' राव चत्रभुज वहाणो ॥
'ग्रजवेस' 'राजसिंघ' रै उदै धिन पुन सुमत निधान रै ।
उजवाल विरद दाता इळां सेरै सभूदान रै ॥

कवि ने ग्रन्थ निर्माणकाल की सूचना देते हुए लिखा है—

समत ग्रठारै बावने, सद सावण री तीज ।
जद ग्रो रूपक जोडियौ, रीमावण हद रीज ॥
कहियौ रूपक वावने, रजवट हदी रीत ।
सत् पछै ग्रसियै वरस, कही सूचनका नीत ॥
कीरत परकासण करण, जथा नांव गुण जास ।
कवि 'सांदू' 'चन' कयी, भायव क्रीत प्रकास ॥

ऐतिहासिक काव्य-देवगुण प्रकास



शेखावाटी मे सीकर राज्य के शासक रावदेवीसिंह शेखावत एक धीर वीर योद्धा, उदार विद्वान और विद्वानो के आश्रयदाता थे। योद्धाओ और विद्वानो को आमन्त्रित कर अपने यहा बुलवाना तथा वस्त्र, आभूषण, अश्व, गज, द्रव्य और भूमि प्रदान कर उन्हे सम्मानित करना उनका सहज स्वभाव था। रावदेवीसिंह ने अनेक कवियों को भूमि आदि दान कर उन्हें सीकर राज्य मे बसाया था। राजस्थान की जन वाणी मे नृत्य करने वाले राजिया के सोरठो का रचयिता कृपाराम खिडिया रावदेवीसिंह का आश्रित सभासद था। राजस्थानी कवियो में कृपाराम ही एक ऐसा कवि है जिसके सोरठे राजस्थान की सीमोल्लघन कर भारत के सुदूर प्रान्तो तक मे विचरण करते हैं।

राव देवीसिंह विद्वान् होने के साथ साथ महान योद्धा भी थे। उन्होने जयपुर और अलवर राज्यो के मध्य लडे गए राजगढ के युद्ध, नजफकुली के साथ सिरोही (तवराव टी) के युद्ध और मुतजाअली भडेच शाही सेना नायक के साथ खाटू (श्यामजी) की रणभूमि मे वीरत्व प्रकट कर विजय प्राप्त की थी। राजस्थानी चारण कवियो ने रावदेवीसिंह के उपर्युक्त विजय अभियानो पर वीरगीत, छप्पय, दोहे और प्रबधात्मक काव्यो का सजन कर उनका यशोगान किया है। खाटू स्थान के युद्ध के सम्बध में कवि चिमन ने 'देवगुण प्रकास' नामक महत्वपूर्ण काव्य की रचना की है।

कवि चिमन और देवगुण प्रकास काव्य अद्यावधि विद्वानो की दृष्टि मे अज्ञात है। ग्रथ की पुष्पिका के अभाव मे कवि का परिचय अब भी अनुपलब्ध है। कवि ने ग्रथ को सम्पन्न करते हुए आशीर्वादात्मक एक छप्पय मे केवल अपने चिमन नाम का निर्देश किया है। यह काव्य डिंगळ भाषा शैली मे प्रणीत होने के कारण इसका चारण-काव्य कृति होने का विश्वास किया जा सकता है। कवि का वह आशीर्वादात्मक छप्पय है—

जितै मेर गिर जमी गयण वेथार ग्रहापति।
तारामडळ जितै रज तारा तारा पति॥
जितै पमण घण गजै दिसादस जितै सुरापति।
सेस सीस भर जितै सुरागण जितै सुरापति॥
ध्रु अडिग जितै उदधि बदै 'चिमन' आसीस वर।
इळ भाण इळा राजो इता सुपह देव सिरंसिघह ॥

'देवगुणप्रकास' चारण शैली में रचित प्रबंधात्मक युद्ध काव्य है। शेखावाटी तथा सीकर राजवश के इतिहास के लिए यह काव्य आधारभूत कृति है। प्रारंभ में कवि ने गणपति, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और शक्ति इन पचदेवो की वन्दना करते हुए वागेश्वरी सरस्वती का स्मरण किया है। तदनन्तर पुन शिव की वन्दना कर कछवाहो के स्वामी राजा कुंतिल दव से क्रमश जोणसी, उदयकरण तथा उनके तीनों प्रतापी पुत्रो नृसिंह (आमेर के राजा) बरसिंह (अलवर वालो के पूर्वज) और (बाळा शेखावता के पूर्वज) का नाम निर्देश कर राव बाळा से राव मोकळ और राव शेखा का वर्णन किया है। राव शेखा के युद्धाख्यानो मे पूर्वधरा के बादशाह, गौडक्षत्रियो, मलिकखान और दहिया क्षत्रियो के साथ बावन युद्धो का सकेत किया है।

राव शेखा के उत्तराधिकारी राव रायमल्ल, राव सूजमल्ल और राजा रायसल का वर्णन किया है। कवि ने राजा रायसल को शाही सम्मान तथा खण्डेला का राज्य मिलने व निर्वाण क्षत्रियों, भटनेर, हिसार के सिक्खो और बादशाह अकबर की गुजरात की चढाइयो का उल्लेख किया है। राजा रायसल के प्रतापी बारह पुत्रो का नामोल्लेख कर सीकर नरेशो के पूर्वपुरुष राव त्रिमल्ल, राव गगाराम, राव श्यामराम और कुमार जसवतसिह के पराक्रम, इन्द्रसिंह जाधा खादू को मारने तथा राजा बहादुरसिंह खण्डेला द्वारा छलपूर्वक मारने का उल्लेख किया है। जसवतसिंह के सिंहासनाधिकारी राव जगतसिंह हुए। जगतसिंह ने बलराम को मार कर अपने पैतृक राज्य कासली को हस्तगत किया, शाहपुरा के दुर्ग पर अधिकार किया और राजा केशरीसिंह खण्डेला के सयुक्त नेतृत्व म अजमेर के शाही प्रान्तपाल अब्दुलाखान से हरिपुरा के रणक्षेत्र मे जूझ कर वीरगति प्राप्त की। कवि ने हरिपुरा के युद्ध का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

जसवतसिंह के दौलतसिंह और उसके शेखा कुल रत्न राव शिवसिंह हुए। शिवसिंह ने कायमखानियो, नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह माधवसिंह रामपुरा और महाराजा ईश्वरीसिंह जयपुर की ओर से बगरू स्थान पर मल्हारराव होल्कर से जूझ कर खेत रहने का वर्णन किया है। रावशिवसिंह के पश्चात् राव समर्थसिंह राव चांदसिंह द्वारा लडे गए युद्धो का वर्णन कर चरित्रनायक रावदेवीसिंह के वीर कार्यों का वर्णन किया है। कवि ने कोई एक सौ तीन विविध छदो मे राव चांदसिंह तक वर्णन कर रावदेवीसिंह के जन्म का वर्णन करते हुए कहा है—

ऊंच लगन अणबीह, ऊंच महुरत आहसी।
ऊंच नखित अभीत ऊंच वेळा प्रम असी॥
ऊंच जोग आविय, ऊंच सुभ घडीव अमी।
ऊंच मास अणरेह, ऊंच वर दीह अनमी॥
कुल ऊंच सिखर आमति अकळवळ तप भासकर वियो।
चद र देव वीराधिवर जगा जीत जनमियो॥

इस प्रकार कवि ने अपने काव्य-नायक के जन्म समय का उल्लेख करते हुए उसके प्रतापी, वैभवशाली और भाग्यशाली होने की घोषणा की है और उसे स्वेच्छाचारियों को बंधनबद्ध तथा पर बंधनबद्ध को मुक्त करने वाला समर्थ व्यक्ति व्यक्त किया है—

अग्राहा ग्रह अकळ ग्रहा उग्राह् करण गह।
असह यहाँ ऊथपण थपण ऊथपा तणो थह॥
यम बाढण मद धरां धीठ अमन्न मद धाढण।
भ्रण बका बळ अजर कहर बका बळ काढण॥
ऊनवा नथण नथा ऊनथ, समथ हूं थ कथा सुवर।
श्रो देवगुण उवचरि सुकवि, समर धीर दूजो सिखर॥

कवि ने एक सौ बारह तक के छन्दों में रावदेवीसिंह के पौरुष, नीति न्याय, कलाप्रियता, काव्य प्रेम, यश लब्धता तथा उदारता का वर्णन कर भरतपुर के जाट नरेश जवाहरमल्ल के आमेर को अपमानित करने के लिए पुष्कर तीर्थ पर जोधपुर नरेश विजयसिंह से मन्त्रणा करने तथा मावडा-मंडोली के भरतपुर और जयपुर के युद्ध का बात (गद्य) में वर्णन किया गया है। कवि राजस्थानी भाषा की सशक्त शब्दावली में प्रसंगों के शब्द चित्र खड़ करता चलता है— "उण सभै व्रज माहे जवाहरसिंघ सूरजमलोत राज करै। सो किसोहेकथणा सत्रा री धायक। प्रिथी रो दायक। दिली री ऊथापण। किलमदळा री कापण। सबळाई रो सीम। भारथ रो भीम। अनमा री नामण। रढ री रामण। सो जवाहर जिकै घासा-हरा मैंराहरा नू मेळि नै पोहोकर तीरथराज परसण रा तो इळा नू दरसाव कीधा नै अबापुरा ऊपरा दाब दीधा। सो इण भांति हू गजडगग नू लेनै सालुळिया जाणेक महा प्रळैकाळ री घडी रो दरियाव चाला बाधि ऊझळियो।"

कवि ने योद्धाओं, युद्धक्रियाये, जूझारो, भरतपुर की पराजय तथा रावदेवीसिंह के काका बुधसिंह के शौर्यप्रदर्शन कर वीरगति प्राप्त करने का वर्णन करते हुए कहा है—"नरा री माह सवाई सिवसाह सोहा गजवोहाँ हूता खड-खडा अडियो नै मोतियां री माळा री-सी माळा रै माहे मेर-रूप पडियो। जो ठाकुरे जिण घर रा बठा तक कीज वाखाण। अेक हू अेक बधता रजपूती रा डाण। जिकण री भाभीज। आसमान री बीज। खीज गै सक्कर। तेज रौ भासकर, मौजा रौ महराण। फौजा री माण। रीतरी सुरपद। चीत री अपद। वीत री कुबेर। मरजाद रो मेर। चद रो मद्दूर तपै सेवा धरा रौ सूर। सिरताजा रा सिरताज। देवो उमरि दराज।"

कवि ने रावदेवीसिंह के सामन्त समाज गजाश्व, संगीत प्रेम, विद्या प्रेम आदि का चित्रात्मक शैली में आख्यान करते हुए शाही सेनापति नजवकुली की शेखावाटी को दण्डित करने के लिए चढाई और पराजित होकर लौटने का ओजपूर्ण भाषा में वर्णन किया है।

तिण वर ढेली तखत भली सिरि छत्र अधारे।
हिंदव मह जोद असर कुली नजवेस हकारे॥
झूमसल्ल नम फैर मेन घटऐ नामेनां।
बळ उभेळ छळ चळ ठेन धोटा धरणठेना॥

रिणताल सजब मेघाळ रख बज बवि ढाळ विभाग रो ।
बगाल नजब मळोवळी गजब भाल गयणाग रो ॥

वर्णित युद्ध सिरोही स्थान पर लडा गया था। नजबकुली की पराजय से लज्जित होकर बादशाह ने मुतजामली को प्रचण्ड मुगलवाहिनी देकर शेखावाटी पर भेजा। वह दिल्ला से प्रस्थान कर खाटू के मैदान मे आ डटा। रावदेवीसिंह ने अपनी सीकर की सेना के अतिरिक्त खूड, दाता, खाचरियावास, डूगरी, पालडी महाराजा प्रतापसिंह जयपुर की सेना महत मगलदास दादूपथी प्रभृति सैन्य दलो के साथ मुगलसेना का रणभूमि म स्वागत करने हेतु प्रयाण किया। गज-सेना का वर्णन देखिए—

विकट रूप कीवता उरण पोगरा सळवळ ।
हूळळ साज हाटका कळळ चावका बळवळ ॥
भळळाहट झूमका अगुट वागा भळळाहट ।
ठळळाहट लगरा हुता मदा खळळाहट ॥
हूलिया बडाळ ऊमत हसत घसत भाल ग्रह घीस रै ।
मेघाळ जाणि मलपै मसत मुजरे नृप मधवीस रै ॥

इसी प्रकार अश्वो, ऊँटो और योद्धाओ के कवचो तथा आयुधो के ठाठदार वर्णन की चित्रावली बनाता हुआ कवि आगे बढता है। योद्धाओं के सज्जित होकर रणभूमि म प्रवेश करने का एक हृदय रोमकद छद में व्यक्त हुआ है—

विरदाळ स वेल पखाळ मेळ वगा खग काळ भया।
गजराळ ऊबल ठहाळ गजागह हेल ळह ळ गैणाळ हया ॥
पळगाळ डलाळ पखाळ स पीखर्ने तेज झलाळ लकाळ तसा।
तिण ताळ मिळ पोहो देव तणे छळ अजा सचाळ भुजाळ असा ॥

तदुपरान्त कवि ने योद्धाओ का जातिवार नामाकन करते हुए वर्णन किया है। शेखावतो की सेना के हरावल के सेनानायक ठाकुर भक्तसिंह गिरधरदासोत और उनके साथी नायक मेर्दसिंह, हुक्मसिंह का निर्देश किया है—

धमचक्क भटक्क स भोप गिरध्धर को धुमक ; भटक्क चले ।
हक गज्ज दुबक्क कटक्क सहेडक खेडक जग्ज हटक्क सळे ॥
धक कृतक कीवक छेद गजा धुम भेद वखत हुक्कम जसा।
तिण ताळ मिळे पोहो देवतणे छळ अज्ज सचाळ भुजाळ असा ॥

योद्धाओ को आश्वस्त करते हुए रूपसिंह के तनय वख्तसिंह की उक्ति—

वीर हाक वाजता वखत जसं डाक वधारण ।
व वळा बोलियो रूपवाळा रढ रावण ॥
आरावा आतसा घाट तो विकराळा ।
मेळ असि मुगला धह जाडे खग भळा ॥

हैथटा विहडि बत्था हुचकि वहासूर जुत्था मंझे।
सझि कण्ण भुयण हल्लू सरगि सवळ भूळ रत्थां सझै।।

कवि ने विपक्षी सेना का भी खूब जमकर चित्रण किया है। शाही सेना के वीरो का वर्णन इन गद्य पक्तियो मे अवलोकनीय है —अर बठी भीमं जेहडा प्रळैकाळ रा घाट। मेछ मीरजादा रा थाट। जा आवे नै ठहियां सो किण भांतिरा। जिकै भैंकार दीसत रा भमणाळ माथा रा। कपिराज मुहंडा रा। बळती लाय आंखिया रा। गिर श्र ग खवा रा। सीह हाथळा रा किंवाड छातिया रा। भुरजाळ अगा रा। कूब दाढारा। बेताल सूरति रा। बिकराल वाणी रा। तिक तात भात री बेटिया रा परणणहार। नौवा खडा रा माला रा आसणहार। जिके सिले आवधानू भीडिया थका दाढिया नू ताणता न जीम आणता। किलकार हाक करता नै ओर्ध धरता। कवाणा रै कसीस कीवता नै धाख थीवता। हूरा नू झाला देता नै प्याला लेता। मल यल्ली मुगल्ली वाणिया हुता कुराणां रा भेद कढतान अली अली पढता। जिके मुरतजा खान जिहांन रा तोकण। आसमान रा ओकण। काळ री गाळ। भाहि री भाळ। गजब री चोट। सार रा कोट। लाय रा किलकिला रै आगळ खींजिया मु भेण री तर आभि जाता ठहिया अर इस बिकराळ रूप सु बणिया लो न जाय कहिया।"

कवि ने दोनो सेनाओ के योद्धाओ के रणकौशल वीरदर्पोक्तिया, शस्त्राघातो, चण्डिका रुद्र वताल, नारद, अप्सराओ आदि का वीर काव्यपरम्परा के अनुकूल ध्वन्यात्मक शब्दावली मे उभय पक्ष के रणखेत रहे वीरो का एक एक छप्पय म वर्णन किया है। युद्ध मे काम आये तथा घायल हुए योद्धाओ के इतिहास के लिए यह कृति अत्य त ही उपादेय है तीन दिन के घमासान युद्ध के बाद शाही सेना की पराजय और कछवाहा की विजय का वर्णन करत हुए कवि न रावदेवीसिह के निर्मित तथा अधीनस्थ दुर्गों का नामोल्लेख किया है—

गढ सीकरि गढ फतै गढा सिणगार देवगढ।
सनढ गढ कासली रघूगढ दरण रिभा रढ।।
गढ लिछमण अगजीत विहद सींगस बेथारा।
गढ वटरायळ गहर बिकट मढ वहर बलारा।।
दोयणा साल हरिण दोयणां अघट घाट उमडिया।
कलास रूप देव अकळ महासूर गढ मढिया।।

हरिपुरा और मावण्डा मण्ढोली और पाटन के युद्ध की भाँति ही खाटू का यह युद्ध भी शेखावाटी के विकट युद्धो मे परिगणित किया जाता। यह युद्ध विक्रम सवत १८३७ श्रावण शुक्ला १५ सोमवार के दिन लडा गया था। शाही सेना के अठारहसो यवन याद्धा जिन मे मुहम्मद गाजी और अहमद नामक दो सेनानायक भी मारे गये थे। कछवाहों की सेना मे ठाकुर बख्तसिह खूड, ठाकुर चूहडसिंह नाथावतत डूगरी, ठाकुर मेघसिंह पालडो,

महंत मगलदास दादूपंथी आदि दो हजार योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए। युद्ध की तिथि का सूचन छप्पय इस प्रकार है—

अठारस समत बरस सतीस मास नभ।
ऊजळ पख चद्रवार दीह राका दारण प्रभ॥
बाहि साग विकराल ढाहि हैदळ गज ढल्ला।
जडे सेस ध्रुध खगरूर धू खळा धूरि मुगला भचल्ला॥
सर भुजा भग सावळ सुंभित सुरभ रंग नर सूर वर।
ध्रुप पता सुछळ खटिकानयर सुपह देव जीतौ समर॥

कवि ने डिंगल वीरकाव्यों में प्रयुक्त गाथा, छप्पय, दोहा, गीतभमाल, वेभक्खरी, पद्धरी, भुजगयात, हणूफाल, रोमकंध, गाथाचौसर, नीसाणी, त्रोटक, सारसी, गीत नामक ५३६ छंदों तथा गद्य वार्ताओं में देव गुण प्रकास काव्य को सम्पन्न किया है।



नवलसिंह वसरीसिंहोत को कवित्त एक और षट्ऋतु के कवित्त ६ तथा एक फुटकर छप्पय और कु० मालमसिंह देवीसिंहोत मेड़तिया का एक वीर गीत कुल १७ स्फुट रचनाएं प्रकाशित की हैं। इस प्रकार राजिया के सोरठों की लोकप्रियता के धनी कृपाराम की कुछ अन्य रचनाएं जहां प्रसिद्धि में आई हैं वहां कृपाराम के सम्पर्क और समय निर्धारण की ओर भी एक दिशा-सूचक सूचना मिली है। इन स्फुट रचनाओं से पता चलता है कि कृपाराम महाराना जवानसिंह मेवाड़ के राज्यारोहणकाल संवत् १८८५ तक विद्यमान थे और उनका सम्पर्क राव देवीसिंह और उनके पुत्र रावराजा लक्ष्मणसिंह (सीकर) के दरबार तक ही सीमित नहीं था अपितु जोधपुर नरेश महाराजा विजयसिंह, मगाणी के स्वामी ठाकुर गोरधनसिंह खीची और देवीसिंह मेड़तिया प्रभृति तत्कालीन राज्यमान्य पुरुषों से भी उनका पर्याप्त संबंध था।

कृपाराम जैसे दीर्घजीवी और नीतिनिपुण श्रेष्ठ कवि ने अपने जीवन में केवल सोरठे, कवित्त और कुछ गीत ही लिखकर लेखन से विश्राम ले लिया हो, यह जंचता नहीं था। इसी उधेड़ बुन में पिछले दिनों कृपाराम प्रणीत राजस्थानी की अज्ञात कृति 'श्रीकृष्ण गोवर्द्धनधार' प्राप्त हुई है। परन्तु प्रति में कृपाराम नाम के अतिरिक्त कोई जातीयता-सूचक संकेत नहीं है। ऐसी स्थिति में यह निर्णय लेना कठिन है कि कथित कृति किस कृपाराम की है। चर्चित प्रति त्रुटित है। प्रारम्भ का मंगलाचरण और मध्य का अंश खंडित है, फिर भी वर्णन की दृष्टि से कृति का महत्व कम नहीं है। यह एक खण्ड काव्य है जिसमें कवि ने चारण कवि सायां झूला के 'नागदमण' और रुक्मिणीहरण' की शैली में श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन धारण लीला का वर्णन किया है। इसमें कवि ने भुजंगी मोतीदाम, कवित्त और दोहा छन्दों का प्रयोग किया है। भाषा परिमार्जित डिंगल है। यहां अग्रिम पंक्तियों में श्रीकृष्ण गोवर्द्धनधार (लीला) का आवश्यक अंश उद्धृत है—

> प्रथी मुथरा नाम नग्री प्रगटा। उठै ऊपना लाल सक्ती अघटा॥
> सिसु आवीयौ घोक रै ओक सामी। निभ पूरण अवतार श्रीकृष्ण नामी॥१॥
> थिग ऊतरै प्राण परभात थायौ। प्रजा व्है सिसु जेण रौ भेद पायौ॥
> घरा नदरै धाम नारा पधारी। सिसु देखवा न जुडी प्राण सारी॥२॥
> लली दुरस देखवा आया समेळा। भनी नंदर धाम व्हा पुरस भेळा॥
> दुनीवत श्री लाल रौ मुख देखै। प्रभु री कळा अंग र संग पेखै॥३॥
> घरा लाल अवतारणी थान धावै। दई मानुखी भाव लोकां दिखावै॥
> पती विपद रा अंग में चिह्न परखै। हीय रूप ने देख नर नार हरख॥४॥
> हमे लाल घरसाल भू भार हरसी। करा सु विडाई वडा काम करसी॥
>
> । कंस वरी तणा दाव—टळिया॥१५॥
>
> पती त्रैगी वामन सूप दीनी। निमैवा दुहीता हीय धार लीनी॥
> उरा देवकी मात रो मोद उयौ। प्रयी पुत्र म्हारौ निभ, ठाढ पूगौ॥१६॥

फबै दाव मा बाप रो वेस फळियो । महा सोच मळीयो ॥
उरा म जसोदा तणो मोद आयो । पुरा तीन रो नाथ मे पुत्र पायो ॥१७॥
धरा नद आनद उर बोध धारै । मुरा लोक रै यद व्हा पुत्र म्हारै ।
थिरा ऊपरै आण परभात थायो । प्रजा व्हो तिसु जेण रो भेद पायो ॥१८॥
वसुनदर धाम वामा पधारी । सिसु देखावा नै जुडो आण सारी ॥
सकी देखन जोखतावा सरायो । अयो पुत्र माता पुना जोग पायो ॥१९॥
भण नद राणी तणो भाग भारी । सही जोखतावा बळी देख सारी ॥
सुव म जसोदा जठा लगा सूती । भडा जाय दीठा नपती विभूती ॥२०॥
पडोडा गणक्का दीहाडो बतायो । पछै सोस मा धोवण जाण पायो ॥
दिप्र आगणै चौक पूराय दीना । भला चदणा नीर रा प्रेम भीना ॥२१॥
उठै मोतीया चा धरे माथ आखा । भणे नारीया मगळ चार भाखा ॥
पट्ट पाणीयां सीवळा मेल पाया । वसु नायणा काम चोना वणाया ॥२२।
रजे हाटका र जठै कुभ भरीया । करा ले जसोदा तण अग्र करीया ॥
धरा लाल भवा उठ सीस धोयो । जरू वार आछो तणो तत जोयो ॥२३॥
कीया न्हावणा धोवणा छोत काढी । अहाणी तना सुच्चता आण गाढी ॥
निभ नद री वाम पौसाख कीनी । दिप भाल म लाल दीनो ॥२३॥

यशोदा ने सोलह श्र गार धारण किये । विप्रो और याचको को स्वर्ण, रजत और धेनुए दान मे प्रदान की । कृष्ण पालने म झूलने लगे । वे दिन दूने और रात चौगुन बढने लगे । उनकी बाल-लीलाओ का अवलोकन कर न द यशोदा फूले न समाते । फिर वे पालने से घुटनो के बल चलने लगे । तदनन्तर वे गोप-वालो की मडलियो म रमने लगे, मुरली बजाने लगे, गोपालो के साथ गाए चराने लगे ।

इसी काल मे श्रीकृष्ण ने देवराज इन्द्र की अवमानना की घोषणा की और गोवर्द्धन गिरि की पूजा का महत्व प्रकट किया । उनके इस कार्य से रुष्ट होकर इन्द्र ने व्रज पर अपनी कादम्बिनी से आक्रमण बोल दिया । श्रीकृष्ण न अपनी अगुली पर गोवर्द्धन गिरि को धारण कर व्रजवासियो की रक्षा की । इन्द्र के आक्रमण का अश द्रष्टव्य है—

धरा हाथ प गोत श्री लाल धरियो । किधौं तूलका छान कर माथ करियो ।
अखा रै विचै आय नै बाय बाजे । अरि वदना साथ र माथ गाजै ।
लल गोत यू पाण र माथ लीधो । करो रोट र भाण र भेट कीधो ॥
रसा मानवी उपमा जक्त राणी । ब्रवी वाढ भडार सु ग्रूद वाणी ॥
मही गोब श्री लाल रै हाथ मड । खिति निजरा नाथ रो दप खड ।
धरा पेड सुडा गजा तोय धारा । पड मेघ सु आय भू वै अपारा ॥
प्रभु ऊरण उर बीज इछया उपाई । थिरा जातवेदा तणे जोड थाई ।
जिती भेटता नीर सोखत कीनो । द्रुमागा मघा मधि नाहि दीनो ॥
वसु मेह सामो दिनां लगा बूठो । मसं अरुण सु जिरण रो जोर खूटो ॥

जुडे साल सु जीतनै सेर वणीयो । जिको विश्व मे पूत माता न जणीयो ॥
पसु पख नीर नरा यद्द पेखे । दिलां हग्सलीधर दुखी को न देखे ॥
थिरा ऊपरा मेह वरसाय थाको । पती व्रज री पाखीयो जार पाका ।
तरा पाकसासन्न रो माण तूठो । फव लाल री जोर तीरो धफूटो ॥
हिये सोचीयै यद वार्ता हजारा । सिसु माह भी सो पती लाक सारा ॥
वसुनद री नद सारा वखाणे । जगनाथ री भेद कोईक जाण ॥
सही ढाव लीना मुरालोक स्वामी । मही भालमाकूट हेर तमामी ॥
मना मेघमाळा तणो मैं न मानै । कीयो हाथ माथे नगानाथ कान्हे ।
सखावे प्रत यद्र वाता सुणाव । यणा सु कीयो वर सो सोच भाव ॥
वसु सात वरसा तणो वीर वाको । सुनासीर रो तार मनै न साको ॥
झठो मेघमाळा दसा दाय झोको । सहो देखने स्याम वणीया न सोकी ॥
रसा बाळ गिणीयो अहीरा घरा रो । नही जाणीयो नाथ देवा नरा रो ॥
मना जाणीयो पडद भाव न भोपे ।
पतो विश्व रो पेखीयो जोर पाको । थिरा निर्जरानाथ रो जोर थाको ॥
फवै अम्मलो गण जीमत फाटे । टळो मेह री मार भखीड चाटे ॥

तदनन्तर देवराज की पराजय और जगन्नाथ की विजय का धारा प्रवाह वर्णन किया गया है । इन्द्र की बलाहक सेना वर्षा करके थक गई और वह व्रज का बाल भी बाका न कर सकी । तब इन्द्र ने लोकनाथ श्रीकृष्ण की शक्ति को समझा । वह लज्जित होकर त्रिलोकीनाथ से क्षमा-याचना करने लगा । क्षमा याचना का वर्णन इस प्रकार है—

कला चाल कीधी पसु मैं कुकर्म्मी । सधरा सीस मोटा प्रभु आप धर्म्मी ॥
नही जाणीयो श्रीपती म अग्यानी । करी रूख काणी हरी आप कानी ॥
गुनगार हु आप रो नाही छोटो । महाराज थो, डब मो सीस मोटो ॥
करा जाब कीनो क्रपा कान्ह कीजे । दयाधार मोनै अभै दान दीजे ॥
सुनासीर सो रावळो छेम सीरो । धराधार म्हासु करो क्रोध धीरो ॥

अनेक प्रकार म इन्द्र ने भगवान् श्री कृष्ण की वन्दना कर बार-बार अपने अपराध के लिए क्षमा याचना की । कृष्ण ने देवराज की प्रार्थना पर दयार्द्र होकर उसे स्वर्ग जाने की आज्ञा प्रदान की । भगवान की दयालुता की अनवरत सराहना करता हुआ इन्द्र स्वर्गलोक गया । इन्द्रलोक म शची घृताची मेनका, तिलोत्तमा, उर्वशी और अलंबुषा आदि ने सकुशल लौटने के उपलक्ष्य म हर्ष व्यक्त किया । इधर श्रीकृष्ण अपने माता पिता के पास आए । नद और यशोदा ने अपने पुत्र का प्यार किया । व्रज-बालाओं ने हर्ष-विभोर होकर बधाइया बाटी । अन्त म कवि ने गोवर्द्धन लीला सम्पन्न करते हुए विनय की है—

पख लाल आणद रा कद पेखो । जिकां सु न मागै कदे विघ्न लेखो ।
कृपाराम श्री लाल री कृति कीधी । पख लाल चरणां तणी ओट लीधी ॥

दयाधार मोनैं हरी उक्त दीधी। धरा सीस म्है लाल री प्रीत कीधी।
मही सीस है लाल रो इष्ट म्हारे। त्रलोकी (तणो) नाथ मो यात तारे ।।

(छंद भुजगी)

प्रभु कंज चरणां तणी रज्ज पाऊ। लखा ले करा माहरे सीस लाऊ ।।
धरा जो मिळै मुझनैं चक्रधारी। सही हू गिणू मो मिळी सिद्ध सारी ।।१।।
दया निधो ताहरो रूप देखू। लखा हूंत रा कल्प सू श्रेष्ठ लेखू ।।
सही मो मिलै स्याम भक्ता सहाई। नवो निद्धरी सिद्ध पाई ।।
तरू मो मिलै नाथ जल रास जाई। ।।

(छंद मोतीदाम)

तिके गिर ऊपर तडत मोर। जमी व्रज री बिच मजत जो।।
जमी सिर जोजन मे खट जाण। पुणै नर तडत मद्र प्रमाण ।।
धरा गिर खांण विचै मुन धात। लिफै नित लाल तणै निज हात।।
वस मुनि संत जिके गिर बीच। वलै मह माहृ तणै बिच कीच।।
धरै उर कारण विसभर ध्यान। करं नह बात विखरस कान।।
दिला भ्रजरी विघ्र भावत दाय। दिपै व्रजरी धर - म सुखदाय।।
मना नित मानत बालमुकन्द। धरा सिर पवत गोवद्धन ।।
यला गिरराज, तणै जम प्रेम। पुणै 'किरपेस' हियै कर प्रेम।।

दूहा

सुरपत री पूजा सरब, भेट करी घर माय।
जग गोवरधन पूजणो, निज आदरियो नाथ ।।

छंद मोतीदाम

दिपै व्रज री घर म कवदान। जिको गिर आहुर बीच जहान।।
प्रभा तिण री उवरू कर प्रीत। अदुपत पुज्ज कीयो जगजीत।।
जहू किनरां जिण री बिच जेथ। रहै अधराज भयकर तेथ।।
भभै गलगाज वरै मृघपद। जिका सुण मह तज गज ग्रन्द।।
पवै गिर भाकंड धार फवत। ।।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि गोवर्द्धन-लीला एक भक्तिप्रधान सरस, रोचक एव मूल्यवान काव्य-कृति है।

कृपाराम नामक पाच चारण कवियो और उनके सजन का परिचय मिलता है। यहा केवल दो का सकेत दिया गया है। 'गोवर्द्धन-लीला' का कर्त्ता इन पाचो कवियो म कौनसा कृपाराम है, सन्देहास्पद है। यह कथित पाचा कृपारामा से भिन्न कोई अन्य कृपाराम भी हो सकता है।

चारण कवि कृपाराम खडिया



कवि कृपाराम खडिया का जन्म मारवाड के परवतसर परगने के खराडी नामक ग्राम के चारण जगरामजी के यहा हुआ था। खराडी खडिया जाति के चारणो का आदि स्थान माना जाता है। खराडी से जगरामजी कुचामन के ठाकुर जालिमसिहजी रघुनाथसिहोत के पास आ गये। ठाकुर जालिमसिहजी ने जगरामजी को अपने ठिकाने का गाव जूसरी प्रदान कर अपना कवि बनाया। कृपारामजी का बाल्यकाल एव अध्ययन-काल जूसरी मे ही व्यतीत हुआ। किन्तु विक्रम सवत् १८०७ मार्गशीर्ष शुक्ला १० को मेडता के समीपस्थ ग्राम आलणीयास के मैदान म राजाधिराज बख्तसिहजी नागौर, महाराजा गजसिहजी बीकानेर, महाराजा बहादुरसिहजी किशनगढ की सयुक्त सेना से लडते हुए ठाकुर जालिमसिहजी वीरगति को प्राप्त हुए। बख्तसिहजी और रामसिहजी के इस आपसी कलह मे मारवाड के मेडतियो क ठिकाना के सभी सयाने सरदार काम आये। कुचामन के तो बडे कु वर भी इसी युद्ध मे मारे गये। ऐसी स्थिति म कृपारामजी का मन अपने गाव के वातावरण मे नही लगा। वे जूसरी से सीकर के रावदेवीसिहजी चादसिहोत के पास चले गये। रावदेवीसिहजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी और कवियो एव विद्वानो के आश्रयदाता थे। कृपारामजी न अपने गुणो के बल से थोडे से समय मे ही रावदेवीसिहजी के विश्वस्त व्यक्तियो मे अपना स्थान सुरक्षित कर लिया। रावदेवीसिहजी का जब वि० स० १८५२ मे अवसान होने लगा तब उन्होने अपने पीछे अपने राजकुमार लक्ष्मणसिहजी की देखरेख के लिए चार पाच विश्वस्त एव राज्य-काय मे चतुर व्यक्तियो को नियुक्त किया जिनमे एक कृपारामजी खडिया का भी उल्लेख पाया जाता है ऐतिहासिक काव्य "रायसल जस सरोज" मे उक्त प्रसग म लिखा है—

पुनि धाभाई पेखहू, सूरजमल सो जानि।
कृपाराम चरित्र कहा, पुनि सब पुत्र प्रमानि ॥[1]

इससे पता चलता है कि कृपारामजी ने शासन-सचालन-काय म भी सक्रिय भाग लिया था। राव देवीसिहजी का कृपारामजी पर जैसा, भरोसा था, वैसा ही उन्होने सीकर के सकट के

---

१ रामदयाल कविया कृत अप्रकाशित रायसल जस-सरोज, कलिका ६

समय अपने उपायो से चरितार्थ भी किया। रावदेवीसिंहजी की मृत्यु के बाद जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहजी के दीवान नंदराम हलदिया के छोटे भाई ने शेखावाटी मे धन संग्रह कर मरहठा को शांत करने के लिए सीकर को आ घेरा। यद्यपि नंदराम हलदिया से राव देवीसिंहजी की अच्छी मित्रता थी किन्तु स्वार्थ के सामने किसका मन स्थिर रहा है? ऐसी विषम स्थिति में कृपारामजी राजमाता काघलोतजी के परामर्श से हलदिया के पास गये और सीकर का और हलदिया परिवार की मित्रता का स्मरण करा कर निम्न सोरठा कहा—

समझणहार सुजाण, नर मौसर चूके नही।
अवसर रा अहसाण, रहे घणा दिन राजिया॥

कृपारामजी की कुशलता एवं सीकर के पूर्व उपकार व्यवहार से प्रभावित होकर हलदिया सेना का घेरा उठाकर चला गया। इस प्रकार शेखावाटी प्रांत भयानक रक्तपात से बच गया।

कृपारामजी नीतिनिपुण, सभाचतुर और इतिहासविद् व्यक्ति थे। किन्तु, यह तो उनके जीवन की राजनीतिक एवं सामाजिक झलक मात्र ही है। इन सब से बढ़कर वे उत्तम कोटि के जन कवि थे, जिसके कारण जनमानस में आज भी उनके कृतित्व के प्रति गहरी आस्था और आदर है। यद्यपि इनका कोई पूरा ग्रंथ अभी तक उपलब्ध नही हुआ है फिर भी इनके अपने सेवक राजिया दरोगा को सम्बोधन कर रचे गये लगभग १६५ सोरठे प्राप्त है। इन सोरठो के कारण कृपारामजी शिक्षित और अशिक्षित समाज में आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण किये जाते रहे है। प्रसिद्धि है कि राजिया के कोई सन्तान नही थी। इसलिए वह अन्यमनस्क रहता था। कृपारामजी ने उसकी उदासीन आकृति देखकर उससे खिन्नता का कारण पूछा। राजिया ने सन्तान के अभाव में अपनी वंश परम्परा न चलने की बात कह कर दुख प्रकट किया। कृपारामजी ने उसके नाम के सोरठे रचकर उसे संसार में अमर कर देने की बात कही। राजिया के सोरठो की रचना के मूल मे यही कारण था। कृपारामजी ने जैसा कहा था, वही हुआ। कृपारामजी का नाम तो यदाकदा ही स्मरण किया जाता है, पर राजिया का नाम तो सर्वसाधारण तक के कण्ठो पर चढ कर आज भी अमर है।

राजिया के सोरठे ऐसे मधुर, नीतिपूर्ण और सरल हैं कि जनमानस में कहावतो के रूप में प्रचलित हैं। इन सोरठो ने जैसा प्रसार पाया है वैसा राजस्थान के किसी भी कवि की रचनाओ ने नही पाया। ये नीति और विवेक की सूक्तियो के रूप मे प्रचलित हैं। यही नही कृपारामजी ने अपने भृत्यो को सम्बोधन कर सोरठे रचने की जिस पद्धति को जन्म दिया उसका उत्तरोत्तर विकास होता आ रहा है। कृपारामजी के अनुकरण पर राजस्थान एवं सीमावर्ती प्रान्तो के कवियो ने भी अपने चाकरो के नामों की छाप लगाकर सोरठो की रचनाएं की है। यह परम्परा आज तक चली आ रही है। कृपारामजी के अनुकरण पर

रायसी सादू ने मोतिया के सोरठे, वजनाथ ने मानिया के सोरठे, राजकुमार रत्नसिंह न चिमनिया के सोरठे, ठाकुर सुमानसिंह न कलिया के सोरठे, महाराजा बलवन्तसिंह न भरिया के सारठे और उदयराज उज्ज्वल न भानिया के सोरठा की रचनाए की है। यह कृपारामजी के सोरठा की लोकप्रियता का अद्वितीय प्रमाण ही माना जा सकता है।

कृपारामजी और उनके रचित सोरठो न सामान्य जना को ही नहीं, अपितु विद्वान् कवियो को भी अपनी ओर आकर्षित किया था। यही कारण था कि महाकवि सूयमल्ल मिश्रण न अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वशभास्कर' म लिखा है—

पीर ह 'कृपाल' भैरव प्रमुख कविजन चारन वस गन।

इसी प्रकार कविराजा भैरवदान (बीकानेर) ने भी चारण जाति क प्रसिद्ध कवियो का नामोल्लेख करत हुए कहा है—

किरपादिराम कवि भो पुनित। जिन रचि उत्तम राजिया नीत।

कृपारामजी की ख्याति के लिए उनके सोरठे ही प्रसिद्ध हैं, पर इनके अतिरिक्त चालक नसनी, लक्ष्मण प्रकाश, डिंगल गीत और चालकराय नाटक नामक लघु रचनाए भी प्राप्त हैं लक्ष्मण प्रकाश अलकारो का ग्रन्थ कहा जाता है, जिसम रावराजा लक्ष्मणसिंहजी का यश-वणन किया गया है। रावराजा लक्ष्मणसिंहजी ने कृपारामजी की पूव सेवाओ और गुणो से प्रभावित होकर उनको ढाणी (कृपारामजी की ढाणी) और लक्ष्मणपुरा नाम के दो ग्राम प्रदान कर सम्मानित किया था ये दोना ग्राम जागीर पुनग्रहण तक उनकी सतति के अधिकार मे चले आ रह थ। कृपारामजी को लक्ष्मणपुरा सम्वत् १८५८ मे रावराजा लक्ष्मणसिंहजी ने पुष्कर स्थान पर दिया था। जिसकी साक्षी म निम्न षट्पदी अवलोकनीय है—

सुधि अट्ठारासै के, आगर, पुनि अट्ठावन।
वद असाढ तिथ वीज, प्रगठ दिनकर दिन पावन॥
सह गयद सिरपाव, कडा भूषण मोताहल।
सासण लछमणपुरो, जमी नपालू साअल॥[1]
पुहकर सुथान मिलिया नपति, अति उदार [illegible] अच्छ।
कृपाराम रीझ सेखा तिलक, लहर एक दीधो सुलच्छ॥

कृपारामजी के सारठे तो अनेक स्थानों से प्राप्त होते हैं। यहा उनके गीत और एक रचना 'चालकराय नाटक' अवलोकन के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। गीत राठौडो की मेडतिया शाखा के ठाकुर देवीसिहजी दूदावत के पुत्र कु० सालिमसिंहजी की प्रशसा मे रचा हुआ है। गीत मे कुवर सालिमसिंह को गणेश के समान बुद्धिनिधान सूर्य के समान तेजनिधान, हनुमान के समान बलनिधान और कामदेव के समान रूप-निधान जैसी उपमाओ से अलङ्कृत किया है।

गीत

महारुद्र रे मातग धु उग्रधीस गरण तेज धाम,
द्राही कणे मद्दरे भूवला द्रोणधार।
जादवा इद्ररे वणे मनोज कुमार जेहो,
श्रेहो देवीसिंध तणो आहसी कुमार ॥ १ ॥

जीतमी जराराबाळो हेरम्बी उपायजादो
जाधार धराराबाळो वायजादो जेम ।
ईसान पराराबालो सभरा रत्तायजादो,
अनम्मी हराराबाळो रायजादो श्रेम ॥ २ ॥

धूदाण खाटवो तण भक्रतुण्ड धार मेघा,
सूदांण आटवी तणँ कूदाण केसोत।
मूदाण थाटवी तणँ जेहडो पताखामीन,
दूदाण पाटवी तण महडो देसोत ॥ ३ ॥

विसू जोग हेडता छातरे गणाधीस वीर,
वेला अव खेडता छायरे प्रलम्वेस।
तवीनाथ फेडता छातरे अक्वेत तेहो,
मेडता छातरे पुत्र श्रेहो सालमेस ॥ ४ ॥

आसतीक ओपवेता वोध वासतीक श्रेहो।
सोभा कामरूप लेता सासतीक सग ।
अहेता विनासतीक जेता रासतीक श्रेहो,
श्रेता आसतीक जेता वासतीक अग ॥ ५ ॥[1]

राजिया के सोरठे जितने सरल और सादगीपूर्ण हैं, गीत उतने ही कठिन और क्लिष्ठ हैं।

गीत के अतिरिक्त कृपारामजी रचित चालक नेचरा नाटक शीर्षक लघु रचना मिली है। सम्भव है यह उनके चालक नसैनी काव्य का ही अंश हो। इस रचना म कवि न चालक माताजी के शृङ्गार और नृत्य का वर्णन किया है। माताजी के आभूषणो की ध्वनि एव नृत्य का बडा सजीव चित्र प्रस्तुत करने वाला वर्णन है। रचना अवलोक्य है।

अधनारी सज साग अखाडै, आच खपर से खाग उघाडै ।
बाजोड डमरू डाक बजाडै, जोगणि सूतोड नाग जगाडै ॥
साथ मुलर से सगति सहेली, घत घूमरदे रूपनहेली ।
अतर फुलेल किया अलबेली, तीन लोक ऊपर छबि टेली ॥

---

१ साहित्य सस्थान में सुरक्षित डिंगलगीत संग्रह पत्रावली स ।

काना हुस विराजै कुंडल, ग्रद्द रूप दीपै चन्द ऊजल ।
बणि पोसाक जरीकस वद्दल, जा बिच गात झलक्कै बीजल ॥
घगा चोर धारिया घूघर, ग्रसन सवारी बालाइ सुन्दर ।
रमत मात मन रगयळ ऊपर, सूधा सिखर ग्रलग ग्रघफर ॥
खड्ग स खपर हाथ लिया मुख बीडी मक्कर मुख ऊपर चलियाँ ।
खण बाहण बवर साथही सकर नक्कर नर सुर नाग नमैं ।
बणि जवान घडी खिण बुढिय बाळक रामत चालक नच रमैं ॥
चटकी दे ताळी फिरत उताळी रमत कमाळी सुरराया ।
कुंडळ किरणाळी दीप दिवाली मगल जाळी महमाया ॥
चालक चिरताली मद मतवाली वरणि पियाला गाढ़घमैं ।
बणि जवान घणी खिण बुढिय बालक रामत चालक नच रमैं ॥
तिलडी लड लटक्त तड्ता सटक्त गटक्त भाजन मुद्द गिला ।
पीवत मद भटकत प्याला भटकत थटकत नित मन रग थला ॥
नाचत ग्रत नटकत ग्रलका छिटकत भैं चरा ग्रटकत बास भमैं ।
बणि जवान घडी खिण बुढ़िय बालक रामत चालक नच रमैं ।
तन तेज झलक्कै बीज भलक्कै हार हलक्कै हीर हिय ।
गन हास ठलक्कै नग्ग पलक्कै मधुर मुलक्कै हास किये ॥
ठम चाल टलक्कै वैण ललक्कै सेस सलक्कै जेण समै ।
बणि जवान घडी खिण बुढिय बालक रामत चालक नच रम ॥
घुघर पाय घणणणणण गाज गिर गणणणणण ग्र बर सणणणणण
भणणणणण ग्रदग ताल भणक्कै ।
खजर खणणणणण झोझा झणणणणण नेवर ठणणणणण
डमरू डकक्कै ॥
फिर फोरा फणणणण घूमर घणणणणण जेवर जणणणण
खणणणणण कचन चूड खिम ।
बणि जवान घडी खिण बुढिय बालक रामत चालक नच रमैं ॥
गूथै यो ग्रगजरा ग्रो पैंड ग्रजरा रग सो सजरा हाथ रख ।
खिम लोयण खिजरा कठहि कजरा ईसर मुजरा आय ग्रखं ॥
ल घूघट लजरा ग्यान सा गुजरा आगत गुजरा खेलन मैं ।
बणि जवान घडी खिण बुढिय बालक रामत चालक नच रमैं ॥
तर गिर थडी रच नव खडी दाणव दडी गयण रसा ।
सिस भाण समडी पिंड प्रचडी उमग उदडी रूप इसा ॥
चिरता धन चडी बप्प ब्रहमडी जगत ग्रखडी जाय रम ।
बणि जवान घडी खिण बुढिय बालक रामत चालक नच रम ॥

छप्पय

रामत चालक मैं जको गति लखी न जावै ।
इन्द्र करत आदेस, परमगत लखी न पावै ॥

सेस नवावत सीस घिनो श्रत तूभ सकत्ती।
श्राई श्रादि श्रनादि पुरस पुराण प्रक्रत्ती ॥
सुर श्रसुर पार पावै नहीं श्राप बडा छो ईस्वरी।
चालक देवी चरत चवै जयो मात जोगेस्वरी ॥[1]

कृपारामजी की कृपा से राजिया ससार मे श्रमर हो गया। कृपारामजी को जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने जोधपुर बुलाया था। श्रपनी वृद्धावस्था के कारण वे जोधपुर नही जा पाये श्रौर उसी श्रर्से मे उनका देहान्त हो गया। फिर मानसिंहजी ने कृपारामजी के पुत्र नगरामजी को कहलवाकर राजिया को देखने की इच्छा प्रकट की। महाराजा ने कहा कि—"वह राजिया कैसा है, जिसको कृपारामजी ने इतना प्रसिद्ध कर दिया ?" तब फिर नगरामजी ने राजिया को जोधपुर महाराजा की सेवा मे उपस्थित किया। राजिया छोटे कद का पुरुष था। महाराजा मानसिंहजी ने उसे देख कर निम्न लिखित सोरठा कहा—

सोनेरी साजाह, नग कण सू जडिया जकै।
कीनो कविराजाह, राजा मालम राजिया ॥

महाराजा मानसिंहजी ने राजिया को पुरस्कार देकर वापस भेजा। कृपारामजी के पुत्र नगरामजी भी विद्वान्, विचारक श्रौर पुरुषार्थी व्यक्ति थे। ये महाराजा मानसिंहजी के पास ही रहते थे। इनको मृत्यु पर महाराजा मानसिंहजी को श्रपार वेदना हुई जो उनके स्वरचित मर्सिय से प्रकट होती है—

जस रूपक जोडीह, थो खडियो बुध रो श्रथग।
नग्गो नग कोडीह, देगर क्यू खोस्यो दई ॥

१ दीपपुर (सीकर) के कविया मानदानजी कल्याणदानजी के निजी सग्रह स।

कविवर चैनकर्ण सांदू : एक परिचय



जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह विचित्र रुचि के शासक थे। उनका चालीस वर्ष का दीर्घ शासनकाल भयंकर राजनैतिक उथल-फेर, मानसिक अशांति, घोर विषमता और अनवरत विग्रहों में बीता था। महाराजा भीमसिंह और उनका भयानक विरोध ठाकुर सवाईसिंह पोकरण और धौकलसिंह के प्रश्न को लेकर उनका संघर्ष, महाराजा जगतसिंह कछवाहा और महाराजा की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह को लेकर युद्ध, नाथों का अनुचित हस्तक्षेप उनके राजकुमार छत्रसिंह का युवराज-पद-ग्रहण करना, मरहठों और अमीरखान आदि की लूट-खसोट तथा अंग्रेजों का प्रभाव आदि सभी क्रांतिकारी घटनाएं उनके शासनकाल में घटी थी। यह सब होते हुए भी उन्होंने अपने काल में संगीत कला, इतिहास और काव्य के सर्जन में चमत्कारी प्रतिभा का परिचय दिया था। उन्होंने स्वयं तो उच्च कोटि के साहित्य का निर्माण किया ही किन्तु, उनके कवियों को आश्रय प्रदान कर जोधपुर को द्वितीय काशी भी बना दिया था।[1] उनके आश्रय के माध्यम में एक सौ से अधिक कवियों ने वाणी की साधना कर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रणयन किया। म० मानसिंह ने पुरस्कार देने के अतिरिक्त चारण कवियों को इकसठ ग्राम भी प्रदान किए थे।[2]

उनके दरबार के चारण कवियों में कविराजा बांकीदास की कोटि के पच्चीस चारण कवि थे। कविराजा बांकीदास का काव्य तो प्रकाश में आने के कारण विद्वानों की चर्चा तथा मूल्यांकन का विषय बनकर प्रसिद्ध हो गया और अन्य कवियों की कृतियां अद्यावधि हस्तलिखित गुटकों तथा पोथियों में बिखरी पड़ी हैं। महाराजा मानसिंह के दरबार के उन पच्चीस कवियों में एक कवि चैनकरण सांदू भी था। पच्चीस कवियों के चित्र में हाथी पर उसका भी चित्र है।

चैनकरण का जन्म सम्वत् १८२५ वि० के आसपास चारणों की सांदू शाखा में हुआ था। इनके पिता का नाम स्वरूपदान था। स्वरूपदान बादशाह अकबर के समसामयिक और

---

१ जोध बसायो जोधपुर, व्रज कीनी व्रजपाल।
लखनऊ काशी दिल्ली, मान करी नैपाल॥

२ इकसठ सासण अप्पिया मुरधर मान महीप।

सम्मान प्राप्त कवि माला सादू की सतति-परम्परा म थे। उनका निवास राजस्थान के नागोर जिले मे भदोरा ग्राम म था। स्वरूपदान के पूव-वशजा मे हुआ सादू करमानद, माडरा, हरिदास, माला, ईश्वरदास, कु भकरण, दलकण आदि अपने समय क विद्वान् और ख्याति प्राप्त कवि थ।[१] स्वय स्वरूपदान भी इतिहास काव्य और छदशास्त्र का विद्वान् था। स्वरूपदान के विवाहोपरान्त जब कोई पुत्र नही हुआ तब भगवती योगमाया की आराधना की। फलत भगवती के वरदान से चैनकरण का ज म हुआ। उसने अपनी रचनाओ म योगमाया के प्रताप से पुत्र-लाभ का भावपूर्ण वणन किया है। चैनकरण को स्वरूपदान ने बाल्यकाल म ही विद्याध्ययन करवा कर योग्य बना दिया था। वह काव्य, इतिहास, छद और पौराणिक साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर जोधपुर के महाराजा विजयसिंह और भीमसिंह (स १८५० १८६० वि) क दरबार म उपस्थित हुआ। महाराजा ने उसके काव्य-चातुर्य से प्रसन्न होकर अपने कवियो मे स्थान प्रदान कर सम्मानित किया।[२] जब महाराजा भीमसिंह का देहा त हो गया और महाराजा मानसिंह जालोर से आकर राजसिंहासन पर आरूढ हुए तब चैनकर्ण उनका दरबारी कवि बन गया। महाराजा मानसिंह के दरबार म उसका कविराज बाकीदास के समान ही प्रतिष्ठा का स्थान था। कविराजा बाकीदास के चाचेरे भ्राता कविराज बुधदान ने महाराजा मानसिंह पर रचित दवावत ग्र थ मे महाराजा के कवियो के वर्णन मे बाकीदास के वर्णन से पहिले चैनकर्ण के बावेरे भाई सग्रामदान और चैनकरण तथा पीथा (सिंहू ग्राम का) का वर्णन करते हुए लिखा है—

"और भी सादुओ मे चन ग्रह पीथ। डीगल में खूब गजब जिसका गीत।" तदनन्तर कविराज बाकीदास का परिचय अकित किया है। इससे स्पष्ट होता है कि चनकरण का तत्कालीन कवि और सामन्त समाज मे बाकीदास के समान ही सम्मान था। चैनकरण की प्रतिष्ठा इससे भी प्रमाणित होती है कि वह गजपाव और लाख पसाव प्राप्तकर्ता कवि था। उसके समवर्ती कवि जगमाल मोतीसर के एक गीत मे उसे चौरासी प्रकार रूपको का रचयिता, अनोखा कवि और म० मानसिंह का विशिष्ट कृपापात्र कहा गया है। उदाहरणार्थ वह गीत उत्तरोक्त रूप मे अलोक्य है—

गजां ठेल दङ्खवै बाधव गाव पावणां गजा,
जग वदै छतर धर भलम जैनो।
भालरै घराण तणा दहु कुल मुगट,
चकारा रूप समराम चनो ॥१॥

१ द्रष्टव्य वरदा (७।२) मे मेरा लेख, कु भकरण सादू और राव रायसिंह नागोर की सतियो के कवित्त।

२ प्राचीन डिंगल गीत के आधार पर।

उभ ही भ्रात गजपात वक्ता उकत,
बडे चित प्रभत दहु जगत बादू।
पगत दहु जोड सांसणहसत पावणां,
सवालख दियण दत राव सादू ॥२॥
मदोर मुदी नौखा गुणा माखणा,
भ्रसो चत्र गुणा जाणक भ्रपारा।
देनावत सुतन सारूप भाई दहु,
विजाई मालदे भ्रेण-बारा ॥३॥
नाथ री मान महाराज री सुभ निजर,
नखत दहुवा तणै कसर नाही।
महाकव भीमहर माहहि नह कामणा,
मणा नह खीवहर हरा माही ॥४॥

महाराजा मानसिंह के आध्यात्मिक गुरु देवनाथ तथा उनके शिष्य लाडूनाथ का महाराजा मानसिंह के समय मे बडा प्रभाव था। चैनकरण पर भी उनकी विशेष कृपा थी। लाडूनाथ ने जिन २५ प्रसिद्ध कवियो को हाथी और लाख पसाव दिया, उनमे चनकरण का भी नाम है।[1] कवि चनकरण जसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है ब्रज, और डिंगल भाषा का सुपठित विद्वान् था। उसने महाराजा भीमसिंह महाराजा मानसिंह और उनके सामन्तो तथा प्रमुख राज्य कर्मचारियो पर बडी सख्या मे काव्य रचा था। ग्रथ रूप मे कवि रचित 'कीरत प्रकास' खण्ड काव्य मिलता है। इसमे नागौर के सखवास ठिकाने के ठाकुरो का वरणन है। राजस्थानी के विविध छदो मे कवि ने इस कृति का सवत १८५२ वि मे सजन किया था। यह काव्य साचोरा चौहानो के इतिहास के लिए अति उपयोगी है। यहाँ कवि की विभिन्न ग्रथो मे बिखरी हुई रचनाओ की एक सूची प्रस्तुत की जा रही है, जिससे उसके सजन की मोटे रूप मे जानकारी मिलेगी—

(१) छप्पय महामायाजी रा १२
(२) नीसाणी महामायाजी री १
(३) कवित्त क्रिसणा अवतार रा ११
(४) कवित्त महाराजा भीमसिंगजी रा ३१
(५) गीत महाराजा मानसिंघजी रा ३३
(६) गीत करणीजी रा २
(७) गीत देवनाथ रो १
(८) गीत करमा सता रा २
(९) गीत सूरजजी रो १

१ राजस्थानी शोध सस्थान के चित्र सग्रह मे गजारूढ २५ कवियो का एक चित्र है।

(१०) गीत ठाकरा केसरीसिंघजी री सतिया रा २
(११) कवित्त महाराजा मानसिंघजी रा ७१
(१२) दवावैत महाराजा मानसिंघजी री १
(१३) छ द भुजगी महाराजा मानसिंह रौ १
(१४) दूहा महाराजा मानसिंघजी रा १४
(१५) कवित्त दूहा महामाया रा १३
(१६) गीत कवित्त श्री नाथजीरा ४१
(१७) गीत कवित्त देवनाथजी रा गीत ६ कवित्त २१
(१८) देवनाथजी रो रूपक छद २५ (स १८६७ रचनाकाल)
(१९) गीत कवित्त भीमनाथजी रा गीत १ कवित्त ५
(२०) कवित्त जलधरनाथजी रा २१
(१) गीत कुण्डलिया लाडूनाथजी रा गीत २ कुण्डलिया ५
(२२) गीत अमरसिंघजी रावजी नागौर रौ १
(२३) गीत कवित्त ठाकरा बखतावरसिंघजी भादराजूण रा गीत ५ कवित्त २७
(२४) कवित्त रायपुर ठाकरा रूपसिंहजी रा ५
(२५) कवित्त व्यासजी कचरदासजी रा ५
(२६) गीत दूहा गोरधनजी खाधल रा गीत २ दूहा ५
(२७) गीत चापावता री १
(२८) गीत सिंघवी गुलराजजी री १
(२९) गीत कू पावत हरीसिंघ रा १
(३०) गीत जोसी सिभरामजी री १
(३१) गीत सिंभूसिंघजी चुवाण री १
(३२) गीत नागौर रा अचलदासजी री १
(३३) गीत तेवजी धाभाई रा २
(३४) गीत दूहा ठाकरा देवीसिंघजी मारोठ रा गीत २ दूहा १२
(३५) निसाणी धाभाईजी री १
(३६) गीत कुचामण ठाकरां रणजीतसिंघजी रा ३
(३७) गीत मोहताजी हरखचदजी री १
(३८) कवित्त जोसी भूरारामजी रा १
(४०) गीत दूहा पोकरण ठाकरां रा गीत २ दूहा ६
(४१) गीत खीवसर ठाकरा रा २
(४२) रूपक सखवास ठाकरा रौ
(४३) गीत दूहा गोरधनजी केरू रा धणी रा गीत ३ दूहा ११

इस प्रकार अन्वेषण करने पर और भी रचनाएँ मिल सकती हैं। 'सखवास ठाकुर री रूपक' तो कवि का प्रबन्ध काव्य है जिसमे कई छदो मे उनका पराक्रम, प्रजापालन, स्वामीधर्म

ग्रोर वीरता तथा उदारता का जम कर वणन किया गया है। चैनकरण सादू के काव्य म विविध विपयो का वणन मिलता है, जिससे प्रतीत होता है कि वह एक प्रशस्तिकार कवि नही था। अपितु तत्कालीन समाज का एक जागरूक ग्रौर दूरदर्शी क वि भी था। मरहठो न ग्रपने ग्रनवरत ग्राक्रमणो से राजस्थान की राजसत्ता को ग्रान्दोलित ही नही किया था ग्रपितु यहाँ के निवासियो ग्रौर शासको को लूटकर ग्रशान्ति का भी वातावरण बना दिया था। मरहठो के उत्पात क कारण राजस्थान के राजाग्रा को ग्रग्रेजो की दु खदायी शरण प्राप्त करने के लिए वाध्य होना पडा। राजस्थान के जाग्रत कवि चनकरण ने ग्रग्रेजो के दुष्प्रभाव की ग्राशका का ग्रनुमान कर यशव त राव दक्षिणी के उनसे भरतपुर मे हुए युद्ध का वर्णन करते हुए एक गीत मे लिखा है—

लियण भरथपुर थाय एकठ फिरग ग्रायलग, जाय तोया निकट लाय जूपी।
वाहि खग घाय दल बादला विखेर, राय जसवत दिखण वाय रूपी ।।१।।

वलोवल पूरठ हमके मही चलविचल, ग्रातसा झल प्रवल वके ग्रसमाण।
ग्रनल दिखणाद रा महावल जसा ग्रम, गया उड प्रघल दल सबल फिरगाण ।।२।।

ग्रजदुरग खिसारा तबल सारा गौरा बजे, दहल पुड रसारा हलहमल दु द।
लक दिस प्रभजण सारा वेग लागा, विलायत दिसारा उडे घणा ग्र द ।।३।।

मुणे ग्रगरेज दुघटा जटा मरहटा, झले किम जुवपठा छटा खट झाट।
यम जसा दिखणरा पवन विकट ग्रगे, थटे नह कदै फिरगी घटा थाट ।४।।

गीत मे कवि ने ग्रग्रेजो की सेना को मेघ घटा ग्रौर मरहठा ग्रौर यसवन्त राव को प्रचड प्रसजन के रूप मे उत्प्रेक्षा कर रूपकात्मक वणन किया है। राजस्थान के प्रसिद्ध कवि बाकीदास ग्रौर महाकवि सूयमल मिश्रण की ही नही, ग्रन्य कतिपय कवियो की वाणी म भी ग्रग्रेज विरोधी स्वर पाया जाता है। साथ ही उन कवियो के राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति तथा जागरुकता का भी परिचय मिलता है।

राजस्थान ग्रौर उसमे भी मारवाड म जल का ग्रभाव ग्रौर ग्रीष्म का प्रचण्ड ग्रातप बडा दुख दायी होता है, किन्तु चातुर्मास मे जब भरपूर वर्षा हो जाती है तो यहाँ के जन-मानस का हृदय ग्रानदातिरेक से वासो उछल पडता है। चनकरण साँदू ने ग्रपने गीत मे वर्षाकाल मे मारवाड का उल्लेख किया है। गीत मे कृषि ग्रौर कृषक के महत्व का भी ग्रप्रकट रूप मे सकेत किया गया है। गीत की पक्तिया हैं—

सघण स्रवै घन बल दामण खिमण स सोभत,
वण धरा हरी पोसाक छिब वेस।
छत्रपती मान रै नाथ सुनिजर छजै,
दीप जम्बू सिरै मुरधरा देस ।। १ ।।
ग्रण कुसम सुगधवी लता तरवरा,
छौल जल सरा नद तटा छाजै।

महिपती मान रौ मुलक सिध पतमया,
रुति बिरखा प्रघी सिरै राजै ।। २ ।।
मधुर घण गरज दादुर कुहक मयूरा,
उर हरख मसी करसणा भारौं।
कमध नरियद रै दिपै जोगिन्द कृपा,
मनोहर नर समद चत्रमासै ।। ३ ।।
पाविया नाथ वर सही रा मम पद,
थिर प्रभा लही रा जोधगढ़पान।
छत्रा साथ मोद जिलसए रुता छटी,
मही राजद प्रविचन्न तपो मान ।। ४ ।।

त्यौहार प्रधान राजस्थानी समाज मे तीज और गणगौर के उत्सव नारीसमाज के प्रिय उत्सव माने जाते हैं। गणगौर को भगवती पार्वती की आराधना का पर्व मान कर उसका चैत्र मे अठारह दिन तक पूजन किया जाता है और तदुपरान्त उसे जलाशय मे पधरा दी जाती है। इस अवसर पर घुड़दौड तथा ऊंटो की दौड होती है। गाँवो का उन समय का वातावरण अतीव उत्साहप्रद होता है। कवि चैनकर्ण ने गोरमाता तथा नवरात्र पूजन का वर्णन किया है। वह वर्णन एक गीत मे द्रष्टव्य है—

वरस माद दिन चत रै मास नर चत्रवरण ध्यान जगमात ।नजरूत धावै ।
दव वीसर अवर पूज जगदम्बका, गवर ईसरनणा गीत गावै ।। १ ।।
नह पुर सहर गावा पुरा चहू तरफ, नागदेवा नरा भाव भजनेव ।
तवरता सकत नवधा भगत हुवनित, दुलहि देवी वर महादेव ।। २ ।।
पूज जगमाता नवरात सेवा परम, प्रगट ग्रहु लोक जनमनवचन प्रीत ।
इसा नह देव किणही वखे अवरा र, गवर रा त्रिपुर उच्चरग उमग गीत ।। ३ ।।

नवरात्र और गणगौर की भांति ही राजस्थान मे फाग का उत्सव भी बडे उल्लसित वातावरण का उत्सव रहा है। यह होलिका के उपरान्त चत्रमास की पचमी तक मनाया जाता है। महाराजा मानसिंह को फाग का बडा शौक था। उनके हाथ मे पिचकारी लिए फाग खेलते हुए का चित्र अत्यन्त ही सुन्दर और भाव पूर्ण है। महाराजा मानसिंह की फाग का वर्णन निम्नलिखित पंक्तियो मे पठनीय है—

कमल फूलिया सकव छिव देख स्वाकृतिकरण, तरफ चहु गुलाला अरुण तावै ।
राज री मान घप छभा रितराज रो, फजर महराज रो तरह फावै ।।१।।
विजाहर दिन दुलह खेलता रग बसत, लेख कव जिसह थल उपम लाभा ।
गुलाला अवीरा छयो जोधानगर, उर्येगिर सहसकर जेम आभा ।।२।।
कमध दरगाह केसर अगर कुमकुभा, बिलद औखाह रग सुगध बरसै ।
उपासक नाथ रा प्रभा फागा अरुण, दिवाकर प्रात रा जेम दरसै ।।३।।
छभा बागा महल सहर घर गिर छया, अवीरां गुलाला सुरग ओलै ।
पेख वदिया जगत फाग जोधाणा पत भाण उदिया गिरद तणे भोलै ।।४।।

महाराजा मानसिंह की काव्य, संगीत, इतिहास और राजनैतिक समस्याओं में जैसी पार दर्शी दृष्टि थी उसी के अनुरूप नये नये प्रासादों का निर्माण और उनका पुनरुद्धार करने में भी पर्याप्त रुचि थी। स्थापत्य कला के प्रति उनके अनुराग का बोधक एक गीत कवि चैनकरण का यहां उद्धृत है। इसमें जोधपुर किले में नये महल, जयपोल द्वार और चाकेलाव स्थान के निर्माण का सुरुचिपूर्ण उपन्यास किया गया है—

आछी सला रै विचारणै भामणा मान दुजा अजा,
जांगिदां जलारै तावै यद सो जणाव।
भुरज्जा सफीला पोलां महला भला र भाव,
बणाव अनोखा जोध किला रै बणाव ॥१॥
चाकलाव जाहरा जपोल अवारया चौजा
औछाहरा समाजा नाथ रे पाण अेम।
जगा जोत वाहरा मेर रै श्रंगा जेम जड़ै,
जोधा आसेर रै हेम जवाहरा जेम ॥२॥
अलगा उतगा द्युति कैलास परस आभ,
हेरवा मद्युति प्रभा रजै प्रथी हेर।
दादा आगै नवगढा मुदी रौ मुरातबो दीधौ,
सही कीधौ मान अपा जुदो रौ सुमेर ॥३॥
नाथ अपा दुरगा थगारै श्री गुमाननंद,
अेहो पाव दुवा आसथान रौ ओपाढ़।
गढ़ा भूलोक रा सू जोधाणा रै हजार गाढ़,
गढापती अगजी मान रौ दियो गाढ़ ॥४॥

कवि चैनकरण ने मारवाड़ में वर्षा की उपयोगिता और उसके बरसने पर जन-मानस के आनन्द को भी अपने गीतो में स्थान दिया है। इससे कवि का प्रकृति प्रेम ही प्रकट नहीं होता है, वल्कि कवि दृष्टि की व्यापकता का भी भान होता है। उसके वर्षा वर्णन को एक गीत में निम्न प्रकार पढ़िए—

बछंत मन हेत सुपाता बरसै, नव निध दरसै विभा अनाज।
सुख मुरधर विलस दिन साजो राजा मान ताहरै राज ॥१॥
सर भरिया हरिया मन सोहे, घोणा वहो घर-घर धन धान।
प्रजा सुखी जस दवा पयपै, गढपत अवचल सुतण गुमान ॥२॥
वरण च्यार खाटे मट वर्ण, धिन तपस्या नवकोट धणी।
हरचंद विजै वार जेही हुव, तिसी वार धप तझ तणी ॥३॥
सपत ईत अय ताप नसाया, जवर सहाय पत जोगेस।
छत्रपत मान तूझ छत्र छाया, द्वापर थाया मुरधर देस ॥४॥

ऊपर संकेत कर आए हैं कि महाराजा मानसिंह कवियों के पोषक ही नहीं अपितु स्वयं भी उच्च कोटि के कवि, संगीतकार तथा विद्वान थे। उन्होंने कई ग्रंथों का प्रणयन किया है, जिनमें उनका 'नाथ चरित्र' बड़ा सरस और भक्ति से ओत-प्रोत है। चनरण ने नाथ चरित्र की समालोचना करते हुए एक गीत में कहा है—

अई भूप कीधा ग्रंथ नाथ चरित्र मंजुसा उभै,
रीधा सुणै प्रयोतणा कविराजा राव।
सबद्दा अरथ्या बुधा मना रा मोहिया सारा,
जाणजै सोहिया हीरा पनारा जबाव ॥१॥

दूजाजसा जहांन में जणाया सुबुधा जूदो,
छदा रथा नीखा भाव भणाया सुछंद।
तरफ्फा भगती ग्यान उकती छणाया तत,
बणाया सबद्दा छदा जवाहारा ग्रंद ॥२॥

नीखा चोखा उबारणा भाभी श्री गुमाननंद,
जामी नाथ गायरी कारणमई जोत।
प्राचीन रूपका सिरै नवीन वाणका प्रभा,
श्रोपमा जे हीरा पना माणका उदोत ॥३॥

नाथ रै प्रताप अैहा ग्रंथ रच प्रथीनाथ,
उक्कत्ता अरथ्थां छंदा जोई नावै आन।
मद महिलोक राज वसा छत्र हिंदवाण,
महाराजा जोधाणै चिरंजी तपो मान ॥४॥

उपर्युक्त गीत में आजकल पत्र पत्रिकाओं में आमतौर से जैसी आलोचनाएं पढ़ने को मिलती हैं, उसी प्रकार की आलोचना नाथ चरित्र की कवि की वाणी में अभिव्यक्त हुई है। इस प्रकार डिंगल कवियों की आलोचना का यह गीत सुंदर उदाहरण है। महाराजा महाराजा मानसिंह का विश्वस्त सामंत और मंत्री गोवद्धदास धाधला एक उदार और परोपकारी वृत्ति का व्यक्ति था। उसने अपनी कन्या के विवाह के अवसर पर अन्य जातियों की कन्याओं का भी विवाह कर उदारता का परिचय दिया था। वह मारवाड़ के कैरू ठिकाने का स्वामी था। उसके द्वारा कन्या के विवाह पर अन्य जातियों की कन्याओं का विवाह करने तथा याचकों को दान देकर तुष्ट करने पर कवि ने गीत और दोहे रचे थे। यहां कवि की दोहा शैली के परिज्ञान के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

धिन धिन धाधल गौरधन रजवट हंदी रीत।
चित अवसाण न चूक्वे, करतब करतो कीत ॥१॥

धिन धिन धाधल गोरधन, पुन छोरू परणाय।
जीतो माड़े जान जस, जस रा ढोल बजाय ॥२॥

ज्याग सुता परणीजता, दिया सुपाता दान ।
धिनधिन थायो गोरधन, ज्यु हित कवर री जान ॥३॥
किया व्याह अचरज किसो, दियण सुपाता दन्न ।
तू आडै दिन कुन तिलक धजवध गोवरधन्न ॥४॥
माया आ जग मोहणी, देवण दियै न दन्न ।
तू धन समपै करण तिम, धिन हो गोवरधन्न ॥५॥
गढवा पालग गोरधन, ओ धाधल घर आद ।
तू यण घर री कुलतिलक, मोटी लिया अजाद ॥६॥
धजवध राजै गोरधन, कुल धाधल किरणाल ।
अजसै मन कह उसन, उभै पखा उजवाल ॥७॥
सायव मान नरेस, कुरव मुसायव रौ कियौ ।
दाखै मुरधर देस, धिन धिन धाधल गोरधन ॥८॥
दिन दून दातार, समद दान सद साम ध्रम ।
वडहथ हेकण वार, धू जिम अवचल गोरधन ॥९॥
रीझै रूपग राग, धणिया हूँ स्याम ध्रम ।
सदा लियण सोभाग धिनो अभावा गोरधन ॥१०॥
जोधाणै जसवास, धजवधी कह धर्णी ।
दियै गुरधनदास, तू अवचल ऊदल तणा ॥११॥

खेतडी के राजकुमार बख्तावरसिंह का विवाह सम्बन्ध मारोठ के ठाकुर महेशदान की कन्या से निश्चित हुआ था। खेतडी वाले महाराजा मानसिंह के प्रतिद्वन्दी धौंकलसिंह के सहयोगी थे। इस पर महाराजा मानसिंह ने यह सम्बन्ध न करने के लिए ठाकुर महेशदान पर प्रभाव डाला। महाराजा के प्रभाव मे आकर महेशदान ने एक बार तो यह सम्बन्ध स्थापित करने की अस्वीकृति दे दी। किन्तु महेशदान के कुंवर देवीसिंह के न मानने पर खेतडी राजकुमार के साथ यह विवाह हो गया। उस विवाह मे देवीसिंह द्वारा दान देने आदि का जहाँ कवि ने वर्णन किया है, वहाँ महाराजा के दरबार म रहते हुए महाराजा के प्रति—गामी का यश वर्णन करना कवि की निर्भीकता का भी प्रदर्शन करता है। उन सोरठो म से उदाहरण के लिए नमूने का अंश दर्शनीय है—

दवो मोजा देण, विनड खाचतो वधै ।
वस पाता रै वैण, तण महेस कु दण तरह ॥१॥
देवा जिसा उदार, धवला जूप जस धुरा ।
भुज वडपण रा भार, देवो धन धन दर ॥२॥
जस कवाण खाचे जिका, वीकम अण जिण वेर ।
तिण उनमान महेसतण, देवौ सीध दान ॥३॥

कविवर चैनकरण ने नाथ सम्प्रदाय के गुरुओ पर समय समय पर गीत, कवित्त, कुण्डलिये और दोहे सोरठे लिखे थे। राजस्थान और चारण समाज म तो शक्ति के उपासक होने के

कारण नाथ-भक्ति का प्रत्यधिक प्रभाव रहा है। चैनकरण के पूववर्ती अनेक चारण कवियों ने नाथों की महिमा का गुण गान किया है। महाराजा मानसिंह की नाथो के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। फलत उनके शासन काल म नाथ सम्प्रदाय पर मुक्तक और प्रबन्ध काव्य काफी सख्या म रचे गए। कवि चैनकरण ने भी नाथो की महिमा का अपनी रचनाओ मे वर्णन किया है। यहाँ योगिराज जालंधरनाथजी के परिचय का सूचक एक कवित्त दिया जा रहा है—

साद्रू रूपकरण पथ हिंगलाज वहन्ता।
दिया हाथ सिर दहू, नाथ मुख नाम कहन्ता॥
थल सांद्रू माल नै, अथा आतुर थल माहे।
जल कमडल पावियो, कियो उभ कर साहे॥
दलो भीम आसियो, कान चारठ मातसर।
गाडण नैणव मधो, दया सबला लालस पर॥
यो आद बिता सरणायता, दयासिंध वक्षत दियो।
चारणा तणा पालण चरण, चरण सरण जिन चनियो॥

संकेत किया जा चुका है कि कवि का व्रज और डिंगल भाषा पर समान रूप म अधिकार था। यहाँ प्रस्तुत व्रज भाषा के एक कवित्त के उदाहरण मे यह भली भाति प्रकट हो जाता है। यह कवित्त महाराजा भीमसिंह जोधपुर पर रचित कवित्तो मे से है। उदाहरण है—

सिंधुर मतवारे घटान कारे आवर से, गाजत नगारे और धुन घन गाज की।
रग रग बान फहराने तने चाप रग, बादर हहराने ज्यू भमाने छिबि बाज की॥
कामिनी अटान पर दामिनी घटान पर, जरी दुपटान पर सोहे भरीसी मिजाज की।
एक से समाज की ज्यू असवारी आज की, ज्यू राजे सुरराज की रुभीम महाराज की॥१॥

इस प्रकार अद्यावधि अज्ञात कवि चैनकरण सादू की रचनाओ का दिग्दर्शन इन पक्तियो मे करवाने का प्रयत्न किया गया है। कवि की रचनाओ के अध्ययन से उसकी शैली, भाषा तथा वर्णनगत विशेषताओ से स्पष्ट होता है कि उसने डिंगल की क्लिष्ट शब्दावली और परम्परा से प्रचलित युद्धो तथा वीरो के वर्णन तक अपनी काव्य साधना को सीमित न कर गणगौर, फाग, अथालोचन, वर्षा, यहा के समाज के 'धीणा' - धान्य, अग्रेज सत्ता विरोधी प्रयत्नो, शिल्पकला, दान महिमा, उपकार आदि विषयो का भी वर्णन किया है।

यद्यपि कवि के निधन आदि की जानकारी निश्चित रूप से नही मिली है, पर स० १८९१ मे कुचामन ठाकुर के अग्रेजो का विरोध करने का एक गीत मिला है। अत उपयुक्त सवत् के पश्चात् ही कवि का देहावसान माना जाना चाहिए।

चैनकरण का पिता स्वरूपदान और पुत्र चिमनदान भी कवि था। इन दोनो की रचनाए भी हस्तलिखित पोथियो में मिलती हैं।



भूधरदास रचित
राजावतां शेखावतां री वार



राजस्थानी साहित्य मे दवावेतो की भांति ही निशानियो का भी बाहुल्य है । कतिपय ग्रंथ तो सम्पूर्ण रूप मे निशानिया मे सर्जित प्राप्त होते है । छंद ग्रंथो मे बारह प्रकार की निशानिया प्राप्य हैं । निशानी छंदा का एक भेद वार है । पजाबी साहित्य मे राशि-राशि वारें लिखी गई है, जिनमे चंडी दी वार, गुरु खालसा दी वार, गुरु गोविन्दसिंह दी वार, बदा बैरागी दी वार, जैमल पत्ते दी वार प्रभृति अति प्रसिद्धि प्राप्त रचनाए है । किन्तु पजाबी भाषा के लक्षण ग्रंथो को न्यूनता के कारण वार को वे पाघड़ी छद मानते रहे हैं जबकि पाधड़ी और वार दो भिन्न भिन्न छद हैं । इसी भ्राति के कारण श्री साधुराम शारदा ने अपने 'पजाब का मध्यकालीन वीर साहित्य'[1] नामक लेख मे वार के लिए लिखा है कि 'वार की रचना पाघड़ी (पौड़ी) छद मे होनी चाहिए ।' पैडी और पाधड़ी भी अलग-अलग छद हैं । राजस्थानी के लक्षण ग्रंथ 'रघुनाथ रूपक' मे वार निशानी का लक्षण निम्न प्रकार दिया गया है—

> कळ पहली पनरै कळा, पनरै अवर प्रवेस ।
> रगण अंत मोरै रटै, वार निसाणी वेस ॥[2]

अत 'वार' स्वयं एक छंद है, जो पौडी से सर्वथा भिन्न है । छंदो की परिचिति के अभाव में राजस्थानी विद्वानो मे भी वार के विषय मे भ्रम प्रचलित है । वार निशानी रचयिताओ मे चारण कवि केशवदास गाडण ने अपने वेदांत के ग्रंथ 'विवेक वार' मे २९ वार निशानियां लिखी है किन्तु लिपिकार विवेक के साथ वारता की सहज साम्यता समझ कर विवेक वार के स्थान पर भ्रम वश विवेक वारता' का प्रयोग करते देखे जाते हैं । अनेक विद्वानों ने इस भूल को दोहराया है ।[3]

---

१ सप्तसिंधु, अक्टूबर १९६३ का अंक, पृ० ५६

२ रघुनाथरूपक गीतां रौ (सं महताबचंद्र खारैड) पृ० २७८

३ राजस्थानी सबद कोस (राजस्थानी भाषा का परिचय) पृ० १४३ पर भी विवेक वारता ही लिखा गया है ।

प्रसिद्ध चारण कवि भूवरदास पाल्हावत रचित एक ऐतिहासिक महत्व की रचना 'शेखावतों राजावतों की वार' शीर्षक उपलब्ध हुई है। इस मे कवि ने शेखावत शाखा के प्रसिद्ध एवं प्रधान राज्य अमरसर के शासक राव मनोहरदास शेखावत और आमेर के प्रतापी नरेश राजा मानसिंह प्रथम के मध्य लडे गए धोळी स्थान के युद्ध का वर्णन किया है। अद्यावधि प्राप्त कछवाहों के ख्यात तथा इतिहास ग्रथो मे कहीं भी इस युद्ध के विषय मे कोई विवरण उपलब्ध नही होता।[४] एतदर्थ रचना असंदिग्ध रूप से ऐतिहासिक महत्व की है। कवि ने इस युद्ध का कारण राजा मानसिंह द्वारा राव मनोहरदास के राज्य के कुछ ग्रामो पर बलात् अधिकार करना प्रकट किया है।

राव मनोहरदास और राजा मानसिंह दोनो कछवाहा कुल के समसामयिक शासक और बादशाह अकबर के सम्मानित दरबारी एवं सेनानायक थे। आमेर के राजा उदयकरण के ज्येष्ठ पुत्र राजा नृसिंहदेव की सतति-परम्परा मे राजा मानसिंह दसवें वंशधर थे और राव मनोहर दास राजा उदयकरण के तृतीय पुत्र राव बाला के वंश क्रम मे सातवें शासक थे। इस प्रकार मानसिंह और मनोहरदास परस्पर एक ही कछवाहा कुल के शासक थे।[५]

इसमे कवि ने राव मनोहरदास को विजय प्रकट की है। साथ ही उसके पक्ष के प्रसिद्ध योद्धाओं मे उग्रसेन नृसिंहदासोत दोराला के ठाकुर (राव के भतीजे), तालवा के स्वामी नाथा भगवानदास जाहोता का ठाकुर (राव के पाचवे भ्राता), अचलदास भगवानदासोत जाहोत.,, ईश्वरदास (राव के भाई), लाडखान और कल्याणदेव पिता पुत्र (ठिकाना खाचरियावास वालो के पूर्वज, डूगरसी, गोयददास, (प्रताप), सीदा, भीम का पुत्र भगवान, पातू, बल्लू, हेमा आदि का युद्ध वर्णन किया है।

राव मनोहरदास का निधन बादशाह जहांगीर के शासन काल मे सन् १६१६ ई० मे दक्षिण प्रान्त मे हुआ।[६] उसके पश्चात् क्रमश पृथ्वीचद, रायचन्द और तिलोकचन्द उत्तराधिकारी हुए। राव तिलोकचन्द द्वारा कवि भूवरदास और उसके भाइयो को चार ग्राम प्रदान करने का उल्लेख मिलता है—

'रायचद' महाराय की, पाट तिलोकचद पाय।
दाती करण दराजतै, कळि मे फेर कहाय॥
'सावळ बारठ' च्यारि सुत, ग्रम चोव धौ अप्पि।
सोल सै बाणव समय, थिर भूमि जस थप्पि॥[७]

---

(४) Geneological Table of Kachawahas by Harnath Singh Dundlod Page-3 4
(५) रायसलजस सरोज रामन्याल कविया कृत द्वितीय कलिका पृ ५५ (ह, लि)
(६) मुगल दरबार प्रथम भाग अनु० ब्रजरत्नदास पृ २७८
(७) रायसलजस सरोज रामदयाल कविया कृत द्वितीय कलिका (ह लि)

यह सदर्भ कविराजा बाकीदास की ख्यात में भी इस प्रकार उल्लिखित है—सेखावत मनोहर-पुर रै राव पालावत बार गिरधरदास नै गोविंदपुरो दियो, भूधरदास नै हणुतियो दियो, केसवदासजी नु किसनपुरो दियो, वनमाळीदासजी नू कल्याणपुरो दियो।[८] अत भूधर दास राव तिलोकचन्द का राज्य कवि था और सेखावता राजावतो री वार' का रचनाकाल सवत् १६६२ वि० के समीप ही माना जाना निश्चित है। इस प्रकार यह रचना अत्यन्त ही प्रामाणिक एव ऐतिहासिक महत्व की है। रचना प्राप्य रूप मे प्रस्तुत है—

अर्पं साईं सहम नाम खेल रच्चे परात। 'करव' 'पाण्डव' अेक कुळ धूत भाई नाते ॥
दुनिया वावन देख ही आवदे जाते। किंतं भूले आयपण नाळ जमी राते ॥
जमी सब उपन्निया सिर जमी भडग्ग। 'राजा' 'सखा' अेक कुळ राजि जमी अडदा ॥
धरती सुगी अचपळी मब पडे चेडग्ग। तिस धरती कारण घर विरख पडदा ॥
दव्वे काकड मानसाह सीम रहै न अप्पण। इत्थू दरपण भाळियो क्या करै दरप्पण ॥
रब्ब सजोग परठीया नर घोडा खप्पण। लाभ धरती मानसाह भूला भाई पण ॥
दीया मनोहर मान कू विहठाला ठावा। राजा राज न लग्गियै पर वेघ गिरावा ॥
कूण सधै कूण नीकळ भरि पूठी पावा। चगी होइ न मान साह घर कग भिरावा ॥
गल्हा मान न मन्निया था रज खूम अलब्धी। मूर्छ नाळ न रोडिय, होइ दावा वध्धी ॥
म पतिसाह नमाविया कूट प्यारे सध्धी। जेहा रामण मडळी मीच पाय बध्धी ॥
दव्वी भौमि न देस्सा लग ओळग अध्धी। खरी दुखानी कढ्ढणी सीहा दी खध्धी ॥
गल्ह मनोहर आखिया मन धग्गी न सका। भौमि न छोड अप्पणी राव राजा रंका ॥
'धौळी' अर 'आवेर' विच दहसिर की लका। ज्यू तू मान महीप म मनोहर वका ॥
राव धरती कारणे भरि रोस विरच्चे। भौमि आसामी मानसाह लीयण लालच्च ॥
अति गुसाईं गू यडा दर भीडी सच्च। इवक जरदा अप्पणा पर न पच्चे ॥
'उगरा' आइ सुनक दी मडत न मच्चे। जाणी धरती रक्खिया आतीहा वच्चे ॥
राय मुहा फरमावीया घर भारज तुट्ठे। 'उगरा बाहर भौम दी ले बीडा उट्ठे ॥
सच्चे राजी साईंया बेगजी मुट्ठे। इवक आसाढा 'मानसाह' मान सू भद मुट्ठे ॥
'उगर करार परठीया जीवत रठ। इत्ती न छड्ड अप्पणी नालि मुई उट्ठे ॥
'मान' बटवका अप्पणा अेहा फुरमाय। भू ली गरांम न छड हो विधि प्राण वसाय ॥
सब 'राजावत' अेकठे दळ समिळि आय। देस न किज्जे अप्पणे जे होहि पराय ॥
घया मन सोवै गामम्म यह सीह जगायै। चूकै मसलत साह भूप के घर हायै ॥
'कूरम' 'अगर' अक्खिया छत्तीह वरग्गै। धरती कारण होइय सग्गै प्रण सग्गै ॥
पीहरै अणी अणण सब ळो दै जग्गै। रूण म ल्हारै, बार दे ओळाए भग्गै ॥
छत्ती मूळ न छड हो दम्मामे वग्गै। अे दळ पायक मान दे खिरहाणै लग्गै ॥

(८) रायसल जस सरोज कविया रामदयाल कृत द्वितीय कलिका (ह लि)

(९) बांकीदास री ख्यात न० ४९ नरोत्तमदास पृ १८२

एकत मुळगा धाढि गरधर वेध पयन्ना । नेपणहार उतावळे रखपाळ प्रमन्ना ॥
होही न धाई छिपाईया बसदर छन्ना, । भिडे सगोत्रा भाईयां गोधम उपन्ना ॥
धाई धाई म्रख्यिया धर वेध उकट्टी । मरदा घाश सासती हेळचळ चहु रट्टी ॥
गजरां बेडा छाडियै पीलवाण चहुट्टी । धरि धरि गड्डा पैलीय भरहर द पट्टी ॥
सन नर रू जग हैमरा भरि सिलह समट्टा । हुई मुरतब फौज सुह गहमह नग रट्टी ॥
'नाथा' 'दूगरसी' निवड प्रवसाण प्रमिट्टा लाडा फौजी 'लाडखान' सिरदार सट्टा ॥
कळह न ध 'कल्याणदे' भगि पाव मोहट्टा । चढीया फौज वाग करिसिर लिभू थट्टा ॥
भूमि सड़दा हैमरा गिरवर गाहट्टा । ठौर दमामा घोर घण धर प्रवर फट्टा ॥
सिलहा सार भळक दी किर दामिण छट्टा । दतस ऊजळ बगवा गिगन साहु वि गट्टा ॥
धज्जा इद धनखिया रग रग प्रगट्टा । वेहा लसकर मानदा सिर सेत सहट्टा ॥
जाणि दूवाल उमडी परसाळ घट्टा । धाई धाई म्रख्यिया मुह कायर सुक्के ॥
थाट 'मनोहर' राव देरिण काकड रुक्क । चढीया उगरा' आपमल सुरगुर नालि भाई मक्के ॥
प्राहिस प्राय' ईसरा' प्रसि राग उच्चके । 'परणा' सेखा' कुडल भडभीड़' भभक्क ॥
हठी सूर 'हमीरदे न जाळ नरूवर' । बावन खेल 'पठाण' दी ईमाण न मुक्के ॥
'तुवर' 'भाटी' 'चहुवाण' जिमराण मजुक्के । दळमु हुराळे दनड' धाकुर रजवट छक्के ॥
सिनह पातर पज सज विण रावत पक्क । चढीया पाव रकेब दे दम्माम छुक्क ॥
जाणिक वाहर सील दो नर वानर हुक्क । दुई दळ मत्ते प्राहुडे रिणतूर प्रहद्दे ॥
'राजा' सेखा' भाम कजि खधार खहद्दे । गाळी गोळा तीर बीण प्राराण वहद्दे ॥
हाक दिलाळा कायरा प्रोताबळ हद्दे । खेचर भूचर कूनडा प्रचिरज हद्दे ॥
भालि विरत्ता नच्चदा तान पाव टहद्दे । ही हुसीयारे सूर सब राव 'माना' हद्दे ॥
उँगरा' प्रागीळि ऐस दो पाव धरे न मदे । जिण रावत सायणा गजराज वहदे ॥
तुट्टि पये तिथि सीह बांगि राम राम महदे । बाग सावत राव दे सीधू सहणाई ॥
'उगर' सूर हकारीया करि धाई धाई । प्रागळ 'गाहद ईसरा' सिग फौज सवाई ॥
चाचा 'परता' रिण प्रचळ बीदा' बरदाई । 'भीम' हुदा 'भगवानिया' यात प्रिगवाई ॥
बधीया खग 'पातू' बलू' मुखि लज्ज सवाई । खडगा खाटे खडग बळि भड विध्ध भलाई ॥
गलवा 'हेमा' 'भगवान' जित मयड बडाई । वाहे लग्गे वहसा ढाहे वैराई ॥
फत्त धाहे साम दी रिग भीम पराई । मडे सूर मुकाबले भाथां व भाई ॥
'उगरा' बगा लोहड़े नाळ सूर जडव्वडि । वाहे ता बस हत्थिया मुख घाव चडच्चडि ॥
खाळा रत्त पनाळिया खळकत धडघ्घडि । प्रक पय प्रेक हूलसे धड माह्रि तडप्फडि ॥
पयना सूर प्रणोसरे गड कग लडव्वडि । सामि कुढो किर रग मे खेलदी घ्रूवडि ॥
उगरै' तोरा गडी रीया कजि नाम रहदे । लो करि साणि भळक दी प्रवसाण चहदे ॥
वाही ताण रखाव धरि मनि रोम महदे । गड्डी भाल उलालमा रिण कुंजर सदे ॥
साणि लचक्के कुभथळ प्रहिनाण किसन्दे । पीव जाणु पहाड गिर तडवाव वहन्दे ॥
सेखै पाते सूर सब प्रण सल्ल वराणा । खेले उगरा वीर खेत दुसमण घर जाणां ॥
प्रग्गी धारू खेडायें लसकर भानाणा । रुड कुन्ड घट प्रोभड़ा कित्ते सळ हांणा ॥

मरदां जिरहा ऊपरै लेजाइ मुहाणा । तेगों क्या नीसाणीया श्रखि कुत पर्याणां ॥
येजिल्लै दिन्नी फिल्लै फिरि चूर चयाणां । श्रोधा जाणि भडप दी भख लेह श्रयांणा ॥
पाय विसाहे मुणहरू श्रोलादि न भग्गे । माहि जलंदी परीयां उगरा मुह भग्गे ॥
भोत विस्ता गोतीया सह होइ न सग्गे । कळि मळि दळ हूकळ रळि धारा वग्गे ॥
पाघ दुरडा ऊतरै कर पोव श्रलग्गे । घट्टो सूर भाहाड विच सक सोह निलग्गे ॥
घनक जक्क सभाळ विन साहम विलग्गे । फिर बोल द भाति भाति तरळो पसी जग्गे ॥
श्रव्वल परिगह मान दा श्रणपार लसक्कर । बहुळे घोडा मुणहरु हुइ ढेर पयच्पर ॥
च्यद पियारे फायरां तिश्रा तक्के घर । सक्धा वीद श्रप्पछुरा भख पूर पळक्वर ॥
रत पीयदी जोगिणो तर चल्ले पत्तर । हुया मनोहर राव दा जग साका मम्मर ॥

इति प्रमाणे श्रप्पणी गुण गावै 'भूधर' ।
काकड घोली वीर खेत तुम श्रागळि ऊगर ।
भगा वेडी भग ज्यू नाम जिन्ही हूगर ।
पाह चल्लदो भाईया म लुक्के भाई ।
माणू साढ तिह्त्थिया मदा दुनियाई ॥

सुख सूता राजावता थया मति उपाई । क्यू सेखावत रोहीये करि श्राई श्राई ॥
जांण मुक्ख परां ऊठा जे तके पराई । पढ़ै म गल्हां कूडीया हारै श्रव्याई ॥



महाकवि सूर्यमल्ल की बाल्यकालीन कृति--'रामरंजाट'



राम-रजाट महाकवि सूयमल्ल मिश्रण की वाल्यकालीन खण्डकाव्य कृति है। कवि ने विक्रम सवत् १८८२ म अपनी दस वप की लघु वय मे इस कृति का प्रणयन किया था। ग्रथ की समाप्ति पर कवि ने अपने एक दोहे मे ग्रथ की समापन तिथि निम्न प्रकार अकित की है—

सवत् सरस अठारसै, साल बियासी मत।
रवि बसत पाच रहसि, गिरा सपूरण ग्रथ॥

इस प्रकार ग्रथ का रचनाकाल वसतपचमी विक्रमाब्द १८८२ निश्चित है। यही कथन कृति की समापन पुष्पिका से पुष्ट है। विद्वानो ने महाकवि का जन्म १८७२ विक्रमी स्वीकार किया है। जन्म तिथि और राम रजाट की निर्माण तिथि के मध्य दस वप का अन्तर है। ग्रथ म वर्णित महारावराजा रामसिंह हाडा के जोधपुर और झुंझुनू मे विवाह तथा गोठडा के महाराज बलवतसिंह हाडा के उत्तराधिकारी महाराज भीमसिंह का राजतिलक आदि घटनाए भी ग्रथ का रचनाकाल १८८१ वि० को ही प्रमाणित करते है। यही नही महाकवि के समस्त कृतित्व के अध्ययन से तथा भाषा प्रयोग, भावाभिव्यक्ति और वर्णन शैली से भी राम रजाट कवि की प्रारम्भिक काव्यकृति परिलक्षित होती है। कृति में अनेक ऐसे शब्द प्रयोग उपलब्ध है जिनमे अप्रौढत्व प्रकट होता है।

काव्यकृति का वर्ण्य विषय अपने आश्रयदाता बूंदी नरेश महारावराजा रामसिंह हाडा की तीज पर्व की राजसी सवारी, बूंदी की वर्षाकालीन सौन्दर्य छटा नारियो का नख शिख वर्णन, विजयादशमी पर्व का वर्णन महारावराजा के जोधपुर और झुंझुनू मे हुए दोनो विवाहो तथा बरातो का वर्णन, बूंदी राजप्रासाद और वहा की ऋतुकालीन प्राकृतिक सुषमा का चित्रण, सामतो, राजसभा के विद्वानो, हाथियो घोडो किला, बूंदी नगर, शस्त्रो और आखेट का वर्णन है। कल्पना और इतिहास दोनो प्रकार से काव्य का महत्व है।

वसे यह १४६ छदो का काव्य है किन्तु त्रोटक, पद्धरी, विद्युन्माला, मोतीदाम और त्रिभगी आदि २८-३० पक्तियो के लम्बे छन्दो की एक-एक छद सख्या ही अकित है। इसम दोहा, वेताल, पद्धरी, द्वि अक्षरी, रोमकंध, त्रिभगी, मोतीदाम, छप्पय, हणुफाल, कवित्त, सोरठा

अर्द्ध नाराच, निशानी, त्रोटक, सारसी, गीत, झपताल, भुजगी, भुजग प्रयात, प्रभृति २१ जाति के छदो का कवि ने प्रयोग किया है। दस वष की बाल्य वय मे गीत, सारसी, झपताल और रोमकय जैसे कठिन छन्दो का प्रयोग निस्सदेह कवि की उदीयमान प्रतिभा का द्योतक कहा जा सकता है। अल्पायु मे विविध छदो का ज्ञान और प्रयोग दैवी-सिद्धि का ही फल माना जा सकता है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि राम-रजाट मे कल्पना और इतिहास का सुन्दर सयोजन हुआ है। ऐतिहासिक पक्ष मे कवि ने महारावराजा रामसिंह के पूवज राव नारायणदास, राव सुरताण, राव नरबद राव अर्जुन राव भोज, राव रतन, राजकुमार गोपीनाथ, राव शत्रुशाल, राव भावसिंह रावराजा बुधसिंह महारावराजा उम्मेदसिंह, महारावराजा अजीतसिंह, महारावराजा विष्णुसिंह आदि के जीवन की प्रमुख घटनाओ का सक्षिप्त वर्णन किया है। उदाहरणाथ बूदी के राव सुजन द्वारा शाही सेवा स्वीकार करते समय सधिकालीन शर्तों का एक झाखडी छद मे उल्लेख किया है, जो इतिहास सम्मत है—

पतसाह अकबर हूंत पटौ, पाव कासीपूर।
विकराळ बावन दुरग वीजा, सरब वटिया सूर॥
दीन बध कटार डोळा अटक तट न उलध।
हुवणो न खिजमत लार हिन्दू अेता राखिया अग॥

इस प्रकार महारावराजा के प्रत्येक पूवज का वणन कर आश्रयदाता महारावराजा रामसिंह की क्षत्रिय वीरोचित बाल क्रीडाओ का वणन किया है। चरित्र नायक के शस्त्राभ्यास मे गिलोल, धनुष, तलवार, बन्दूक और भाला की अचूक निशानेबाजी का वणन उल्लेखनीय है। तदनन्तर महारावराजा रामसिंह का जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह की राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण सस्कार का आलेखन किया है। विवाह प्रसग का महाकवि ने सविस्तार वणन किया है। इसमे बूदी से जोधपुर तक के पथ और पथ मे रात्रि विश्रामस्थलो का तिथिक्रम से स्पष्ट-सकेतन किया है। तब बूदी से जोधपुर आवागमन का माग कौनसा था, इस दृष्टि से यह वणन विशेष महत्व का है। पथ के मुख्य स्थानो मे श्रीनगर, देवली, केकडी सरवाड, रामसर, कावडिस्थान, पुष्कर, आलणियावास, मेडता, बोरून्दा, बीसलपुर शेखावतजी का तालाब और राई का बाग के नाम सकेत दिये हैं। स्थानो तथा मार्गों के वणन स जान पडता है कि कृतिकार स्वय बरात के साथ रहा होगा। महारावराजा के जोधपुर की राजकुमारी के साथ विवाह के पश्चात शीघ्र ही बिसाऊ (झुझूनू) के स्वामी श्यामसिंह शेखावत की राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण करने का कवि ने सक्षिप्त चित्रण किया है। महारावराजा के झुझूनू विवाह करने के वणन का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

गया नगर झूझणू उजागार। सभरी तणो आवियो सासर॥
बाधियो तोरण भाति विचित्र। चर्चे दरवाजे हद चित्र॥
सेखावतां करी प्रति सळवळ। राम धाम परणे जिम रगरळ॥

दिन दस लगै मुराम दवाया। पूरण ब्याव पछे पधराया ॥
श्रायो गढ बूदी श्रडपायत। प्रधिक कूच दर कूचा श्रायत ॥

वर्णन से पता चलता है कि रामसिंह का प्रथम वाग्दान श्यामसिंह की पुत्री के साथ हुआ था। परन्तु जोधपुर नरेश मानसिंह ने बूदी के प्रधानामात्य धाभाई किशनराम पर राजनैतिक प्रभाव डालकर रावराजा को पहले जोधपुर की राजकुमारी से विवाह करने के लिये बाध्य किया। फलत जोधपुर से बरात बूदी लौटने के तत्काल बाद ही वह दूसरा विवाह करना पडा था।

ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण श्रश बूदी के उमरावो, दोनो मिसलो के सामन्त सरदारो और राज्य कर्मचारियो का वर्णन है। महारावराजा के शासन के प्रारभिक काल मे बूदी राज्य तथा दरबार मे कौन-कौन व्यक्ति प्रभावशाली थे यह महत्त्वपूर्ण परिचय सहज उपलब्ध है। यहाँ कवि की इतिहास के प्रति स्वाभाविक अभिरुचि भी प्रकट होती है। राज्य के प्रमुख व्यक्तियो मे किशनराम धभाई शिवसिंह, शूरसिंह सावतसिंह, नवलसिंह जगतपालसिंह हाडा, दलपतसिंह, श्रोकारसिंह, महिपालसिंह, माधवसिंह, रणजीतसिंह बिशनसिंह, नाहरसिंह, जसवतसिंह, जीवनसिंह, विनयसिंह, राजसिंह, हाथीसिंह, दुजनशाल, सूरजमल्ल, तफजल हुसैन, जमीयतखान, करीमखाँ नजीबखाँ, फजुल्लाखा, राणावत शिवसिंह, और ससमल्ल प्रभति अनेक सामन्त योद्धाओ की वीरता और गुणाढ्यता का आलेखन किया है। इस सदर्भ मे कविराज ने बूदी राज्य सभा के चारण, राव और ब्राह्मण कवियो को भी उल्लेखनीय स्थान प्रदान किया है। दरबारी कवियो के वर्णन मे निम्न पद्धरी छद पाठ्य है—

लाखीणे प्रोहित श्रमरलाल। वियास हुद विरधीचद विसाल ॥
कविराव चत्रभुज बुद्धि कुज। मिळि भैरदान बल्लभ समुज ॥
न्जि रतन तेज श्रखेज नाथ। सिवदान सुत मीसण सुगाथ ॥
रावत प्रति सालगराम राव। सुभकवि नरोत्तम बुद्धि सभाव ॥
बादल सु साहि बजलाल बेस। श्रेता सुभट चारण श्रसेस।
भट व्रजलाल प्रति बुद्धि भार। व्यासासण कीधा प्रति विचार ॥
श्रासानद दुजवर बुद्धिवान। सुभकार गिरा गणपति समान ॥
रीझण धाबाई किसनराम। सारण काज व्रत धरम स्याम ॥

राजदरबार के उमरावो और कवियो की भाति ही सूर्यमल्ल ने नगर कोटवाल, धाभाई, नाजर आदि अन्य अनेक राजकीय पदाधिकारियो का भी नाम निर्देश किया है। यद्यपि रामरजाट प्रशस्ति काव्य है। कवि का लक्ष्य अपने आश्रयदाता का कीर्ति-गान रहा है। उनके मनोरजन और प्रसन्नता के लिए काव्य का सृजन हुआ है। फिर भी बाल कवि की दृष्टि बडी व्यापक थी। राजा, राजदरबारी, कवि और अन्य कर्मचारियो का वर्णन कवि की व्यापक दृष्टि का ही फल था। इस प्रकार कवि ने महारावराजा रामसिंह की प्रशसा-प्रशस्ति के साथ साथ सामन्तो तथा राजकर्मचारियो का वर्णन कर काव्य की ऐतिहासिक

उपयोगिता स्थिर की है। अत महारावराजा रामसिंह कालीन बूंदी की शासन व्यवस्था और बूंदी के गण्यमान्य व्यक्तियो के इतिहास के लिए रामरजाट काव्य का अध्ययन असंदिग्ध रूप से उपयोगी है।

कवि का प्रतिभा वैचित्र्य प्रकृति-चित्रण और वातावरण वर्णन म खुल कर प्रकट हुआ है। तीज-त्योहार वर्णन के अन्तर्गत वर्षा वर्णन, नायिकाओ का नख शिख वर्णन, आश्रयदाता का विवाह वर्णन, विजयादशमी पर महिष वध वर्णन, रामलीला, वर्णन आदि कवि की उदीयमान प्रतिभा के द्योतक हैं। शृंगार और आखेटादि के वर्णन कवि तन्मय होकर धारा प्रवाह रूप मे करता है।

प्रकृति चित्रण मे कवि ने रामसिंह के तीज रमने के समय विद्युत के कौंधने, प्रवल वेगवती पवन मे बहने, बादलो के समूह मे समूह उमडने घुमडने और मयूर पक्षी के बोलने का वर्णन है—

इम उछव तीज प्रारभ किया, अव बीज चमकत राह बिहू।
झळ मगळ औरस मगळ झोकत, मोर कोहोकत राति दिहू ॥
चलि वाय प्रचड उदड चहू दिसि बादळ जुथ प्रकास भ्रमै।
बिसनेस सुजाव उछाव बघोतर, राव प्रसी विध तीज रमै॥

गणगौर और तीज के दोनो त्योहार विशेष रूप से स्त्रियो के त्योहार होते हैं। विवाह के पश्चात् आने वाली पहली गणगौर और प्रथम तीज तो और भी उत्साह से मनाई जाती है। बूंदी म महारावराजा बुधसिंह के अनुज जोधसिंह के जलाशय म डूब मरने के बाद गणगौर का पव बूंदी मे नही मनाया जाता है। इसलिए कवि ने गणगौर त्यौहार का वर्णन न कर अपनी समस्त वर्णन प्रतिभा को तीज वर्णन मे ही केंद्रित की ज्ञात होती है। पवन मेघ घटाओ को आकाश म यत्र-तत्र उडाती है। मयूर मधुर स्वर म बोलते हैं। दादुर और झिल्लीदल का स्वर गूंज रहा है। सवत्र नदी, डाबर और निवानो का जल एकाकार होकर विशाल सरोवर-सा दृष्टिगोचर हो उठा है—

नदि डाबर नीर निवाण जिता, मिळि एक इता सर होत मही।
जळ ब्यव दरस्सत बारि बरस्सत, एक सरस्सत मक मही॥
बोहो दादुर सोर झिन्नीगण बोलत, डोलत अहूणी डाह घम।
बिसनेस सुजाव उछाव बघोतर, राव प्रसी विध तीज रम॥

नवरात्रा म भगवती दुर्गा का पूजनोत्सव राजस्थान म बडी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता था। इस अवसर पर जहाँ तोपो, तलवारो का पूजन होता है वहाँ देवी क समक्ष महिष की बलि भी दी जाती है। यह भगवती की प्रसन्नता के निमित्त आयोजित होती है। बाल कवि न नवरात्र-वर्णन मैं भैंसा की भीमकायता एव भयानकता यमराज के तुल्य वर्णित की है। महारावराजा ने भैंस की बलि देवी क भेंट की थी। भुजगी छद म उक्त वर्णन की कुछ पक्तियाँ पठनीय है—

भैंसो तीजो भलो इहा हाजिर जद आयो।
ऊळी झड आवळी दूत जम सो दरसायो।।
धड़वड रामै धणी आनि पटकी कध ऊपर।
माथो कटि घर माहि जार खटकी जोरावर।।
कर जोडि आप पूजन करै भगति प्रेम भव भाव सू।
अति हुई प्रसन्न उण बार मे रक्तदंतिका राव सू।।

नवरात्रि पूजन के पश्चात कवि रामलीला वर्ण्य-वस्तु के लिए चुनता है। रामलीला मे रावण और राम के दूत की कवि कल्पना करता है। दूत रावण से सीता माता को सादर लौटा देने के लिए आग्रह करता है किन्तु रावण ब्रह्मा और बृहस्पति तक से अपने यहाँ वेद वाचन करवाने की बात कहकर अपना अहकार प्रकट करता है। फिर दूत रावण को समझाने का प्रयत्न करता है। तब रावण और भी दर्प प्रकट करता हुआ कहता है—

बोलिया इहा रावण बकार। हुद जेण बार राखस हकार।।
अवधेस तणौ दळ किता अेम। जाणस्यू अभ मण माझ जेम।।
मारू अनेक भड समर माझ। सताब करू नह पड साझ।।
फाडस्यू राम की सरब फौज। अति वधै सूझ खग समर ओज।।
इम कही बात मानी न अेक। टणकाई रावण लिया टेक।।

रावण की उदण्डता के समाचार दूत लौटकर रामसिंह को सुनाता है और रामसिंह के अश्वो का लगामे रावण की सेना पर उठ जाती है। यहा कवि ने वर्णन मे चित्रोपमता लाने के लिए युद्ध क्रियाओ का सजीव वर्णन किया है। युद्ध की भाव भूमि की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत है—

चलि पदम अठारह सन चाव। रोसाळ नयण चहुवाण राव।।
अति बजि बीर बाजा अपार। असमान छजै रज अधकार।।
ऊपडी बाग घोडा असख। पाहडा तरण जिम लगी पख।।
फुण सेस तूटि गज भार फेट। चकचूर हुवा परबत चपेट।।
चलि थाट तोपखाना धरख्ख। हुद गालमदाज व्है हरख्ख।।
टाटिया बाण भड झलम टोप। अवनाड सूर पाराथ आप।।
सोहडा हूत निज निजरि अन। सभरीस करी रूमाल सन।।
उडि सोर सिलक तोपा अपार। अवनी आकास मिळी अधकार।।
धज लोह तोप केसर बधात। गिड मगरमुखी क दीघ गात।।
अज दाह दुरग चहटा अपार। लुकमान वणाई चित लगार।।
धण तापा इसडी चली घोख। सरणाट गजर गोळा स सोक।।
कागरा बुरज उड चोट केक। अरडाव पत्थर बुरजा अनेक।।
छजवाळी थभ तूटै अनेक। महि ओळा वरसै जाणि मेह।।
रावण रा कचन महल रीठ। उड पड छत्र छाजा अदीठ।।

अनेक शस्त्र टूटै अपार। घड़ गाळा फूट पार-पार॥
कपड़ी बाग घोडा उन्ड। पूजिया जाय लंका प्रचंड॥
सिर टूटै राकस लडै सूर। घड़ फूटै बाणां धाक पूर॥
नाचक कमध अनेक नाच। अनक आपुट सहग आच॥
कटि पड़ै अग धारा स यंक। अवनाड बीर जुटै अनक॥
पजवड़ा बाढ़ उडि धाक धीक। नासरां नाद जिम भाकझीक॥
काळजा बूकड़ा तरफ बक। उरड़ा ढ़बड़ा कूढि अनेक॥
राक्स नर जूटै चढै रीस। प्रणभग लेत भारत अदीस॥
जमदाढ़ कटारी वार जोर। तरमूळ छुरी पडोयाल तार॥
गह लेत गृद झपटत ग्रीप। पत्र धारा जोगणी श्रोण पीप॥
घड तडफै धरती पडै धार। माथा प्रति बोलै मार मार॥
श्रोयणी चली सरता स्वरूप। माचियां कीच पळ रै सरूप॥
ग्रोमझ इम रचियो घडी दोय। रहिया लडि राक्स घणा रोय॥
दळ हल्यो सरब इह चढ़ो दत। अब आयो रावण तणो अत॥

कवि ने कुंभकरण, मेघनाद और रावण का सहार कर महारावराजा के राजप्रासाद में पधारने के साथ ही रामलीला वर्णन को पर्यवसित किया है।

महारावराजा रामसिंह द्वारा वन्यजीवों की आखेट, गजाश्वों की सवारी और दरबार का भी ओजपूर्ण भाषा में प्रवाहमय वर्णन किया है। रामसिंह के मोर नामक घोडे पर आरूढ हो कर आखेट के लिये प्रस्थान करने का त्रोटक छद में वर्णन किया है। घोडे के सुमो की खुरतालों की टक्कर से चिनगारियां झडती हैं वे ऐसी भाषित होती है मानो बिजली कौंधी हो, घोडा बन्दर की भांति छलांगें भरता कूदता है। वह गरुड़ के समान तीव्रगामी है। चमर तुल्य दुम वाले उस मोर घोडे का वर्णन अवलोक्य है—

चहुवान चढ्यो गजराज नवा। तुंध आसन नागर पान तवा॥
खुरताळन आग झरै सुखर। पख जानि कै बीज सळाव परै॥
फटिजात बुरज्ज सु फेटन तैं। चिय जात मतंग चपेटन तैं॥
उडि रूख झपट्टत बदर ज्यो। अग जेम फलग मलगत ज्यों॥
डुलि जात सु नाहर डाकर तैं। हटि जात दुरज्जन होकर त॥
जगदीश को बा'न गरुड जिसो। अति तेज तुरी हय मोर इसो॥

वर्षाकाल में बूंदी की प्राकृतिक छटा बडी मनोहर लगती है। तीन ओर से सघन हरित विटपावलियों से आवेष्ठित यह सुदर नगरी वर्षाकाल मे दर्शकों का चित्त हरण कर लेती है। तीज की सवारी के ब्याज से कवि ने वर्षा का जो वर्णन किया है, उसकी कुछ पंक्तियां पद्धरी छद मे पठनीय हैं—

पागडै धरै रामैण पांव । अणमाव मेह चढियौ प्रमाव ।।
घण बादळ छू वे घसण घोर । जळधार उड छोळा न जोर ।।
मूसळाधार वरसत मेह । ऊखळा भरत पाणी अखेह ।।
भींजत सरव सोहड अभग । कसरया कसूमल बहुत रग ।।
थरडाव पवन झपट अपार । लपटै तन वसतर नीर लार ।।
ऊखडै वृच्छ डाळा अपार । झंकार गरज परबत भयार ।।
चमकत बीज अति दिसा च्यार । झिल्ली गण दादुर झणकार ।।
घहरात मेघ गभीर घोख । अति मोर सोर श्रत श्रोक श्रोक ।।
उडि छोळ राळ बोळां अनेक । वौछाड वबन झपटा विसेक ।।
उण बार राम चढियो उडड । बातैत वीर पौरस प्रचड ।।
भीजता रग चुवता अभग । रत हरित केसरया बहुत रग ।।

अन्त म कवि ने अेक दोहा तथा अेक छप्पय छद म अपने पोषक रामसिंह हाडा का निम्न प्रकार आशिश प्रदान कर वर्णन को पूर्ण किया है ।

वधौ तेज धरि विभव, वधौ नति दान वधोतर ।
वधौ देस गज बाज, वधौ नति राज वीरवर ।।
वधौ आरवळ विलद, वधौ सुख भोग वधत्ती ।
दौलति वधो दराज, मौज वधौ महपत्ती ।।
सौ गुणा वधौ जग पर सुजस, हेल वधौ सनुसल हरो ।
विसनेसनद रामण बड, कोडि जुगा राजस करो ।।

इस प्रकार महाकवि सूर्यमल्ल के बाल कवि रूप का राम रजाट मे दर्शन होता है । राम-रजाट यद्यपि वर्णनात्मक खण्ड काव्य है तथापि कवि ने इसम स्थान-स्थान पर अपनी कल्पना और इतिहास दोनो का सुन्दर सयोजन कर इसे महत्व का बना दिया है ।



वीर गीतो में विवाह



गीत राजस्थानी साहित्य का अपना छद है। यह लोक गीत से सवथा भिन्न विशिष्ट छन्द है। राजस्थानी के लक्षण ग्र थो म इसकी १२० जातिया परिगणित की गई हैं। गीता मे राजस्थान की वीर सस्कृति मुखरित हुई है। योद्धा जीवन का सर्वाङ्गीण चित्र गीता के माध्यम से चित्रित किया जा सकता है। इनम योद्धा की प्रवृति, मनोवृत्ति युद्ध के प्रति दृष्टि, युद्ध की उपयोगिता योद्धा की रण सज्जा, योद्धा के सहायक गजाश्व, अस्त्र शस्त्रो, युद्ध काय व्यापार युद्धप्रिय देवता पशु पक्षी जगत, और रणभूमि की भयावहता प्रभृति अनेकानेक प्रसग गुम्फित मिलत हैं। युद्ध की भयानकता और अप्रियता को 'मरणो मगळा चार' अथवा 'अच्छर वरणो अमरपुर' के माटा' द्वारा सुखद आल्हादक और सुखान्त म पयवसित करना गीतो की अपनी विशेषता है। अप्रिय को प्रिय और प्रिय का अप्रियता क रूप म अगीकार, कर हर्षित होना राजस्थानी भूमि की खूबी है। युद्ध म वीरगति प्राप्त करना प्रिय और पलायन कर जीवित बच रहना निन्दनीय, अप्रियता है। गीतकारा न जीवन मत्यु को समस्या को दाशनिक की भात परखा निरखा है। प्रसिद्ध राठौड वीर पृथ्वीराज जैतावत बगडी के स्वामी के रण म प्राणोत्सग करन पर उसकी पत्नी क विलाप करने पर कवि-योद्धा की पत्नी को कुलधम का स्मरण कराते हुए कहता है—

राणी म रोइ 'पीथा' रिण रिधल रिण गा छाडि तिके भड रोइ।
घण जूझे 'रिणमाल' तणे धरि हुवै मरण तिम मगळ होइ ॥१॥
'पीथल' तणो म करि दुख पछि पछि दिदवा तजि करि ताह दुखव।
आदि तै मेह 'अखा' घरि आग सार मरण घण गणो सुख ॥२॥
म करि अदोह जतउत' भरत भाया भाजि सु रोइ अयार।
ऐ कुलवाट सदा 'मलराजा' चढ़ता कु ते मगळाचार ॥३॥

इस प्रकार धारातीथ मे प्रवश कर कुल को उपस्कृत करने वाले वीर गति प्राप्त योद्धा क लिए रुदन परित्यादनीय माना गया है। मृत्यु को मागलिक विचित्र करना राजस्थानी सस्कृति की विशिष्टता है। मागलिक कार्यों मे जन्म और विवाह सस्कार का सर्वाधिक महत्व है। विवाह के सुमेरु को समाज परिक्रमा करता है। वह समाज वद्धि का मूलाधार है। अत विवाह पर किसे हर्ष नही होता। इस शुभ समारोह मे समग्र परिवार नाचते गाते नहीं अघाता है। तब फिर भला वीर-गीत विवाह के वणन से अछूते कसे रह सकते है। वीर गीत रचयिताओ ने विवाह को पृष्ठ भूमि को आधार स्वरूप ग्रहण कर युद्ध के बहु

विध गीतो का प्रणयन किया है। विवाह के रूपक गीतो मे विवाह के समस्त आचार-व्यवहारो का वर्णन पाठक को युद्ध की बीभत्सता मे विवाह का मगलानदी वातावरण उपस्थित कर आत्म विभोर कर देता है। वीरो का लोक निराला होता है। समाज के अग होकर भी वे समाज के शीर्षस्थ व्यक्तित्व होते हैं।

युद्ध मे आक्रामक और आक्रमित दो पक्ष होते हैं और विवाह भी वर और वधू दो पक्षो मे होता है। दोनो ही पक्षो मे ठाठ बाट एव सजावट की जाती है। वर पक्ष मे जब दूल्हा बरात बनाकर प्रस्थान करता है तब उसकी दृष्टि दोष से रक्षा करने के लिए 'राई लून' किया जाता है। तदनन्तर वर के परिणयन के लिए प्रस्थान करने के लिए मगल गीतो से विदा दी जाती है। प्रसिद्ध वीर राजा गोपालदास गौड और उसके ज्येष्ठ राजकुमार बलिराम के ठट्ठा स्थान के युद्ध पर सर्जित गीत मे गीतनायको द्वारा सेहरा धारण कर अभियान करने, अप्सराओ द्वारा बधावे के गीत गान तथा बाण व गोले रूपी अक्षतो की 'राई लून' करने का वर्णन कितना सुन्दर है, पढिए—

> आहुडिया सूर थटे गढ ऊपर, अपछर रथ खडिया ओमाह।
> बेटो बाप सेहरो बाधे, गौड चढे तोरण गजगाह ॥१॥
> सर आखा गाला बरसै सिर, अपछर पमळ न्यि उधाम।
> पूत पिता साथै परणीजे, रण गोपाल अनै बळराम ॥२॥
> अगर सोर है मरण आहवि, नारद वेद भण निरवाण।
> फिर फिर लिये अछर वर फेरा, अजमेरा परणै आराण ॥३॥
> कारण वरण धाव दावा कर, भल पखण पूजिण भाराथ।
> बटो बाप विन्है रथ बटा, सास वहू अछर कर साथ ॥४॥

किन्तु विवाह मे बरात का माडा पक्ष की ओर से स्वागत मे कलश वदन तोरण वदना और विवाह वदी, नवग्रह शान्ति-पूजा पडितो द्वारा मन्त्रोच्चारण, ग्रथि बधन, दहेज और तदुपरान्त सौभाग्य रात्रि का उत्सव सम्पन्न होता है। राठौड वीर ठाकुर बल्लू चापावत के आगरा मे राव अमरसिंह राठौड का वर शोधन कर धराशायी होने सम्बन्धी गीत मे युद्ध के कार्य कलापो का विवाह की क्रियाओ मे आरोपण कर सावयव रूपक का प्रणयन किया गया है। विवाह मे गुनिजनो के गान की ध्वनि तोपो के गोलो का नाद है। साथी सनिक वरयात्री हैं। बाणो की बौछार आक्षिप्त अक्षत हैं। तलवार के वक्र प्रहार आरती उतारने की सारशता करते हैं। रणस्थली विवाह वेदी है। नारद वेदपाठी ब्राह्मण है जो विवाह की रस्मपूर्ण करवा रहा है। अन्त मे वह दूल्हिन पर अनुरक्त हुआ भालो द्वारा निर्मित प्रासाद मे शयन करता है और याचको को त्याग मे मस्तक का दान कर सूयलोक को चला जाता है। गीत मे उल्लिखित भाव देखिए—

> सिर बाधे मौर करे केसरियां, चापा इळ चळ रोत चनू।
> एकण लगन रोद घड अपछर, बेहू ठौडा परणीज वनू ॥१॥

गोळा नाळ गुणीजन गाव, लसकर ग्रमर जानिया लार।
माडणहरो दिपन्तो मिळियो, साम्हेळे बीडो घणसार॥२॥
पालतणो तोरण पत्तोज, बड वहड़ा धुर टाप विचाळ।
भाखा तीर ग्रारती ग्रसमर, वाम ग्रग घाल वरमाळ॥३॥
ब्रह्मा नारद करै वेदोगत, चौरी हाम कटक चिरियो।
फिरियो नही ग्रमर सत फाटे, फेरा कमध इसा फिरियो॥४॥

राठौड वीर गोपालदास के शाही सेना से लडकर वीरगति प्राप्त करने की घटना को वर्णन का आधार बना कर एक गीत में विवाह रूपक का विधान किया गया है। इसमें मास-भक्षी पक्षियों का चहकना गीत ध्वनि, अप्सराओं का स्वागत करना, योद्धा के सरतीय तरह शाखाओं के योद्धाओं का नवग्रह पूजन के स्थान में सम्मान प्राप्त करना, नारद का वेदोक्त पाठ, विपक्षी सेना रूपी दूल्हिन के घावों से प्रवाहित रुधिर ही ताम्बूल चबाकर थूकना, यश रूपी दहेज की प्राप्ति और आवागमन रूपी ग्रवगुठन का त्याग आदि वैवाहिक समस्त विधियों का पालन द्रष्टव्य है—

धणी कर बाखाण सत कर मगळधमळ, सहूवर साथ ग्रणवर सहोधा।
माटव पत्तणोज कमध गोपालमल, जानिया साथ रिणमाल जोधा॥१॥
पुड वर पखणी ग्रछरे पू खण, धार तोरण ग्रणी बींद लग धौड।
विकट लाडो बणी वीन बाको विकट, मयन री परणोज बाधियो मौड॥२॥
मडे नव तेरह नवेग्रह माडिया, ब्राह्मण फिर नारद विचाळै।
रोदणी बोदणी छेहडा राळियो, रुधर तम्बाळ मुखहूत राळे॥३॥
माडवो विसमगति सगा वाके मुहे, विसम चढिया भला बिन्है विखवाद।
बींद मुरधर तणो सिनर री बोदणी, नवल गति परणियो सिंघव नाद॥४॥
हूवो जस दायजे पात पळचर हुव, सरब सत्र दाम वरियाम खूटा।
जौत मे पाडियो मोहले जसाहरो, छेहडा ग्रवतरण तणा छूटा॥५॥

वीरवर ग्रजुन गौड उज्जैन मे विद्रोही शाहजादे ग्रौरगजेब तथा मुराद की सम्मिलित सेना से जूझकर स्वर्ग गया था। कवि ने उक्त युद्ध गीत में उज्जयिनी के रणस्थल को विवाह मडप, कवचो से सुसज्जित होने को केशरिया वस्त्रधारण करना, तलवारों के तोरण द्वार तथा बछियों ग्रथवा भालो के तोरण-स्तभ, चतुरगिनी सेना को दूल्हिन, ढाल को ग्रवगुठन ग्रौर उसकी ग्राट से देखने को नायिका का कटाक्ष, बाण तथा गोलो को ग्रक्षत, कटारो के प्रहार करते समय हाथो के मिलन को पाणिग्रहण योगिनियो के कलरव को वैवाहिक मगल गीत तथा धनुषो के मारने काटने से कवचो की कडियो के टूटने को कचुकी के बधन टूटने ग्रादि व्यक्त कर सागरूपक का सृजन किया है। गीत की पक्तियाँ हैं—

ऊजेणी मडप जुध ग्रवरस माडै ग्रगळ कमरिया ग्रज किया।
तारण थिया तणा तरवारचा, थाभ सागळा तणा थिया॥१॥

गोड मोडवध ठोड गराजू, राजू सुरति सिरी रढाळ।
दुलहणि जोय वोळ्ळ रो दुलही, मन उलहो मेळे वरमाळ ॥२॥

चतुरगी गवरगी चातुर वर ग्रातुर ग्रजमेरि वर।
धू घट ढाल तणा घातिया, भाळी तीछि कटाछि भर ॥३॥

कँवर बाण अमूर ग्रखति कढि, हाथा किय जमदढि हथलेव।
फिरि फिरि ग्रफिरि किय सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव ॥४॥

सेत महल बीचि रहसि वहसि खगि, तिहसि मिहसि कसो ऊमसि ताव।
सोहा लाट लालरग लाडे, घट घट घाट ऊपर घाव ॥५॥

ग्रडथड भिरड भिरड भड ग्रवभड नवड भवड वड निवड नड।
ग्रावटकूटि तूटि कसणावटि छूटा जडवटि फूटि छड ॥६॥

ग्रपछर हर सुचर खेचर ग्रग, लग ग्रोपोपण लाग लिया।
त्याग दिया ग्रजमल वड त्यागी, कारण वाद मुराद किया ॥७॥

नगराज के पुत्र दुजनशाल ने दक्षिण प्रात मे स्थित शाही सेना की ग्रोर से ग्राक्रमण कर वीरता प्रकट की थी। कवि ने दुजनशाल का वर ग्रौर शत्रु सेना को वधू बतलाते हुए युद्ध विवाह रूपक का सयोजन किया है। इस गीत म वीरो की ललकार-ध्वनि को विवाह मे व्यवहृत होने वाली वेद मत्र ध्वनि ग्रौर बाणा के ग्राघातो को दूल्हा पर न्यौछावर कर फेंके जाने वाले ग्रक्षत ग्रकित किये है। ग्र त मे वह सेना रूपा वधू का वरण कर रणभूमि रूपी शय्या पर ग्राक्रीड करता प्रकट किया है। गीत का रसास्वादन कीजिए—

वरियाम सदा फिरतो रिण भानै, ग्रचळाहरो बीद ग्रामान।
दिखणी घडा परणीजै दूदो, जोगणपुरा तणा दळ जान ॥१॥

पुडधर पख जोगणी पूख, नीधक धाव दमाम निहाव।
चौरग सूवे पग चालियो, गेद घडा दिस बाको राव ॥२॥

ग्रछर उछाह ग्रावाज ग्रारती, घडियो मोहरत विकट घणो।
ऊपर बाण पडतै ग्राखा, तोरण गौ नगराज तणो ॥३॥

वाजै हाक बीर धुन वेदा, चव महारिख मगळाचार।
धड, भड वहण ग्राडिये धारे, वर लाडीये हुग्रो वोहोवार ॥४॥

दिलो बरात छात पत दोळा, दूदो वर राजा दिखण।
सवगण हरो वरैं साहिजादी, रायजादो पोढियो रिण ॥५॥

विवाह मे योग्य वर प्राप्त न होने पर वधू ग्रौर कन्या पक्ष वाला पर बडी कठिन बीतती है। कभी कभी तो कन्या के पिता ऐसी कठिन शर्त रख देते हैं कि उसके पूरा किये बिना दुल्हिन का परिणय सम्भव नही होता। शिव धनुष भग, मत्स्य वध प्रभृति ऐसी ही प्रतिज्ञाए थी। एक गीत म स्वयवरा वधू की दशा का वर्णन हुग्रा है। गीत उग्यभानु

राठौड भिनाय पर रचित है। शाही सेना रूपी शाहजादी यत्र तत्र अपने योग्य वर को ढूंढती घूमती रही, किन्तु उसे अभीप्सित पति नही मिला, तब ढूंढते हुए वह उत्तर से दक्षिण दिशा मे पहुची। वहाँ कुण्डाणे स्थान पर उदयभानु नियुक्त था, वह उस पर अनुरक्त था। अत वह उस पर अनुरक्त हुई। गीत म विवाह वर्णन पठनीय है—

दिन येता रही बरे यह दूजी जुध येता बीता जमजाळ।
साही चाल अछर तिय सहित, वाही उतरि हेठ वरमाळ ॥१॥
वारगना रही धारे व्रत, अत स्यामावत तणौ उमाह।
पिडि खुरसाणे बीद परखियो, वळि कु डाणे हुवौ विमाह ॥२॥
सोर सराब वाण सज छूटा, उडी आराब बीनोरे आगि।
असौ वाह वर इन्वि आणिया, वणियो कमध बीद वरजागि ॥३॥
फिर फिर अफिरि फिर धाय फेरा, हुवो न यसडो व्याह हुव।
वधव बिहे सुरारथ बठा, वीर जिठाणी अछर दुवें ॥४॥

वीर गीतो मे युद्ध मृत्यु प्राप्त योद्धा का सुखात्मक वर्णन परम्परा से प्रचलित रहा है, कहीं विरोधी सत्ता के साथ उनका प्रणय दिखाया गया है, तो कही अप्सराओ से ग्रंथी जोड कर स्वर्ग सुख की कल्पना की गई है। नगायना के कछवाहा वीर भोजराज खगारात की युद्ध मृत्यु के गीत म उसका सुर सुन्दरी के साथ परिणयन निम्न प्रकार वर्णित है—

घरर घोर पाखर पटा घमके घूघर, अरण पुड धुजि असमान धायो।
जोमरद कहर नादान जानी किया, उगे विम परणवा डैण आयो ॥१॥
किलव किलमा चढि धडा कण रण किया, डुव डुकळ कळळ मगळ हुवै।
विस कन्या बीदणी बीर भोजो विकट, जोजरो वरै मोटयार जोवे ॥२॥
काळ रा काळ कूरभ कगळ केसरीया, फ्रास तोरण खगा तुरी फाक।
अचभै बगती बीद सो माजरा, कहर गति डोकरी परा कोकै ॥३॥
फरि फरि अफरि फिरी दवि फौजा फरी, नरा जगमालहर करै ठूढो।
चढावे मन तणा बसावो बधावणा, वरि गई वजू ठ बीद बूढो ॥४॥

विवाहोपरान्त चित्रमारी म प्रणय-केलि-वर्णन बिना सारा वर्णन अपूर्ण रह जाता है। सौभाग्य रात्रि पर याद्धा सुरताण भाटी पर कथित एक गीत म उसकी रण शय्या म दोनो और अप्सराए पखे झल रही है। युद्धादि पखी चवर दवा रहे है। गृद्धों की गहक म नगाड़ो का निनाद [illegible] रहा है। राज महिषियो की भाति अप्सराओ की धूम धाम हो रही है। समीप ही सहभागी (अगरक्षक) सामन्त साथ हुए है। इस प्रकार अपने रनिवास की भांति निश्चिन्त भाव स वह रणभूमि पर पौढ़ा हुआ है—

पाखतियाँ विहू सिराती पगाँती, पडिया भड घड अप्रमाण।
समहर कहर अजर जरि सूतो साथरि अरि पाथरि सुरताण ॥१॥

पखा करै अछर विहु पाछै पखणि सब सचपै पाँव।
सिरदारा पाथरि वीसमियौ, समहरि निसभरि अमर सुजाव ॥२॥

गीघ गहकि ग्रम्बक धुनि गिरा गहमह अपछरि राजगनि।
पहू पोढियौ उहे पाखतिया, पिण्ड वेसोता देम पति ॥३॥

पाँर जिम धरणि धरै पोढतो, पिडि तिम रिण पौढै खग पाणि।
माडेचो जीवतो मरतो माणिग, माणिग गयो विन्है कढि माणि ॥४॥

इस प्रकार वीर गीतो म विवाह के आचार व्यवहार, सैन्य परिभूषण, योद्धा की वेशभाषा, अभिग्रह, नायिकाभिरति, शटया, त्याग प्रभृति सभी प्रसगा का बखूबी वणन उपलब्ध होता है। वीर और शृ गार का अनूठा मेल वीर गीत लेखक कवियो के रचना कौशल का दिग्शन कराता है।



महाकवि सूर्यमल्ल के वीर गीत



गीत राजस्थानी भाषा की एक विशिष्ट काव्य विधा है। राजस्थानी गीतो के रचना-विधान पर रचित अद्यावधि कोई द्वादश लक्षणग्रथ उपलब्ध हैं, जिनमे गीतो की रचना-प्रक्रिया का सविस्तार विवेचन प्राप्त है। गीत एक सौ बीस जाति के हैं। यद्यपि आधुनिक काल मे रचित एक दो लक्षण ग्रथो मे गीतो की सख्या एक सौ अठाईस तक भी घोषित की गई है परन्तु सम्यक रूप से उनके लक्षणो का अध्ययन करने पर एक सौ बीस से अधिक कहे गए गान मात्रा-दोषो के निवारण पर, इन्ही मे मिल जाते हैं। यहा यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि लोकगीत और डिंगल गीत दो सर्वथा पृथक कोटि की विधाए हैं, जिनका परस्पर कोई सम्बन्ध नही है। लोकगीत गेय है और डिंगल गीत पाठ्य हैं, जो एकादोई और पचादोई नामक दो विशिष्ट शैलियो मे पढा जाता है।

महाकवि सूर्यमल्ल ने समय-समय पर अपने मित्रो प्रेमीजनो, मरहट्टो और अग्रेजो के विरोधी प्रयत्नो मे सलग्न तत्कालीन योद्धाओ और महारावराजा रामसिह के उदात्त कार्यो पर गीतो का प्रणयन किया था। कविराज अपने चम्पू महाकाव्य 'वशभास्कर' मे गीतो के सृजन की स्वय इस प्रकार घोषणा करते हैं —

डिंगल बानी वृत बहु, गीतादिहु विधेय।
बहु बहु जवनन चरितविच उह वृत हु आख्येय॥[1]

महाकवि के गीतो और पत्रो मे अग्रेज विरोधी क्राति का उत्कट स्वर गु जित है। राजनैतिक दासता का वह प्रबलतम विरोधी था और क्षात्र-गुणो के उन्नयन के लिए वीरसतसई जसी उत्कृष्ट काव्य-कृति का सृजन किया था। वीरसतसई मे एक ओर देशभक्ति, क्षात्रकर्म और योद्धा चरित्र का ओजस्वी प्रशसन है, वहाँ दूसरी ओर कपोत वृत्तिधारी भीरुजनो की भर्त्सना भी कम नही है।

यहाँ महाकवि सूर्यमल्ल रचित डिंगल की कतिपय मुक्तक रचनाओ का उल्लेख किया जाता है। ये रचनाए अधिकतर डिंगल गीत हैं जिन पर अद्यावधि विद्वानो का ध्यान नही गया है। मेरे अपने सग्रह मे कविराजा की निम्नलिखित गीत रचनाए उपलब्ध हैं —

---

१ वशभास्कर ग्रन्थ नियम, प्रथम राशि, त्रयोदश मयूख, पृ० १५०

१ गीत रावत हेमतसिंघ, पीपळियारौ—

भीडै सनाहा भडाळा माण ऊगा व्है भळाका भाला ।

२ गीत महाराजा मानसिंघ, जाधपुररौ—

१ त्रिजडा वळ भ्रकुट दोयरा तोड ।

२ धारा खगा खळा तन खडत ।

३ गीत महाराजा सूरतसिंघ, बीकानररौ—

१ नाठळ गढ बुरज अघट यह कारण ।

२ गायो नौ खडा कविदा पायो आधार आ गीता ।

४ गीत ठाकर प्रतापसिंघ मेडतिया, वडभूरौ—

थडे भुज ससत्र जाम अणथाहा ।

५ गीत महारावराजा रामसिंघ हाडा, बूंदीरा—

१ किना सभू री उफाळो रोस काळ री पियाला किना ।

२ नाहरो इम कह सुणोज नाहर ।

३ गजब धाक दघ लाग आद्र पोहार पूगता ।

४ उमग मघ जळधार वादळ घटा ऊलट ।

५ कडक वद मातग माता गरज की जर ।

६ वाग नकीबा भताई हाक हरोळा जलब वधै ।

७ भाड गिरदा अभाडा हाका पाटवी राग रा भल्ल ।

८ अणी तीख रण भाग धारा बजर भाव री ।

९ काळा मेघ गाजता लवाना सोभ कोप कीधा ।

१० विकट लाय झड अगन कारीगरा बणायो ।

११ बडा अ०क हावता फजर अवक गजर ताव री ।

६ गीत ठाकर खुसालसिंग चापावत आउवारौ—

१ डाण ठेलै तू मातगा भडा हावरा उवाड डाको ।

२ लोहा करतो झाटका फणा कवारो घडा री लाडो ।

७ गीत महाराजकुमार चैनसिंघ नरसिंघगढ़रौ—

दगो विचार फेरियो अगरेजा लोगा चौगड़दा

८ गीत राजा वळवतसिंघ राठोड, भिनायरौ—

वारो ईसाई प्रळ रौ केडा न छाडणो वीराव ।

९ गीत महाराजा बळवतसिंघ राठौड, रतलामरौ—

व्है व्है सीरोध हीळोळा पगो त्रिलोक प्रचारा हुके ।

१० गीत महाराजा भीमसिंघ हाडा, गाठडारौ—

मिरा घेरियो नीद में घणो मयदा रासल गज्जे ।

११ गीत महाराणा सरूपसिंघ, मेवाडरो—

घायो भाळ्वी गिरद्धा ढाल पासतो हजूर प्राय ।

१२ गीत महाराणा जवानसिंघ रो—

सूनो घूमता नवल्ला गजा ।

१३ नीसाणी महाराजा बळवंतसिंघ हाडा, गाठडागे—

भाखू गणपत भारती माखू जस भ्रम्मर ।

किसी भी कवि-कृतित्व का मूल्यांकन उसके स्फुट काव्य पर विचार किए बिना अधूरा ही कहा जाना चाहिए । महाकाव्यों और प्रबंधकाव्यों में कवि को बहुत कुछ काव्य रचना के नियमों की सीमाओं में आबद्ध रहना पड़ता है । मुक्तक काव्यों में कवि के व्यक्तित्व के प्रकाशन की अधिक गुंजाइश रहती है । इसमें कवि को लंबी दूरी तक भाव विचार और प्रवाह के निर्वाह के लिए प्रयत्नपूर्वक जागरूक रहने की भी आवश्यकता नहीं होती । इस दृष्टि से इन पंक्तियों में महाकवि की स्फुट रचनाओं का दिग्दर्शन करवाने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

महाकवि सूर्यमल्ल षड्भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित तथा अनेक धर्म ग्रंथों, इतिहासों और शास्त्रों के विदग्ध मर्मी थे । वंशभास्कर और बलवद्विलास में अपने अधीत शास्त्रों का उल्लेख महाकवि ने साभार किया है । प्राचीन कवियों और नीतिकारों का प्रभाव वंशभास्कर तथा बलवद्विलास में यत्र-तत्र भली भांति परिलक्षित होता है । डिंगलगीतों में भी पूर्ववर्ती कवियों का प्रभाव वर्णन-शैली के अनुवर्तन में पाया जाता है । गीतकारों में कविवर आशानन्द बारहठ, बद्रीदास खिड़िया और हुकमीचन्द खिड़िया के गीतों का अधिक प्रभाव महाकवि के गीतों में मिलता है । वंशभास्कर में चारण कवियों की संस्तुति में उल्लिखित उपर्युक्त कवियों के नाम उक्त कथन की संपुष्टि करते हैं—

चारन नरहरिदास, कुंभकरन पूरन सुकवि ।

ईश्वरदास रु आस, बदरिदास हुकमेस वळि ॥

आशानंद, बदरिदास और हुकमीचन्द की प्रसिद्धि के लिए तो स्वयं महाकवि की यह उक्ति— 'गीत गीत हुकमीचंद कह्यो, हूं गीतडा गावो' लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हो चुकी है । यही नहीं, शैली एवं वर्णन-साम्यता का भी महाकवि पर हुकमीचन्द का गहरा प्रभाव लक्षित होता है । यहां पहले हुकमीचंद के गीत का एक द्वाला और तदनंतर महाकवि के गीत का एक दोहा दर्शनीय है—

ज्वाळा जेठ री जेहडी जगी बीज मेघमाळा जाण,

भीम भाळा केहडी कराळहा नैण भास ।

चंड धू केहडी किना उडडा त्रसूळ चडी,

वीर राघोदास हाथा अेहडी बाणास ॥

हुकमीचन्द ने राघवदास झाला की तलवार को ज्येष्ठ मास की प्रचण्ड ज्वाला, मेघों में कौंधती विद्युत, महाकाल के तृतीय नेत्र की अग्नि और चंडिका के हस्त धारी त्रिशूल के सदृश भयानक, अमोघ और विनाश से उपमित किया है ।

महाकवि सूर्यमल्ल ने बूंदी-नरेश के भाले को रुद्र के नेत्र की ज्वाला क्रुद्ध महाकाल का प्याला और परजनो के रक्त मे सना रहने वाला वीरवर अर्जुन का बाण कहा है, जिसके भय से पातशाह तक भयभीत रहते हैं। पंक्तियां देखिए—

किना सभू री उफाळो रोस काळ रौ पीयालो किना,
पर्ता रत्र पालो रहै जलालो पाराथ।
पाण भ्रामेण री यू बिलालो सालो पातसाहा,
भाला रामण री खळा उथाळो भाराथ॥

डिंगलगीत रचना का मुख्य प्रयोजन वीर समाज को देशभक्ति देशरक्षा और धर्मरक्षा के लिए जागरूक रखना और शत्रुओं से लोहा लेने के लिए उत्साहित करना रहा है। युद्ध से पूर्व युद्ध-काल मे तथा योद्धाओं मे युयुत्सा-भाव बनाए रखना और कुल परम्परा की गरिमा का बोध कराते रहना कवियों का धर्म सा बन गया था। महाकवि सूर्यमल्ल के समय मे भी देश मे सन १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम का वातावरण था। अंग्रेज सत्ता एवं उसकी छत्र छाया मे पोषित भारतीय शासको के विरुद्ध महाराज बलवन्तसिंह गाठडा, महाराज भीमसिंह गोठडा, ठाकुर जवाहरसिंह पाटोदा, राणा रतनसिंह सोडा कुंवर चनसिंह ठाकुर कुशालसिंह प्रभृति वीरो के प्रयत्न एवं सैनिक आक्रमण प्रारम्भ थे। उनके गीतो मे चारण कवि धर्म के अनुकूल वीरो को उत्साहित करने तथा अंग्रेज सत्ता के बढते हुए प्रभाव से समाज को जागरूक करने का स्वर स्पष्टतः गुंजित है। महाकवि द्वारा अपने मित्रो को लिखित व्यक्तिगत पत्रो के अतिरिक्त डिंगल गीतो मे भी अंग्रेजो के प्रभाव की स्पष्ट आशंका प्राप्त है। भिनाय के राजा बलवन्तसिंह पर रचित और उनको प्रेषित एक गीत इस कथन का प्रमाणित करता है। गीत की पंक्तियां हैं—

वारी ईसाई प्रळ री केडी न छाडणो वीरावै,
बाघ नीर अधम न लाग नदी बूत।
जोरदार बडो ले जिहाजा गाता खाव जठ,
बेडा ऊपराट तूही चलाव बळूत॥१॥
झडो नीति सूरता लाज री कटीलो काठो भल्लै,
उद्धत बाज री हल्ल दहल्ल अमित्र।
सुमगा मोढरां झल्लै अनेहा आज रौ सल्लै,
बीजा उदभाण छल्ल राज री वहित्र॥२॥

हे बलवन्तसिंह! भारतभूमि मे सर्वत्र ईसाइयो का आधिपत्य रूपी प्रलय-जल फैल रहा है और निकट भविष्य मे उसके अन्त का और आसार दिखाई नही देता। अधर्मियो का प्रभाव दिनो-दिन वृद्धि पर है। क्योकि स्थल ही नही समुद्र तक मे उनके पोत (सैनिक बेडे) गोते लगाने लगे हैं। ऐसे विषम समय मे अकेला तू ही उनकी सैन्य शक्ति के विरुद्ध धर्म पथ पर ससाहस चलने मे समर्थ है॥

महाकवि के काव्य मे राष्ट्रीयता और स्वतत्रता के म्राजस्वी स्वर का अनुनाद गु जित है। यह अलग बात है कि तब की राष्ट्रीयता और स्वतत्रता तथा म्राज की स्वतत्रता प्राप्ति के बाद की राष्ट्रीयता की परिभाषा म विद्वान अ तर पायें, परन्तु उस काल क वातावरण मे खड होकर तथा राजनैतिक परिस्थितिया को नजर म रखकर विचार करें ता महाकवि के सजन के प्रति सहसा हमे नतमस्तक होना पडेगा। महाकवि क समय म देश म राजतन्त्र था। छाटे छोटे सीमा ब धनो मे देश विभाजित था और अपने शासक और शासित भूभाग की रक्षा करना देशभक्त याद्धा का धम था। उस धम के पालन करन वाल याद्धा राष्ट्रभक्त थे, जिन्हे दूसरी तरह से स्वामी धर्मी कहा जाता रहा है। पर यह स्पष्ट है कि सयमल्ल ने अग्रेजो के पारतन्त्र्य स देश का बधन–मुक्त करन क लिए प्रयत्नरत याद्धाम्रा के कार्यो की श्लाघा की है। मारवाड के म्राऊवा स्थान क सामन्त महावीर कुशालसिंह चापावत ने राजस्थान मे प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य समर का नतृत्व किया था। उस वीर ने ब्रिटिश–सत्ता और उसके पक्षधर जोधपुर क महाराजा तख्तसिंह के विरुद्ध शस्त्र उठाया था। दोहरी सनिक शक्ति क विरुद्ध प्रदर्शित उस वीर के साहस का अभिनन्दन महाकवि क गीत के प्रथम द्वाले म निम्न प्रकार अभिव्यक्त हुआ है—

डाणा ठेल तू मातगा भडा डाचरा ऊबाड डाकी,
मूछा थाणो पेलै तू कपनी गजै माल।
काट थाणो रल तू आयणा जमी रास साथ,
खसतो खयाणा माथै भेल तू कुसाल॥

'खसता खयाणो माथै झेल तू' की चुनौती देन वाला मे चनसिंह प्रमुख था। अग्रेजी-सेना द्वारा घिर जान पर उस वीर न अपनी स्वल्प सहयोग शक्ति क बल पर उनसे युद्ध लडा और स्वतत्रता सग्राम मे अपने जीवन की आहुति देकर वीरगति प्राप्त की। सूयमल्ल न उस वीर को मरणोपरान्त जो यश-पदक प्रदान किया था, वह राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। गीत के प्रथम और अतिम द्वालो म उसकी अभिव्यक्ति द्रष्टव्य है—

दगो विचारे फेरियो अगरेजा लोगा चौगड्डा,
तासा ववी झड्डा तेडियो नाग ताय।
भाल धावा फेरियो खहरि हूत छाया भाण,
बाघलो केहरी 'चन घेरियो बलाय॥

उस वीर ने काच के समान अपने शरीर के टुकडे २ कर रणस्थली मे छितरा दिए थ। और इस प्रकार वीरो क आदश का अनुसरण किया था। भालो के आघात और गुजास्त्रो के प्रतिघात, वैरियो क मस्तको क चटके तथा स्वय के शरीर के बटका (टुकडा) का चित्रात्मक वणन अतिम द्वाले म वर्णित है—

झडक्का खणका वाज सेलरा घमोडा झाट,
डक्का गुरज्जा वाज घमोडा रढत।

आवधा वरिया वाळा माथा रा चटक्का उडै,
बटवधा चन' रा काच सीसी ज्यू बढत ॥

महाकवि ने ठाकुर कुशालसिंह आऊवा के एक अन्य गीत मे कपनी सरकार की भयजनित दशा की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है—

भागे चाचि गोरा सिधा परारा जिहान भाळो,
दावो लगा झाट दे अन्ताळो दसू देस।
तीसू नीद न भाव कपनी लगाड ताळो,
काळो हिय न माव, अगजी कुसळेस ॥

हाडावती क्षेत्र के गोठटा सस्थान का अधिपति महाराज बलवतसिंह अग्रेजो का प्रबल विरोधी था और झालावाड का शासक जालिमसिंह झाला और उसका उत्तराधिकारी महाराणा माधवसिंह अग्रेजो के मित्र थे। माधवसिंह के सकेत पर अग्रेजो ने ग्वालियर बूदी और अपनी स्वय की सम्मिलित सेना से बलवतसिंह पर आक्रमण किया। वह वीर अपने भ्राता शेरसिंह, पुत्र धोक्कलसिंह और फतहसिंह सहित घमासान युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। महाकवि ने अपनी एक लम्बी निशानी मे उपयुक्त घटना का सशक्त भाषा मे वर्णन किया है। उदाहरण के लिए अग्रेज सैनिको और उनके समर्थक मुसलमान योद्धाओ के रणत्याग का एक दृश्य प्रस्तुत है—

सकरड गोळा सकसक धकवक्क अरिहर।
कक मुल्ला ऊचरै अल्ला पैकवर॥
फौज हटै गोरा कट हिन्दू रटै हर हर।
तडफै केक तमोगुणी हडफै कर हाफर॥
वाही खाग वळूतसी वजराग बरोबर।
केक मुल्ला काटिया अग्रेज अथाहर।
कट असवार भिलम टोप कर घोडा पक्खर।
तूटो सेरो जोरवर जिम तूटो वज्जर॥

इस प्रकार कविराजा सूर्यमल्ल के स्फुट काव्य म स्वातन्त्र्य प्राप्ति के प्रयासो म सूलन वाले योद्धाओ के क्रिया-कलापो का अनेकश वर्णन उपलब्ध होता है। महाकवि की दृष्टि बड़ी तेज थी। जहा उन्होने अग्रेज-सत्ता के उन्मूलन प्रयास म लगे वीरो का वर्णन किया है, वहा उन्होने वीरो को स्वकर्त्तव्य-बोध का स्मरण कराने की चेष्टा भी की है। सिंह और सिंहनी के सवाद-शैली म रचित एक गीत म पशुओं का मानवीकरण करते हुए नृपति के आखेट-व्याज से कहा है—

नाहरी इम कहै सुणोजै नाहर, तज वधिया गिर वास प्रचाळ।
भागोठा मा नित करे उथाळा, माला नित रग भूपाळ ॥

जोधपुर नरेश मानसिंह ने अंग्रेजों से पराजित होकर जीवनरक्षा हेतु आए हुए अप्पाजी भोंसला को अंग्रेजों के विरुद्ध अपने वहां ससम्मान रखा और अंग्रेजों के प्रभाव डालने पर भी अप्पाजी को उनके सुपुर्द नहीं किया। इस प्रकार शरणागत रक्षा के भारतीय आदर्श का पालन करने पर महाकवि ने मानसिंह को भारतीय संस्कृति का रक्षक घोषित करते हुए कहा है—

> बदण माल दीयणां विभाड, झाळ अगन सीयणां झलै।
> अधपत मान तुहाळा आचा, भरत खंड मुरजाद भळै॥

'भरत खड मुरजाद' पदांश से कविराजा ने भारतीय-संस्कृति में शरणागत-रक्षा के आदर्श का अभिधान किया है।

इस प्रकार स्वतन्त्र-चेता कविराजा सूर्यमल्ल ने भारतीय स्वतन्त्रता के रक्षक और उस संघर्ष में रत तीन योद्धाओं का अपने स्फुट गीत-काव्य में श्लाघन करते हुए अपने आपको राष्ट्रभक्त कवि प्रकट किया है।

प्राचीन भारतीय काव्य साहित्य में मृगया का बड़ा मनोरंजक एवं स्फूर्तिदायक वर्णन मिलता है। आखेट क्रीडा को तब प्रमुख मनोरंजन माना जाता था। राजा लोग युद्धस्तर की भांति अपनी राजधानियों से मृगया के लिए ससैन्य सज्जित होकर प्रयाण करते थे। राजस्थान में महाराजा फतहसिंह उदयपुर का जिन लोगों ने आखेट अभियान देखा है वे उस राजसी अभियान की कल्पना कर सकते हैं कि प्राचीन काल में उसका क्या स्वरूप रहा होगा।

आखेट में शस्त्राभ्यास, राज्य की वन-भागीय प्रजा से सम्पर्क कृषि-नाशक पशुओं से कृषि की रक्षा, परिश्रम सहने की शक्ति का अर्जन और युद्धकाल में गिरि-खण्डों में सुरक्षा के स्थलों की परिचित प्रभृति सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक लाभ भी सहज ही मिलते रहते थे। महाकवि सूर्यमल्ल ने 'राम रजाट' में बूंदी-नरेश रामसिंह की मृगया का चित्रोपम वर्णन किया है। महाकवि के मुक्तक गीतों में भी शिकार का बड़ा रंजित वर्णन प्राप्त होता है। वन्य पशुओं की उन्मुक्त क्रीडाएं, घात प्रतिघात, प्रतिशोध, घायलावस्था की चेष्टाएं आदि का चित्रण गीतों में हुआ है। यहां महारावराजा रामसिंह पर रचित गीत श्रवणीय है। इसमें तलवार से सिंह को मारने का संकेत किया गया है। गीत प्रस्तुत है—

> झाडै गिरदा अझाडो हांका पाटवी राग रा झल्लै,
> बाका लोग ठल्ल डाका खाग रा बजेण।
> जोस रा याहरा डाचा उबाडै वरण्णा जा,
> रोस रा नाहरा पाडै सिकारा रामेण ॥१॥
>
> हाथिया कपोला केक झूम लूयवत्या होय,
> केक आय लूमै दौळा हाथिया हकार।

वसालीर चाड़े भूप अवीहां जनेवा बाहे,
समरी वाघळा सिंहा विभाडे सिकार ॥३॥

वे सिंह पिंजरे अथवा सकस के नहीं थे, अपितु गजराजो के मस्तको की मज्जा का आहार करने वाले, मेघ घटा तुल्य गभीर गर्जन करने वाले, नव हाथ लम्बी आकृति वाले होते थे। कवि के शब्दो मे उसका स्वरूप देखिये—

गजा गूद गटता रटंता मेघवाळा गाज,
कूदै ऊछजंटा आसमाण नू ठंकात।
आप फौज रोहता अरंता खाग मड आच,
नौहथा पटंता खरै खाग चहुवाण नाथ ॥३॥

महाराजा स्वरूपसिंह के आखेट पर विरचित गीत मे महाकवि ने सिंह की क्रुद्ध आकृति तथा रोषान्वित स्वरूप का चलचित्र सा वर्णन किया है। यहां गीत का चतुर्थ द्वाला अवलोकनीय है—

मूछारा फरक्कै लाल चसम्मा भ्रादक माथो,
करै गाज रगत्ता गुलालां रग कीध।
पायला सिमली धरा लोटेवो अचाळा घूम,
प्याला जाण अराक जलाला जाण पीध ॥४॥

महाकवि सूर्यमल्ल युद्ध-वर्णन मे जैसे अप्रतिम हैं, वैसे ही सरस सुष्ठु चित्रात्मक शैली मे शृगार-वर्णन करने मे भी सफल हुए हैं। बूंदी नगर की वर्षाकालीन सुषमा दर्शनीय होती है। गिरिघाटो मे बहती जलधारा और वायु के झोको से झूमती विटपावली का दृश्य बडा चित्ताकर्षक होता है। पादपो का झुकना, झूमना और पुन ऊपर उठना इस गौरवमयी धरती माता को नमन करने का दृश्य साकार कर देता है। ऐसी मादक ऋतु मे बूंदी का तीज-त्योहार मनाया जाता है। महाकवि ने एक डिंगलगीत मे महारावराजा रामसिंह के शासनकालीन तीज उत्सव का वर्णन किया है—

उमग मेघ जळधार बादळ घटा ऊलटै, रग मसत झगरा सीस सारग रटै।
सुख सदन तीज वाळै हरख सामटै, आज यप वदन देखो मग्न ऊपटै ॥१॥
खेल फीला कमळ जरद झडा खुल हेल असवारिया चेल फौजा हलै।
छोग धामेण दिल तीज ऊछब छल, अनम रो जोस रामेण मुख ऊभळै ॥२॥
नाथ का करै उदमाद उमगा निपट, रमण पावस तणै छोळ ऊछब गरट।
अधपति अग मळहळै पच सर, धणो तण जोवन तणो भपट ॥३॥

महाकवि सूर्यमल्ल केवल काव्य मनीषी अथवा छदशास्त्री किंवा विविध भाषाओ के विद्वान् ही नहीं थे अपितु न्याय, मीमासा, वैशेषिक शास्त्रो के मर्मी, ज्योतिष, गणित नक्षत्र-विधाओ के विदग्ध पण्डित, सगीत, वाद्य नृत्यादि ललित कलाओ के रसानुभवी ज्ञाता तथा स्थापत्यकला के विशेषज्ञ भी थे। बलवद्विलास काव्य में उपर्युक्त विषयो का

सारग्राही वर्णन किया है। बूंदीश्वर महाराव राजा रामसिंह के मित्र बीकानेर नरेश सूरतसिंह पर कथित एक गीत मे महाकवि ने बीकानेर के राजप्रासाद का वर्णन किया है। गीत मे महाराजा सूरतसिंह को सुरराज इन्द्र, दुर्ग की बुर्जों को मेघ घटा, शिखरो पर सज्जित कलशो को श्याम मेघो के किनारे पर शोभित धवल मेघ-पंक्ति अंकित कर रूपकमय वर्णन किया।

गीत की पंक्तिया हैं—

काळळ गढ बुरज प्रघट घड कोरण विमळ ग कळळ झगामग वस।
बीकानेर मघवपुर वरणियो, श्री महाराज मघव 'सुरतेस' ॥१॥
मुकर झलूम प्रभा हद मिंदर, जुगत जवाहर कनक जडाव।
राजस्थान इन्द्रासण सारस, सागै ही इन्द्र गजबंध सुजाव ॥२॥
मणा प्रवाह लाल नग माणक, छिब वाणक चन्नण घण छात।
महल सजोड सक्रासण मडप, मह सम जोड घणी वड गात ॥३॥
बजर खगा धरि गिरां विघूसण, मह सुभडा थट देव समाज।
सूरहरो बासव सुख सहला महला रग माण महाराज ॥४॥

इस प्रकार महाकवि ने डिंगलगीतो मे भी अनेक विषयो को छुआ है। हम कह सकते हैं कि सूर्यमल्ल महाकवि और वीर रसावतार ही नही थे, परन्तु उनकी बहुमुखी प्रतिभा अनेक धाराओं मे विकसित हुई है। उनकी तुलना किसी एक कवि से करना उनके कृतित्व का एकांगी मूल्यांकन होगा। उन जैसे प्रतिभा-धनी युगान्तरो के बाद ही उत्पन्न होते हैं। तभी तो कोटा के कविराजा भवानीदान महियारिया ने कहा था—

हायन एक हजार मे, आदि हुवो नह अन्त।
सुरसत आणी सूजडा, पढी पदारथ पन्त ॥



गुण शिवचरित प्रकास



परम प्रतापी राव शेखा और राजा रायसल शेखावत के पश्चात् शेखावाटी प्रदेश और शेखावत वंश में राव शिवसिंह (सीकर) और ठाकुर शार्दूलसिंह (झुंझनू) दो महान् विभूतियां परिगणित की जाती है। शेखावाटी प्रदेश के वर्तमान स्वरूप के निर्माण का श्रेय इन उभय वीर शासकों का ही है। ठाकुर शार्दूलसिंह और राव शिवसिंह ने अपने शेखावत भ्राताओं के सहयोग से झुंझनू और फतहपुर के कायमखानी नवाबी राज्यों का उन्मूलन कर शेखावाटी प्रदेश का विस्तार किया था।

राव शिवसिंह (सीकर नरेश) शेखावतों की रावजी की शाखा के नर पुंगव थे। उनके पूर्वज तिरमल्ल को 'राव' की पदवी प्राप्त थी। इसलिये तिरमल्ल की संतति 'रावजी के शेखावत' कहलाते हैं। राव शिवसिंह राव तिरमल्ल के चतुर्थ वंशधर राव दौलतसिंह के जेष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी थे। उनका जन्म सम्वत् १७२९ वि० में हुआ और अपने पिता राव दौलतसिंह के देहावसान के बाद वे सम्वत् १७७८ वि० में सीकर की गद्दी पर बैठे। राव शिवसिंह ने शासन भार ग्रहण कर सीकर नगर की सुरक्षा के लिये परकोटा बनवाया तथा नगर को सुव्यवस्थित ढंग से आबाद किया। उन्होंने अपने सजातीय ठाकुर शार्दूलसिंह (उदयपुर) ठाकुर गुमानसिंह (रामगढ), ठाकुर रूपसिंह (खूड), ठाकुर सरदारसिंह (खोरीड) प्रभृति तत्कालीन वीरों से पारस्परिक मैत्री स्थापित की और शेखावाटी में स्थित कायमखानी नवाबी राज्यों को समाप्त किया।

राव शिवसिंह ने जयपुर नगर के निर्माता महाराजा सवाई जयसिंह (आमेर) और महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह की ओर से लड़े गये अनेक युद्धों में भाग लेकर साहस और शौर्य प्रकट किया था। महाराजा सवाई जयसिंह और नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह के मध्य हुए सम्वत् १७९८ वि० के गंगवाना के युद्ध, महाराजा ईश्वरीसिंह की ओर से सम्वत् १८०१ वि० में कोटा विजय राजमहल और सम्वत् १८०५ के बगरू स्थान के युद्ध में राव शिवसिंह ने अद्वितीय वीरता प्रदर्शित की और उसी युद्ध में क्षत्रियोचित वीरता का प्रदर्शन कर वे काल कवलित हुए।

शेखावाटी के नवाबी राज्यों के उन्मूलन और कछवाहा कुल के अपने जेष्ठ राज्य के विस्तार रक्षण और संवर्द्धन में उनकी भूमिका उनके सम्बन्ध में विरचित मुक्तक छन्दों दोहा और वीरगीतों में अभिव्यक्ति मिलती है। तत्कालीन समसामयिक कवियों ने राव शिवसिंह की

वीरता और उदारता का मुक्त स्वर से ओजपूर्ण शैली मे आख्यान किया है। 'रायसल जससरोज' मे उल्लेख है कि बगरू की समरस्थली मे महाराजा ईश्वरीसिंह के पक्ष मे राव शिवसिंह सीकर और राजा सूरजमल्ल जाट भरतपुर ने मरहठा, उदयपुर कोटा, बूंदी और रामपुरा की सेनाओ से लोहा बजा कर यश अर्जित किया। इतना ही नही जयपुर व खंगारोत सामन्तो की सेना भी शत्रुओ से जा मिली थी—

इत उत दुॅ द्दल आय कै, जुरि बगरू घर जार।
उत खट नृप दल अकुरे, अरु जपुर इक ओर॥
खंगारोत रन म खरे, बदले ताही बार।
सहस डाड असवार ले, मिलि माधव मल्लार॥

राव शिवसिंह शेखावत, जैसा कि पूर्व सूचित किया जा चुका है, सम्वत १८०५ विक्रम म शिवलोक गये—

पडव नभ वसु इक्क पुनि, समत विक्रम सारि।
सीकर पति सिवसिंघ जे, सुरपुर धाम सिधारि॥

राव शिवसिंह क युद्ध-प्रसगो पर राजस्थानी वीरगीत विपुलता मे रचे हुए उपलब्ध होते हैं। इन वीरगीतो के अतिरिक्त बारहठ नाथा रचित ८६ छन्दो का 'गुण सिवप्रकास' नामक एक लघु काव्य ग्रथ उपलब्ध है। यह काव्य कवि ने सम्वत १८०१ कार्तिक सुदी ११ में सम्पन्न किया था। कवि ने चारणो की परिगणात्मक शैली, जिसमे कृतिनायक के पूर्वजो का सक्षिप्त वर्णन कर चरित्र नायक का सविस्तार वर्णन की परम्परा सी रही है, अलग हट कर इस कृति मे राव शिवसिंह के राजसी वैभव, युद्धो, आखेट और अश्वादि-सचालन विनोदो का वर्णन किया है। कवि ने युद्धो के विवरणो म व्यर्थ क पृष्ठ नही रगे हैं, अपितु सक्षेप मात्र मे चित्रण किया है।

प्रारम्भ मे कवि ने दोहे और छप्पय छद में सरस्वती से कूर्म की कीर्ति वर्णनार्थ अक्षर प्राप्ति की याचना की है—

आदि सगत्ती द्यो उकति, गवरीपुत्र गणेश।
सवो बाखाणी सुपह, द्यो आखर उपदेस॥
किरणाळी कूरम अकळ, भंडा उजाळौ भूप।
साज दिन सेवौ सुरिंद, राज सेखा रूप॥

कवि ने राव शिवसिंह की अपने समकालिक राजाओ में सुज्ञातता, प्रभुता, सत्यवादिता, वीरता आदि का मोतीदाम छन्दो मे वर्णन कर सेखावाटी के नवाबी राज्य फतहपुर विजय का वर्णन किया है। नीति निपुण राव शिवसिंह ने फतहपुर-विजय करने के लिये कछवाहा अग्रप्रभु महाराजा सवाई जयसिंह (जयपुर) से पूर्व अनुमति प्राप्त की थी—

सगा मिल सेख रु खान खटक्क । किती क्रम चालिय मेळि कटक्क ।
सज्यो सिवसिंघ जू वीर सिंगार । जिका पति जपुर कीध जुहार ॥
राजा महाराज हुँता गुदराइ । फतपुर लैण दियो फुरमाइ ॥

राव शिवसिंह ने जयपुर नरेश की सहमति प्राप्त कर अपने बंधु-बांधवों तथा मित्र स्नेही बीकानेर के काधलातो, बीको आदि को आमन्त्रित कर फतहपुर विजय की योजना बनाई। जैसा कि मध्यकाल में योद्धा समाज के लिये युद्ध में सम्मिलित होना जातीय गौरव का प्रतीक समझा जाता था और रण-प्रसंग उपस्थित होने पर भय, आतंक अथवा चिंता के स्थान पर उत्साह और उल्लास समन्वित मंगल अवसर गिना जाता था, उसी परम्परागत उत्साह के साथ सीकर की सेना में योद्धागण आने लगे—

खाना करि काधिल, बिकाई खेद । करै वोहं साथ कर सोहिं खेद ॥
तिका भुज लाज सकाज तिलक्क । मुदफरखानिय तेहिं मिलक्क ॥
चलाइये फौज सिव वळिवाळ । तिका नह ढोल हुमै रिणताळि ॥
फतेपुर घेरि लियो चहुं फेरि । जवन्नह साथ जुटो समसेरि ॥

कवि ने दोनों सेनाओं के तोप, बन्दूक, भाला, बाण तलवार और कटारों के युद्ध का धारा प्रवाह वर्णन करते हुए युद्ध-प्रेमी शिव, नारद, चण्डिका और गृद्धादि पक्षियों का स्वाभाविक चित्रण किया है।

कुहक्कइ बाण, कबाण, कट्टु । चिला भणकार अपार चट्टु ॥
तडत्तड तीर पडै तिण बार । मत घण भादव छट अपार ॥
धमाधम सम्म बहैं खग धार । प्रहारत मीर कटैं अणपार ॥
कवारियं बींद घडा कळिचाल । तिके जम हुत करैं रिणताळ ॥
असा सिवसिंघ तणा उमराव । गजां सिर मीर लगाडियै घाव ॥
बगत्तर टोप कटै अणबंध । कटै नर कोपर काळिजे कंध ॥
फतेपुर सेनि पडा तडफंत । कबूतर लोटण जाणि कुरंत ॥
सदासिव कारिज माळि सरंत । उरा मछरा बहु वीर वरंत ॥
भूख रत जोगणि पत्र-भरंत । कई पळचार आहार करंत ॥
लड इदरेस भयौ लगसाइ । गयौ मुखि आव निवाब भगाइ ॥
जीतौ जिण बार सिवा जुडि जंग । भंजे दळ खान किया पळ भंग ॥

सम्वत् १७८७ वि० में राव शिवसिंह ने कायमखानियों का दमन करे फतहपुर विजय किया। फतहपुर दुर्ग पर अधिकार कर वह वीर सीकर आया और विजय के उल्लास में उसने अपने सामन्तों, योद्धाओं, परिजनों, हितैषियों और कवियों को पुरस्कार-सम्मान आदि

से तुष्ट किया। कवि ने विजयोत्सव के वर्णन का प्रसंग निकाल कर भाखंट के वहान अश्वसेना, राजकीय रीति रिवाजों दावतो पोशाको राजदरबार आदि का भी सुन्दर वर्णन किया है। इस वर्णन से प्रतीत होता है कि स्वयं कवि भी उस उत्सव में सम्मिलित रहा होगा।

कवि शालिहोत्र, संगीत धनुर्वेद और दरबारी संस्कृति का सुज्ञाता विद्वान् था। घोडा के वर्णन में एक छन्द द्रष्टव्य है—

> घन अबलक्ख सुरक्ख अनूप। कंभा गुलदार मसविक्य रूप।
>
> पना कइ हीर चपा परमाण। अरहिम स्याह् कमैत जुवाण॥

गज और अश्वो के साथ साथ कवि ने सुखपाल, इक्का और घुडबहल वाहनो का भी वर्णन किया है। सुखपाल विशेष किस्म की एक पालकी होती थी। इक्का और घुडबहल भी सवारी थी।

> बणे सुखपाल इकका घुडवल। घणों वळवत फीलां करि गल।
>
> जिका परि खूब बनातिय झूल। तिका तन कं स जिसो मखतूल।

कवि ने सवारी का बडा सूक्ष्म वर्णन किया है। उसने शेखावतो के 'निशान', जो नील वर्ण का होता है उस का उल्लेख किया है। सूफी सन्त शेख बुरहान की मध्यस्थता मे राव शेखा ने पन्नी पठानो से नैतिक समझौता कर इस 'निशान' को ग्रहण किया था। शेखावत समाज उस समझौते के नियमो के प्रति अद्यावधि श्रद्धा रखता है—

> जिक अमरूप सदा मद जार। ठणहण बाजिय घट सुठार।
>
> बानी बहु भांति सनील बणाइ। सदा जिणि सेख बुरान सहाइ॥

कवि ने उल्लेख्य कृति मे राव शिवसिंह की फतहपुर-विजय और महाराजा सवाई जयसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के सम्वत् १७९८ वि के दो युद्धो का ही प्रमुखत वर्णन किया है। गगवाणा (अजमेर के समीपस्थ) स्थान का युद्ध राजस्थानी इतिहास मे बडा प्रसिद्ध है। महाराजा सवाई जयसिंह की सेना मे राजस्थान के प्रसिद्ध सभी योद्धा और उन सभी की राजकीय तथा निजी सेना सम्मिलित थी। उस सेना मे भरतपुर के राजा सूरजमल्ल, शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह, किशनगढ के राजा, बीकानेर के राजा, बूंदी के रावराजा दलेलसिंह, झुंझनू के अधिपति शार्दूलसिंह, करौली के यादव नरेश और राव शिवसिंह प्रमुख थे। विरोधी पक्ष में नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह और उनकी निजी सेना तथा नागौर राज्य के खीवसर, खाटू, सखबास, डेह आदि ठिकानो की कोई पाच हजार सेना थी। भयानक युद्ध के बाद राजाधिराज बख्तसिंह की पांच हजार सेना मे से केवल साठ सवार जीवित रहे थे। कवि ने गगवाणा के युद्ध में राव शिवसिंह के पराक्रम का वर्णन करते हुए लिखा है—

पुणै महाराज लिख परवान । दळावत भाव सिवा दईवान ।।
गयो खडि ताम्ह जूरि गरीठ । दळा सिर जोध दिनकर दीठ ।।
मया महाराज करै मन सुद्ध । जाड कुण दान करै कुण जुद्ध ।।
वण कोई पूरब लेख विचार । कर कुण ग्रोर कर करतार ।।
सदा सनमध सगा विधि साख । लडेवाइ काजि मिळै दळ साख ।।
लगे घर वेध लिया घर लाज । मडे रणखेत बिन्हे महाराज ।।
ग्रडी रज ग्राभ खडी रभ ग्राइ । घडी चहु नोबति बाजि अघाइ ।।
ग्रणी मिळ फौज बणी दहुँ ग्रोर । कळैहण वार भडावरि कोर ।।
ग्रजैगढ खेत बिन्हे ग्रणचल्ल । हुए दहु फोजहि माचि हमल्ल ।।
सजै बखतेस ग्रठी जयसीग । घरा कजि ग्राहुडिया बिहुँ धीग ।।

राजाधिराज बखतसिंह के प्रबल ग्राक्रमण के सामने एक बार जयपुर की सेना के पैर उखड गये । सेना को विचलित होते देख कर महाराजा सवाई जयसिंह ने सीकर-नरेश को कहा—

करै इण भांति ग्रमी मारकाट । दळा जिम सीस गुडे दहवाट ।।
जपै जयसीघ मुखे इम जाव । सिवा ग्रस फौजहि भेळ सताव ।।
धमाकहि जाव लियौ सिर धारि । पठै रिण बोधि भडा पळकारि ।।
ढाला करि बाट भाला ग्ररि ढाहि । ग्रणी फिर मेल धणीज ग्रकाहि ।।
फबै कळ जारि भडा धड फूटि । खळा दळ खेत गया सह खूटि ।।
जिक तरवारि बहै कर जारि । कट गज पोगर दत कठोरि ।।

ग्रत म राजाधिराज बख्तसिंह की पराजय ग्रौर राव शिवसिंह के कारण जयपुर की विजय तथा विजयाल्लास मे महाराजा जयसिंह द्वारा राव शिवसिंह को सम्मानित करने का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

ग्रणी तजि धार स भार ग्रपार । जुडै बखतेस गयौ मुडि ज्यार ।।
महाबळिवत सिवौ सिरमर । फत सहि राज तणी ग्रण फेर ।।
भुजा बहुँ भांति पूजै कर भाव । समापह तेम पटा सिरपाव ।।
जुड़ उमराव बियौ कुण ज्यार । पना नग हीर दिया करि प्यार ।।

रचनाकार, जो राव शिवसिंह का समकालीन था, ने इस रचना को सम्पन्न कर प्रथनायक को समर्पित किया था—

प्रयाड़हि पात गिर्णै कुण पात । इळा सिर जोरि करी अखियात ।।
योधे, दरियाव लहै कुण थेट । मुणे मुण तूझ सिवा जस भेंट ।।

कवि ने मगवारणा के युद्ध-वृत्तान्त का समापन करते हुए वीर राव शिवसिंह के रसोवडे की अखण्डता का भी वर्णन किया है । राव शिवसिंह का आतिथ्य-सत्कार अति विख्यात है । भोजन, भूमि, अश्व, ऊट और हाथी दान करने का शिवसिंह को बडा चाव था । कवि-रचित दान-वर्णन के दोहे देखिये,—

सेवो सहरी समद री, होड न दूजा होई ।
महघा मैंगळ मोल रा, खँग समापै खोइ ।।
मह सोहै दिन महपति, त्यागि अर्न तरवारि ।
तूझ सरब्बर को नही, सेवा इरिण ससारि ।।
भु जाई भोजन, भला, रीझ, हमेसा होइ ।।
सेखावत तो जिम सिवा, कर न दूजो कोइ ।।

कवि नाथा बारहट ने अपने काव्य की समाप्ति सूचक 'कलश' गीत मे राव शिवसिंह का शिव के साथ रूपकालङ्कार म वर्णन किया है—

गीत

सीकरि कविलास वास जिसि सोहै, दीठा बहुघरण, लिया दळ ।
सिव रूपी सेवो सेखावत, करिमद काकण, तणी कळ ।।१।।
चचळ बैल पलाणे चक्रवति, जरद भभूति जडे, प्रग जोध ।
जाळरा दत जिहि भुज जडळग, लसकर गण लीधा सळ लाथ ।।२।।
सेल, मसूळ, माल, गळ, सेली, सुघा, चर्वी बोह मयक सिरि ।
असिमर, करन, भसमगिरि भोपे, गढपति सीकरि सकरि गिरि ।।३।।
रद्र ब्रह्म तणो दलावत रावत, धारिय गग सिरि जगत सधार ।
करिमर कडा तणि मोहि सेवी, आवटि घटै करे अणपार ।।४।।
समझण जोग घणा रिणि साभण, दळि जिम जेम रिमा घट देस ।
वरदन दियण लियण जस आचा, भड सेवो राजै भूतेस ।।५।।

शिव सदृश आकृति और आचरण वाले राव शिवसिंह के कैलाश-तुल्य सीकर नगर है । योद्धाओ का समूह 'गण' है । तलवार ही शिव का ककण है । अश्व ही मानो बल हैं वे कवच रूपी भस्मी रमाए हुए हैं । दन्त नाशक असमी कडा ही तलवार है और गण-समूह के रूप म सैन्य समूह है । इस प्रकार कवि ने प्रत्येक दोह म शिव के वाहन, शृगार, चन्द्रमा,

भस्मी मुण्डमाला, रुद्रनेत्र, अमृत आदि विशेषताओं का राव शिवसिंह में आरोपण करते हुए वर्णन किया है।

कवि अपने परिचय के विषय में सर्वथा मौन है। केवल नाथा बारहट नाम के अतिरिक्त परिचय अनुपलब्ध है। पर बारहट नाथा के रतनसी के पुत्र नाथा बारहट का उल्लेख अवश्य मिलता है। राव रायसिंह नागौर ने रतनसी को नागौर का इदोकली गाव सं १७०५ प्रथम आषाढ़ वदि १३ के दिन ताम्रपत्र के साथ दिया था। संभवत यह नाथा रतनसी का पुत्र ही हो। प्राप्त रचना के अतिरिक्त राव शिवसिंह शेखावत, ठाकुर नवलसिंह (नवलगढ) आदि सम सामयिक अन्य योद्धाओं पर भी कवि के गीत प्राप्त हैं। गीतों में वर्णन तथा शब्द संयोजन से यह प्रतीत होता है कि वह राजस्थानी की डिंगल शैली के गीतकारों में श्रेष्ठ कवि रहा है। उसे डिंगल के अलंकारों, जथाओं और उक्तियों का गहन ज्ञान रहा है। सीकर राज्य के बारहटों के ग्रामों तथा राजकीय संग्रहों में सम्भवत कवि का कहीं परिचय मिल जाय।



'करणी प्रकास' में कविवश वर्णन



चारणो की आशिया शाखा का आदि निवास रोहाडा ग्राम कहा जाता है। रोहाडा से यह शाखा मारवाड और मेवाड के ग्रामो मे फली। रोहाडा मे निवास के समय आशिया चारण नागो के पोलपात्र थे। राजस्थान मे नागौर, मण्डोर आदि स्थान नाग क्षत्रियो के राज्यो की राजधानियो के लिए विख्यात हैं। मण्डोर का राज्य नागो से पडिहारो ने छीना, तब आशिया चारणो ने नागो के स्थान पर सिन्धल राठौडो का पोलपात्रत्व ग्रहण कर लिया।

आशियो मे मारवाड और मेवाड मे अनेक राजनीतिज्ञ इतिहासज्ञ विद्वान् और कवि हुए हैं। मारवाड के आशियो मे माला आशिया, भीमा आशिया, काना आशिया, पीरा आशिया, बाकीदास आशिया, बुधा आशिया, मोडजी आशिया, कविराज मुरारिदान आशिया इत्यादि कई कवि हुए हैं।

रोहाडा के बाद ही मेवाड और मारवाड मे आशियो का फलाव हुआ। रोहाडा के पुनराज आशिया के कवि श्रेष्ठ माला आशिया हुआ। माला राठौड जता के पास आया। और माला को रावत दवीदास विजयराजोत ने भाडियावास ग्राम प्रदान किया। माला का पुत्र बैरा आशिया हुआ और बैरसी का पुत्र भीमराज हुआ। भीमराज बडा धनाढ्य और उदार कवि हुआ। उसकी उदारता की अनेक किंवदन्तिया चारणी काव्यो मे उपलब्ध हैं। वह महाराणा कर्णसिह मेवाड का समकालीन था। उसने उदयपुर मे महाराणा कर्णसिह को अपने घर आमन्त्रित कर दावत भी दी थी।

गीत

राण करण च व्याह मुगत त भीमरज, दुनी जीमे कहे गीत दूहा।
वळ् करता थका वाहळा चालिया, वाहळा अडस घर घणा वूहा ॥१॥

धरू त वरजत उदपुर चादतै, कीया करण तणा महल काळा।
पाता महि भाव कुरळा पडै, वहै विसलि गया होड वाळा ॥२॥

जगत सो राण पुडी लापसी जीमता गुळ भी खाड घ्रत माह घाले।
आसिया भीम सू जिकै करता अडस, वहि गया वाहळै चळ् वाळै ॥३॥

दान घोडा लाख सिरपाव दै, मालहर मालहर हुवो मवाड।
होड करता जिक तिकै नर हारिया, चहू कूटा सुजस मलियो चाड ॥४॥

भीमराज का पुत्र खेतसी, उसका नाथूराम और उसका पुत्र सूरजमल्ल हुआ। सूरजमल्ल के क्रमश शक्तिदान, फतमाल और फतहदान के कविराज बाकीदास और कविराज बुधदान दोनो भ्राता महाराजा मानसिंह जोधपुर के दरबारी कवियो म अति सम्मानित हुए।

कविराजा बाकीदास का काव्य बाकीदास ग्रथावली (तीन खण्डो) मे नागरी प्रचारिणी सभा काशी से तथा 'बाकीदास री ख्यात' ऐतिहासिक (टिप्पणी) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर स प्रकाशित है। इन ग्रथ सकलनो के अतिरिक्त भी बाँकीदास रचित सैकडो दोहे, सोरठे छप्पय कवित्त, गीत, झमाल आदि स्फुट छ द सग्रहो भरे पडे हैं। कविराज बाँकीदास राष्ट्रीयधारा के कवियो मे प्रथम कवि था जिसने खुलकर अग्रेज सत्ता के विरुद्ध लिखा था। उसकी राष्ट्रीय कविताओ मे से मरहठो और गोरो के युद्ध का एक अप्रकाशित गीत इस प्रकार है—

फिरग फौज च्यारू तरफ फेर बाले फिरि, मार गोलाँ अगन झडी माँचा।
लाट छळ जाग नभ लाग गोरा लडै, नागपुर ऊपरा मौत नाची ॥१॥
कु जरा घडा विकराळ तोपा कडक, नागधर घरण समर थापियौं नीठ।
धूज गिर पहौंचिया लोक चूर धुआँ, रघू रै घराणै वाजियौ रीठ ॥२॥
सबळ नवलाख नै जातरो सायिबा उण दिखण तणा भड हुआ आटा।
हुआ अगरेज गाळव चढा हाथियाँ घोसला तणै घर पडे घाटौ ॥३॥
सतारा धणी री आत जाण सको, नागपुर धणी बळ छोड नाठौ।
गुमन रै राखियौ मान धारै गुमर, कमर बाधौ भलो कमर काठौ ॥४॥

कविराज बाकीदास ब्रज डिंगल एव प्राकृत भाषा क प्रकृष्ट कवि थ। काव्य चर्चाओ राजकाज, राष्ट्रीय उद्बोधन आदि विषयो क अतिरिक्त उन्होने राजस्थान के राजपूत वीरों पर ही नही, अपितु कृषको, व्यापारियो, पशुपालको आदि राजस्थानी जातियो, वर्गों पर भी पर्याप्त लिखा है। राजस्थान के जाट-समाज पर कथित एक गीत पढिये—

धाना रा कोठार भरै धाणिया रा, कपि खाया न बुरा किण।
वणै सदा जाटा सू बसती, बसती सोभ न जाट बिण ॥१॥
काधे हीरावळ काँवळा काधे टिपस कर कर जाण टोक।
चौक तणा सिरदार चोधरी, चोधरिया सू फाबै चोक ॥२॥
ठगाँ तणी नह चले ठगाई, बात ऊपजै तुरत विचार।
जाटा सू गाँमां री जाणत जाट घर पाई वाजै जेकार ॥३॥
पेडो चाढ प्रथी नू पोख, क्यावर चित ऊधरे करे।
करमा धनी हुवा मोर कुळ, भगतां सिध जस साख भरै ॥४॥

बाकीदास का अनुज कविराज बुधा भी अच्छा कवि हुआ कविराज बुधा रचित महाराजा मानसिंह का काव्य, मायाराम दर्जी री बात और राशि-राशि स्फुट रचनाए उपलब्ध हैं। मायाराम दर्जी री बात पर किसी कवि का कथन है—

दरजी कोडी डोढ रो, वणी लाख री वात ।

कविराज बुधमल्ल के मोडदान हुआ, जिसने 'कवि मत मण्डन' तथा 'पावू प्रकास' प्रबन्ध काव्यो का सजन किया। मोडजी के कविराजा मुरारिदान और कविवर पावूदान हुए। कविराज मुरारिदान ने महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) जोधपुर की आज्ञा से अलंकारो का 'जसवन्त जसो भूषण' ग्रन्थ रच कर 'महामहोपाध्याय' का सम्मान प्राप्त किया।

कविराजा मुरारिदान के अनुज मोडजी के पुत्र पावूदान ने सम्वत १९५० से १९८७ विक्रमी में भगवती करणी देवी पर 'करणी प्रकास' प्रबन्ध काव्य रचा। पावूदान भी अपने समय का उच्चकोटि का कवि और मानधनी व्यक्ति हुआ है। महाराजा गंगासिंहजी बीकानेर ने 'करणी प्रकास' की प्रति मंगवा कर कवि को बीकानेर बुलाया था। पावूदान ने 'करणी प्रकास' ग्रन्थ तो भेज दिया परन्तु वह स्वयं पुरस्कार लेने के लिये नहीं गया।

'करणी प्रकास' बीसवीं शताब्दी में रचित राजस्थानी स्तुति काव्यों में एक उल्लेखनीय काव्य प्रबन्ध है। यह कृति अद्यावधि विद्वानों की दृष्टि से ओझल ही रही है। यहां प्रथम वार 'करणी प्रकास' काव्य में से 'कविवंश परिचय' प्रकाश में आ रहा है—

छंद दूहो

करण भवानी आण सम करनळ सुजस प्रकास।
ईहग आ मझ आसियौ, आसल पाल उजास ॥१॥

छंद छप्पय

अवल नाग वसिया पोळ, आसिया उचारा।
पूर मण्डावर पछ राज, खत्रिया पड़िहारा ॥
बारह गामा हूंत पाळ छूटा उण पाता।
सुकव हुआ सिधलां, हमैं नेगी द्रव्य हाता ॥
कमधजा छात किण रा कविध भया पाव जोधाण रा।
कवि कथ पाल कायब कहै, देसणाक दीवाण रा ॥१॥
उण सुकवियां आगियां राज, थानक रोहाड़ा।
फिर सासण फटिया माझ मुरधर मेवाड़ा ॥
पुनराज खरटवि सुतन जिण, माल सिधाळौ।
ईहं बंध आवियौ भूप जता पह भाळौ ॥
रीझाण राण कथ रूपगा थिर करणी पय थप्पियौ।
देवीदास विजराजोत तण उण भाण्ड्यावास अप्पियौ ॥३॥

माल सुतन वरसीय वरसौ सुत भीमराज।
भीम सुतन खेतसीय, खेतसीय सुत [illegible] नथ निज ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

पड [illegible] [illegible] [illegible] ।
पड़ं माकव होरा [illegible] [illegible] ॥

* * * * * *

आज उदैपुर [illegible] [illegible] ।
करता भीम [illegible] [illegible] ॥४॥
दूजा चारण [illegible] [illegible] ।
पड़ियो भीम चितोड़, [illegible] ॥७॥

[illegible]

दळ लिछमण [illegible] [illegible] ।
करण [illegible] [illegible] ।
वड़ बापो जिण [illegible] [illegible] ।
दुरगे [illegible] [illegible] ।
भाला [illegible] [illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible]

जोधनेर पत जाणिया, कहियो जगत कवेस ।
आठद मिसला अरधियो, माळनाथ बुधेस ॥१४॥

बाणों बुध मिळियाह, वरी कई विधिया ।
चाकर होइ चलियाह, आगळ थारे आसिया ॥१५॥

कथण बुधाणी कायवां, गुणा आसावत ग्यान ।
मझ नह तो बाणारसी, पिण्डत मोड समान ॥१६॥

कवराजा नरपत कियो, मेघा पारख मान ।
कव मत मण्डण ग्रन्थ कियो, दूजो बाकीदान ॥१७॥

महाराजा इण मुरधरा, वो राजा जसवन्त ।
भ्राता भ्रम मुरार भो, कियो किवराजां कन्त ॥१८॥

अखा लखा दुरसा हुआ, कुळवट धारण कूत ।
आसल भीम समान उण, चारण हुवो न सपूत ॥१९॥

अहा माझ सूरज गिणां, सह तारां मझ चन्द ।
यां भीमावत आसियां, उव चारणा प्रबन्द ॥२०॥

छन्द

ढाळो पिण्डत गुणतां सरब, अधी रा चारण कांसू नजर चढ़ ।
चरचा सेस गुणेस न आवै, वक कविता कविराज वड ॥२१॥

छन्द कवित्त

सूरापण छड़ चीत, प्रकट दिल इष्ट ज पूरो ।
चमतकार सुरआत, दोस दळ झटपट दूरो ॥
काज निभावण ओत, सूरातन धरम सम्भारै ।
परठ ग्रन्थ पायको, देव न वार अेनों हलकारै ॥
सकती अगे पाबू सुपह, देवत उण माथ दियो ।
सुकवि पाबू अनै, करनी सकति ग्रन्थ कियो ॥२२॥

पाई पदवी कुरब, गजां नोबता धुराई ।
अडिगळ आखरा जोड, आखरां सवाई ॥
मोडण महिपा मदां गदां, आकुस मद माठा ।
भेदा वेदा भेद पदण, सासत्र खट पाठा ॥
चारणा अदां आई समझ आई नह आई उणां ।
मेहाई सकत साचे मनसा, गाई नह करणी गुणां ॥२३॥

प्रथम पचास प्रगट, वणी कायवां वणावट ।
साठे बिच पैंसठे, थई सुबदा आवत थट ॥

रूप पको रच ग्रौर, वळे छ द उलटायो।
सतरै वियासियै विच, फिर मतो वणायो॥
विच वरस सत्तासियै, वाणुवै दमक धुन उत्तिम दियो।
करणी सुजस प्रकास कथ, कवी पाल पूरण कियो॥

छ द दूहा
पौस सुद पख ग्रेकम पसर, सुर गुरुवार थियोह।
सुकव पाल पूरण सरव, करनळ ग्र थ कियोह॥

ग्राशिया शाखा के चारण कवियो मे भारतदान ग्राशिया भी उच्चकोटि का कवि था। भारतदान की कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण ने ग्यारह प्रसिद्ध चारण कवियो मे निम्न प्रकार गणना की है।

गिरवर दुर्गादत्त बारहट सादू गिरवर।
मेहडू राजाराम सिवा कविया घर सागर॥
भारत चैन हमीर चण्डीदत्त कृपारामवर।
प्रताप स्मर ग्रच्छ स्वच्छ राज्यो छिपाय घर॥

भारतदान जोधपुर का राजकवि ग्रौर सूर्यमल्ल का समसामयिक था। किसी कवि ने चार राज्यो के राजकवियो का नामोल्लेख करते हुए एक दोहे मे कहा है—

कोटे बू दी भाण कवि, मीसण सूरजमाल।
जोधनयर भारत ज्यु ही, गढ ग्रलवर गापाल॥

भारतदान ने राजस्थानी म काव्यबद्ध 'महाभारत' ग्र थ का प्रणयन किया था। वह महाराजा तख्तसिंह जोधपुर का कवि था। भारतीय स्वत त्रता-सग्राम मे महाराजा तख्तसिंह द्वारा ग्रंग्रेजो की सहायता करने पर उसने कहा है—

सज फौजा घमसाण, तखते नृप किधी मदत।
इण पुळ री ग्रवसाण कदे न भूलै कम्पनी॥

मवाड मे भी ग्राशिया चारणो मे करमसी, महाराणा उदयसिंह के समय मे प्रमुख व्यक्ति हुग्रा है। वह कवि भी ग्रौर राजनीति-निपुण भी था। कवियो मे सुरताण रूपक का लेखक पत्ता ग्राशिया, कीरत प्रकास का कर्त्ता बख्तराम ग्राशिया ग्रादि नामी कवि हुए हैं।

राजस्थान के ग्राशिया जातीय चारण-कवियो मे, दल्ला, दूदा, गीरादान, जवानदान, नाहरदान, तेजराम, तीथराम, पीरदान, मानदान, मोतीराम, रामलाल, सूरजमल ग्रौर शम्भूदान गण्यमा य हुए हैं।

वतमान मे मवाड म श्री सांवळदान ग्राशिया डिंगल-शली के बडे कवि हैं। उनका 'गीत महाभारत रूपक' छ द शास्त्र का ग्र थ है। यह ग्र थ रघुनाथ-रूपक की शली पर "महाभारत रूपक" नाम से लक्षण ग्र थ के रूप मे रचा गया है।

• • •

सगता सांदू रचित : इन्द्रसिंघ रूपक



राजस्थानी चारण-समाज की सांदू शाखा में अनेक विदग्ध कवि उत्पन्न हुए हैं। सम्राट् अकबर से सम्मानित माला (मल्ल कवि), रतनरासोकार कुंभकरण, ख्याति प्राप्त गीत लेखक नाथा सांदू, कीर्तिप्रकाश काव्य का सजक चैनकरण, महाराजा मानसिंह जोधपुर का दरबारी गिरवरदान सबलदान प्रभृति अनेक सांदू कवि राजस्थान मे प्रसिद्ध रहे हैं। इसी शाखा मे सगता नामक एक और कवि को जानकारी मिली है। सगता महाराजा अभयसिंह जोधपुर का समकालीन और ठाकुर इन्द्रसिंह जोधा खरवा का आश्रित कवि था। खरवा राठौडो की जोधा-शाखा के राजपूतो का ठिकाणा था। मारवाड के मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र भगवानदास की संतति का खरवा पर आधिपत्य था। ठाकुर भगवानदास के चतुर्थ वंशधर भीमसिंह के उत्तराधिकारी ठाकुर इन्द्रसिंह जोधा महाराजा अभयसिंह के प्रिय तथा मान्य सामन्त थे। उनके पोषित कवि सगता ने इन्द्रसिंह के क्षात्र-गुणो, वीर कार्यों और उदारताओ का आख्यान 'इन्द्रसिंघ रूपक' काव्य का सजन कर किया है। 'इन्द्रसिंघ रूपक' अद्यावधि एक अचर्चित और अज्ञात ग्रंथ रहा है। यह खण्ड काव्य कृति है जिसमे इन्द्रसिंह के पूर्वजो तथा इन्द्रसिंह के द्वारा लडे गये युद्धो का वर्णन किया गया है। यह ठिकाना जोधपुर नरेशो का स्वामि धर्मी और आज्ञानुवर्ती रहा है। खरवा के ठाकुरो ने जोधपुर के महाराजाओ के नेतृत्व मे शाही पक्ष और विपक्ष मे लडे गये युद्धो मे बराबर भाग लिया था। सगता सांदू ने इन्द्रसिंघ रूपक मे इन्द्रसिंह के पूर्वजो का संक्षेप मे वर्णन किया है।

इन्द्रसिंघ रूपक इतिहास और राजस्थानी भाषा उभय दृष्टियो से एक महत्वपूर्ण खण्ड काव्य है। कवि ने इसको गाथा १३, दोहे १३३, कवित्त ७३, निशानी २८, रसावला ७ तथा बेअक्षरी, झपताल, नाराच, मोतीदाम, अमृतगति प्रभृति ३३४ छंद और २ वार्ता कुल ५९७ छंदो मे निबद्ध किया है। इस प्रकार कवि राजस्थानी छंदशास्त्र का पूर्ण ज्ञाता विद्वान् रहा जान पडता है।

कवि ने इस काव्य मे गणपति और सरस्वती की वन्दना कर मारवाड के राठौड शासकों का परिगणनात्मक पद्धति से वर्णन किया है। महाराजा गजसिंह, जसवन्तसिंह, और बादशाह जहांगीर का पूर्वापेक्षया अधिक विस्तार से वर्णन किया है। बादशाह शाहजहां के शाहजादो के उत्तराधिकार के उज्जैन के युद्ध, जसवंतसिंह का जमरूद मे निधन, महाराजा

प्रजीतसिंह का जन्म, अजीतसिंह के युद्ध तथा मृत्यु, अभयसिंह का राज्यारोहण, सरबुलन्द खाँ के साथ युद्ध और बीकानेर पर सैन्य अभियान का क्रम कर वर्णन किया है। उज्जैन मे लडे गये युद्ध का राजस्थान के कई कवियो ने अपने रचित काव्यो मे वर्णन किया है। खगता सादू ने उज्जन युद्ध का निम्न प्रकार आलेखन किया है—

साहिजिहान पडं छत्र सव्वळ। चहुवै दिसा हुई धर चळचळ॥
बागी हाक डाक चहुव बळ। अवरगजेब सुण चित आकुळ॥
साहिजाद नह वचन सुहाणो। दारासुकर हिय दहाणो॥
ताम सरब आकुळ तुरकाणो। हुवो मनै चळचळ हिंदवाणी॥
साहजादा इम बात सुणाणी। तिको हुसी आगळ तुरकाणी॥
हुसी जिको खावद हिंदवाणी। अवरग सू खेलै ऊबाणी॥

दिल्ली मे शाहजादा दाराशिकोह द्वारा बादशाह शाहजहा की ओर से महाराजा जसवन्तसिंह की अनेक विध सराहना करने और औरगजेब को पराजित करने के लिए बीडा प्रदान किये जाने आदि का वर्णन किया है। फलत वह ससैन्य उज्जन पहुचा। औरगजेब ने युद्धार्थ ससकल्प जसवतसिंह को तटस्थ बनाकर जोधपुर लौट जाने के लिए अनुनय तथा भय दिखाया। किन्तु, जसवतसिंह, औरगजेब और मुराद के प्रलोभन-जनित दमझासो म नहीं आया। तब दोनो सेनाओ म विकट सग्राम छिड़ गया।

छद दोहा

ले बीडो चढ़ियो लडण, जद राजा जसराज।
अवरग सू ऊबाणिय, खेलण खेल खगाज॥
अवरगजेब कहाडियो, राजा मुरधर राय।
तुम जावो गढ़ जोधपुर, प हम असपति पाय॥
महपत ताम न मनिया, औ कागद औनाड़।
रौदा-पत सू राठवड, राजा मडी राड़॥

छद कवित्त

असवत औरगजेब धु री चोर्ड खगधार।
पर्ड गई बाथळा आच आवळो अपार॥
असुर निला आवट अमघज बळचाळा।
घड घड वहड़ा तरस बाजत जम्बाळा।
दाह अनेक नेजा धक धारूजळ सहो आघर।
खेलियो साह महाराज नू होळीकर ठंठहूर॥

छद दोहा

जसवत औरगजेब र, इम बधो अणपार।
बोले मुज चाहत वचन, ताल मुज तरवार॥

म त म दोना पक्षो क अनेक योद्धा अपने अपने स्वामि धम का पालन करते हुए रणशायी हो गए। शाहजहा समथक शाही पक्ष के बडे बड योद्धा काम आए। शाहजादे औरगजेब का पक्ष प्रबल जानकर जसवर्तसिंह ने अपन सरक्षीय वीर राजा रत्नसिंह राठाड रतलाम क उन्नत स्क धो पर युद्ध दायित्व देकर मारवाड़ की ओर प्रयाण किया और रणछोडदास भाधा सहित जोधपुर पधारे।

छद दोहा

पत जाधाण पधारियो, रयण कनै जिणवार।
भड मुरधर थारै भुजां, दळ थारो अधिकार॥

अडिया खेत ऊजैण रैं, रण भडिया राठौड।
रयण पधारे जोधपुर, मारू थाट मरोड़॥

गाहा चोसर

जसवर्तसिंह जोधपुर आयौ। खाग बळ खुरसाण खपायौ॥
ईईयो हार जीत दरसायौ। अवरगसाह पतसाह कहायौ॥
तद धर वेध कमध तुरकाण। ऊदाहर मन सोच न आंणै॥
असपत सू चाल ऊवाण। हिंदूपत सूरज हिंदवाण॥

तदुपरा त कवि न महाराजा जसवर्तसिंह और उनके सामन्तो का वणन किया है। औरगजेब के बादशाह बन जाने पर भी महाराजा जसवर्तसिंह के प्रति मन मे पठा मालिन्य दूर नहीं हुआ था। वह अवसर का ताक मे प्रतीक्षा करता रहा। सवत १७३५ मे महाराजा के निधन के साथ ही राठाडा से प्रतिशोध लेने का उसको अवसर मिला। रणछोडदास जोधा, राठौड वीर दुर्गादास, साढू सूरजमल्ल आदि वीरो ने शिशु नरश अजीतसिंह के जीवन की रक्षा की। राठौडो न पडदायतो को मार अपन मस्तको पर तुलसी मजरिया धारण कर रणभूमि मे प्राण न्योछावर करने की तैयारी की। दुर्गादास को शिशु महाराजा के सरक्षण का दायित्व सौपा और ठाकुर रणछोडदास, सूरजमल साढू आदि स्वामिभक्तो ने दिल्ली मे शाही सेना से लडकर जीवनोत्सग किया। शाही सना-नायक खाजा का रणछोडदास ने मारकर वीरगति प्रदान की, आदि वृत्तातो का इसमे वणन है। दुर्गादास के साथ अजीतसिंह को निकाल कर रणछोडदास निर्भीकतापूवक लडता हुआ काम आया था।

दुरग मुरधर देस नैं चढ़, खडियो आथम चाळ।
भूपढर जुध सूतियौ, अो गुण याव न बाळ॥

छद दोहा

औरगसाह कहाडियो, वात सुणी बीनाण।
। धाणक भरिया जहररा, पार विछूटा बाण॥

महता मुख खोजे कथन, भग चढ समद उभेळ।
बणिया अवरग रा बचन सामो छाती सेल ॥

खोजा रा वाइक खटक रूठो मारू राव।
लागो काळा नाग रे, जाणक कसणे पांव ॥

सुज वाइक सुरताण रा, दणा सुणे जिणवार।
आणक सींह तळछियो, जोधपुरो जोधार ॥

रहण कहै सुरताण न, भ्राद घराणो ग्रेह।
सूर मरण बधावणा, काई सोच करेह ॥

चदियो फिर खोजै वचन दूजी वार दुवाह।
भो रूठो करतार उण, भो रूठो रिम राह ॥

छद कवित्त

पळै बात सभळै, दूठ खीजियो बहादुर।
जाण सीह डखियो, नाग पखियो निभनर ॥
महाजोध हणमत, बहसि भायो मळियागर।
मना मजन ऊठियो धनख गजाव भुजधर ॥
कु भकन मनै अळहण सम सरवण सिधुर सभळै।
रिमाहर सीस धिखियो रहण कमध ईस पर कावळै ॥

अजीतसिंह का राज्य प्राप्त करना, सयदो से मित्रता, अजमेर पर आधिपत्य और मृत्यु के उपरात अभयसिंह के शासन का वर्णन किया गया है। अभयसिंह ने सरबुलद खा को पराभूत करने के बाद बीकानेर पर आक्रमण किया। युद्ध का नायकत्व ठाकुर इद्रसिंह जोधा ग्रन्थ नायक ने ग्रहण किया। कवि ने इद्रसिंह के आक्रमण को शब्दित करते हुए मौक्तिकदाम छद में कहा है—

वधै जुध जोध सक्रोध अधार। इन्दे अस हामळियो जिणवार ॥
भडै भड़ खेह चढै असमान। जमू दहु ऊक उड चोगान,॥
धडधड ऊपर ताम ढिगास। पडै अर खाग विभाग प्रकास ॥
उठी गजसीह तुरां भारोह। लसक्कर ताम मेळै बे लोह ॥
उठी भड इद्र तणा अणपेर। सजै गज देख मनो जुध सेर ॥
अरावा भाळ चढै असमान। भिडै धमचाळ अकाळ भयान ॥
झडाझड घोमड बाजे झाट। नरनड धनड रूप निराट ॥
कड़ाकड व्है बहै किरमाळ। भडाभड़ लोह मेळै छक भाळ ॥
धडाधड छूटत तोप घाव। दृडाहड ताम हुसै रिखराव ॥
भडाभड़ धूम मचे उणवार खडाखड खाग बजाव सार ॥

खडाखड ढाल भोरै खाग । भडाभड बीकुपुरा दोइ भाग ॥
पतावत रावत जोस अपार । इदो पथ भीम तणी उणिहार ॥
बीक सिर भीक पर्ड जिणवार । पडै अरि भीम कटै अणपार ॥
अरि दळ फिफफर काळिज अग । निरपग हाय हुवै निरळग ॥
अनका घाइ घकै उणवार । अनेका ऊपर सार अपार ॥
मडै जुध खाग किता मतवाळ । चळाचळ भोम भमै घमचाळ ॥
भळाभळ कूत दहै गज भार । बळाबळ बीजळ सार अपार ॥
खळाखळ जाम बहै जुध लाग । लळ्ळळ सूड पड जुध लाग ॥
भळ्ळळ भेय पडै अणपार । वळ्ळळ वध अनेक विचार ॥
पळच्चर गीध हुवा तिप्पत्त । जठै सुरसामत जैत अपत्त ॥
सदा जै भीमहरा सिरताज । रिधू जुग कोड अवच्चळ राज ॥
सदामद तूझ महेस सहाय । भवानीय सूझ रहै नित भाय ॥
भभा छळ ताम छिबै असमान । ॥

इस प्रकार कवि ने जोधपुर-बीकानेर युद्ध मे ठाकुर इन्द्रसिह की युद्ध-वीरता का परम्परागत चारण युद्ध काव्य शैली मे वर्णन किया है और अपने आश्रयदाता की कीर्ति का स्तवन किया है।

सगता सांदू शाखा का कवि था। इससे अधिक कवि का परिचय उपलब्ध नही हुआ है। नागौर पट्टी मे भदौरा और सीहू नामक ग्राम सांदू चारणो के मुख्य आवास स्थल रहे हैं। कवि इनमे से ही किसी स्थान का था अथवा और किसी ग्राम का यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण नही है। कवि के जीवन पक्ष को उजागर करने वाले तथ्य भी उपलब्ध नही है। अत यहा केवल एक अज्ञात कवि और अज्ञात राजस्थानी काव्य की परिचिति ही सभव बन सकी है। सगता के समकालीन सबलादान सांदू की 'इन्द्रसिह की झमाल' भी अच्छी कृति है। यह १०९ छन्दो मे समाप्त हुई है। कृति तथा कृतिकार नाम सूचक अतिम दोहा इस प्रकार है—

किरण गिरण दोय सै, वरण गुणा उकत विसाल ।
कव 'सबळ' इन्द्र भेंट की, मोतो माळ झमाळ ॥

महाराणा राजसिंह : मालपुरा की चढाई का काव्य-वृत्त



भारतीय स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रयत्न-रत प्रान्तो मे राजस्थान के मेवाड राज्य के राजा और प्रजा का अविस्मरणीय योगदान रहा है। मेवाड के शासक महाराणा सग्रामसिंह प्रथम, महाराणा उदयसिंह और महाराणा प्रतापसिंह के स्वातन्त्र्य रक्षा के लिए लडे गए युद्ध भारतीय इतिहास के गौरवमय अध्याय हैं। यद्यपि उसी काल मे जोधपुर के शासक राव चन्द्रसेन, सिवाना के राव कल्याणमल्ल, बीकानेर के महाराजा रायसिंह के अनुज रामसिंह, आमेर के कछवाहा नरेश के भ्रातृज अचलदास, तिलोकसिंह और मोहनसिंह प्रभृति ने शाही सत्ता का विरोध कर वीरगति प्राप्त की थी। किन्तु, इन वीरो के साथ न कोई बडा राज्य था, न द्रव्य था और न सुरक्षा के प्राकृतिक साधन ही उनके सहाय्य के लिए उपलब्ध थे। मेवाड के महाराणा राजसिंह ने मेवाड की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए जीवन पर्यन्त सघर्ष किया। प्राप्त सकेतो से पता चलता है कि महाराणा राजसिंह और बादशाह शाहजहा तथा शाहजादे दाराशिकोह मे, चित्तौड दुर्ग की मरम्मत को पुन ध्वस्त करने के कारण, पूरी अनबन हो चुकी थी। बादशाह शाहजहां की अस्वस्थता और युवराज दाराशिकोह के प्रभाव वृद्धि के कारण तीनो शाहजादे शुजा, मुराद और औरगजेब अपने अपने पक्ष को सबल करने मे लगे हुए थे। इन मे औरगजेब अधिक धूर्त और कुशल था। जब शाहजादो द्वारा शाहजहा की मृत्यु का प्रवाद फैलाया गया तब सिंहासन-प्राप्ति के प्रयत्न तीव्रगति पकडने लगे। दाराशिकोह और औरगजेब दोनो ने ही महाराणा राजसिंह को अपने पक्ष मे सहायक बनाने के लिए पत्र-व्यवहार किया था। किन्तु, प्रारम्भ मे तो औरगजेब की ओर राजसिंह का अधिक झुकाव था। और उत्तराधिकार के इस आपा धापी युग मे महाराणा राजसिंह ने चित्तौड की मरम्मत को ध्वस्त करने मे सहयोगी शाही सेवक नरेश राजा रायसिंह टोडा, राजा दौलतसिंह शाहपुरा प्रभृति पर आक्रमण कर तथा मालपुरा को लूटकर अपना प्रभुत्व बढ़ाया।

महाराणा राजसिंह की चढाई के सम्बन्ध मे समसामयिक ऐतिहासिक काव्यो राजविलास, राजप्रकास, जती जयचन्द्र की सईकी राजप्रशस्ति आदि ग्रथो तथा वीरविनोद और डा ओझा के

मेवाड के इतिहास मे सामग्री मिलती है। किन्तु मालपुरा पर आक्रमण सम्बन्धी विवरणो के लिए कवि महेशदास रचित 'राजसिंघ गुण रूपक' ग्रथ विशेष महत्त्व का है।

पहले सकेत किया जा चुका है कि महाराणा राजसिंह को उत्तराधिकार के युद्ध मे शाहजादा ने अपने अपने समर्थन मे लेने के लिए सम्प्रलोभन-चेष्टाए की गई थी और अप्रत्यक्ष मे मालपुरा को लूटना राजसिंह का शाही-पक्ष का विरोध और औरगजेब की सहायता ही कही जा सकती है। औरगजेब और राजसिंह के प्रारभिक मेल-जोल का पता 'राजसिंघ गुण प्रकास' की वचनिका के निम्न अश से भी प्रकट होता है—

दिल्ली का लिख्या आया। श्री दिवाण खोलि वचाया।
साहिजिहा जहमति दबाया। दारासाहि सिर ऊचाया॥
खजाने खोलि दीजै हैं। फोजों से वे विदा कीजै हैं॥
सात रोज से पातसाह दरबार न आवै। कासीद निकसनै न पावै॥
उमरावा नै दिल चुराया। पातसाही जाणै का बखत आया॥
भूलि राह बद कीनी। साहो हुठनाळ दीनी॥
चीतोड नाह पातिसाहा के पातिसाह॥
दरहाल चावरि दीजै। जोम आर्‍या की मारि लीज॥

राजसिंह ने इस परिस्थिति से लाभ उठाकर अरक्षित स्थिति मे द्रव्य प्राप्त करने और अपने विरोधियो को दण्डित करने के लिए मालपुरा पर सैनिक चढाई की। इस अभियान के लिए महाराणा राजसिंह ने अपने योद्धा, सामन्तो को आमन्त्रित कर मन्त्रणा की और योजनाबद्ध ढग से गोला बारूद, तोपखाना की तयारी कर उदयपुर से प्रस्थान किया था। तब महाराणा राजसिंह के सेनानायको मे रावत रघुनाथसिंह चूडावत सलूम्बर का अधिपति प्रमुख था। वह अनुभवी और दक्ष सेनापति था। उसने मालपुरा की लूट के पश्चात डूगरपुर, प्रतापगढ और बासवाडा पर आक्रमण कर अपनी रणनीति की प्रसिद्धि प्रकट की थी। एक छप्पय मे रावत रघुनाथसिंह का रण दक्षता का परिचय देते हुए कहा गया है—

रिण रावत रघुनाथ राण कोकियो रढाळो।
धर दिल्ली धोपटा चित धरी एमि सचळी॥
यम रघुपति ऊचर करे प्रारम्भ करारे।
मालपुरे अजमेरि मुरडि समर धर मारे॥
नन मरे आम रहसी अमर, यम चौंडाहर ऊचरे।
पुनि जनम सुत्रत रजपूत र, कथ समत्थ भारथ कर॥

मेवाड के प्रकाशित इतिहासो मे मालपुरा की चढाई का वशाख सुदि दशमी विक्रमाब्द १७१८ सवत् दिया गया है। और महाराणा का चित्तौड से प्रस्थान कर माडलगढ, बनेड़ा, शाहपुरा, जहाजपुर, सावर, फूलिया, केकड़ी पर अधिकार करने मालपुरा पहुचने तथा अनवरत

नौ दिन तक मालपुरा को लूटते रहने का वर्णन किया है। राजसिंह ने टोडा के शासक राजा रायसिंह की माता से भी साठ हजार रुपये प्राप्त किये थे। वापस लौटते समय टोंक साभर, और लालसोट, से भी दण्ड लेने का उल्लेख है। किन्तु, राजसिंघ गुणप्रकास में यह चढाई उदयपुर से ऊटाला के लिए प्रस्थान, वहा सब सामत योद्धाओ को एकत्रित कर माडलगढ को विजय करने का उल्लेख हुआ है। प्रमाण के लिए प्रकास का सोरठा द्रष्टव्य है—

ऊटोला आयाह, उदियापुर हू उल्लह ।
छिति डूगर छायाह जग ऊपरि जगराणउत ॥

समसामयिक काव्य कृतियो मे इस खडकाव्य कृति का इसलिए अधिक महत्व है कि इसमे उन प्रमुख योद्धाओ का नामोल्लेख हुआ है जिन्होने इस अभियान मे भाग लिया था। मवाड के ठिकानो से सम्बन्धित प्रकाशित वृत्तान्तो मे कुछेक सरदारो का नामोल्लेख ही मिलता है। किन्तु, इसमे राजराणा रायसिंह झाला, राव सबलसिंह चहुवाण बेदला रावत राघवदास, रावत केसरीसिंह, ठाकुर श्यामलदास मेडतिया बदनोर दुर्जनसिंह, राव इन्द्रभानु पवार, ठाकुर चन्द्रसिंह महेचा, राव राघवदेव झाला, भोपालसिंह, गगादास माड, ठाकुर मोहकमसिंह, मोहनसिंह, मानसिंह, राव माधवसिंह, रावत जैतसिंह महेशदास भावसिंह, बिहारीदास, मल्लिक शेरखा सुल्तानसिंह, रणछोडदास झाला, भावसिंह पृथ्वीराज आदि कोई २६ प्रमुख योद्धाओ के नाम - सकेत मिलते हैं। ग्रथ का मूल अश प्रस्तुत है—

छद पारीजात

उदेल मिलिया थेह । आमळा थाट अछेह ॥
रिसे रवद राण राव । घूमाडै विविध घाव ॥
छत्र सीस भडा छत्र । पाडै दिल्ली आतपत्र ॥
अरसि भुजा अभग । भिडै करै खळा भग ॥
'रासो' 'हलवद्' राण । घातणो ग्रीयणा घाण ॥
रटे सबळेस' राव । चवाणे मोटा स चाव ॥
अघराजियां बखाण । दै आघी गादी दिवाण ॥
रावत 'राघौ' वराडि । मेवाडे हदो किमाड ॥
'केहरी' रावत्त काळ । सो सिरा पाडै सुढाळ ॥
'सामळ' समथ्र सूर । चौरगे रवद्दा चूर ॥
दुरजणसिंह' दक्खि । लोह वाहै खडा लक्खि ॥
'राजड' रावत रूप । भोक्ख मैं घातणो भूप ॥
भणे राव 'इद्रभाण । बीजो 'जगिदे' बखांण ॥
चादसा' माहे अचल्ल । 'माहेचो' आखाड मल्ल - ॥

'राघवदे' 'भालो' राव । घणा खळा पाडै घाव ।।
'भूपाळ' जेहा भयक । लोह क्रीनि तोडो लक-।।
'गगसा' 'मारू' गरूर । पमाडा पमाडा पूर ।।
'मोहोकमसिंघ माण । दूणो तै राखै दिवाण ।।
मोहण' जेहा मरद् । हाथां जेणि हद्द हद्द ।।
'मानसिंघ' मन्न मोट । केवियां उपाडै कोट ।।
सुणे राव माधोसिंघ । घाडि घाडि खजो धींग ।।
'जैतसी' रावत्त जोर । म्राहुडे निसाण घोर ।।
माहेस जेहा 'महेस' । दहु करा वदै देस ।।
'भावसी' अभग भड । ऊपाडे जेहो धनड ।।
बिहारी' उधारी बेढ । ताको खळा काढ तेढ ।।
सेरखा मल्लिक सेर । गजागाहा साहा गेर ।।
'सुरताणसिंघ' साथि । ह्वै दळा पाडै हाथि ।।
'झालो' 'रिणछोड' भाळ । पाहडा घडा प्रजाळ ।।
'भावसिंघ' सा भूजाळ । म्राहडां दला उजाळ ।।
'पीथलौ' बिराजे पूत । सावतां माझी सपूत ।।
नरा रौ समद नीर । साहण समद सीर ।।
महम्मा समद माण । रीस री समद राण ।।
जवन धरा जळाबोळ । हाथियां उठ हिलोळ ।।
राण किना जम्मराण । सोच दिल्ली सुरेताण ।।

कवि ने उल्लिखित ग्रंथ मे मालपुरा से स्वर्णादि लूटन के साथ-साथ दुर्ग प्राचीर को ध्वस्त करने तथा दुर्ग को उत्पाटित करने का भी एक निशानी छंद मे चित्रण किया है। सम्बद्ध ग्रश है—

राणे भंजे मालपुर धुवणाण धिसाया ।। पट्टण हट्ट पहट्ट तोडि गढ़ खोदि गुमाया ।।
धापटि करि सारी धरा द्रहवट्ट लुटाया ।। साना हूदा सापरति इळ मोर उडाया ।।

मालपुरा आक्रमण से शाहजादा दाराशिकोह, शुजा, मुराद और औरंगजेब चारों को ही चिन्ता हुई। क्योंकि एक प्रकार से यह शाही सत्ता को अपमानित तथा प्रभावहीन करने वाली चुनौती थी। पर आपस मे फंसे रहने के कारण मुगल सत्ता तत्काल महाराणा राजसिंह को दण्डित करने मे असक्त थी।

जब औरंगजेब अपने राजसिंहासन के प्रतिस्पर्द्धकों को दमित कर दिल्ली पर बैठा तब उसने रियासती राजाओं की ओर ध्यान दिया और महाराणा राजसिंह के मनसब में

वृद्धि कर सम्मानित किया। किन्तु सं १७७० वि मे किशनगढ की राजकुमारी चारुमती के विवाह-प्रसग पर बादशाह औरगजेब और महाराणा राजसिंह के परस्पर कटुता उत्पन्न हो गई और मेवाड पर बादशाह की न र दृष्टि पडी।

'राजसिंघ गुण रूपक' ५८ छन्दो की खण्डकाव्य कृति है। कवि ने कृति को पर्यवसित करते हुए एक छप्पय मे कहा है—

तवे कवित्त तेईस निपट मुर सरस निसाणी ॥
वळे एक वचनिका मधि एक गाथ मडाणी ॥
छद तीस छत्राळ वळे दोहा मुर वच ॥
चवि रूपग चौतीस सुकवि 'माहेस' सच ॥
धटि बढि पाठ कोई मति पढौ, कथा राण बरणण कवण ॥
आदम किसू गुण ऊचर, भरियौ गुण तीनो भवण ॥

महेशदास राव जाति का कवि था। उसने 'राजसिंघ गुण रूपक' काव्य की भाति ही वि हैरासो, राव अमरसिंघ नागौर का साका तथा गौड क्षत्रियो की वशावली आदि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य कृतियो का भी सजन किया है। उपयुक्त निर्देशित सभी ग्रन्थ मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास के लिए अति उपादेय आधार स्रोत है।



महाकवि थिरपाल और उनकी कृतिया



युद्धस्थलो के लिए विख्यात राजस्थान की वीरभूमि जहाँ प्रणवीरो, जूझारों, सतियो एवं साध्वी नर नारियो के उदात्त चरित्रो के लिए वन्दनीय रही है, वहा प्रतिभा सम्पन्न विद्वानो कविराजाओ तथा ख्यात-लेखको के कारण भी ख्याति-प्राप्त रही है। राजस्थान के कवियो ने सदैव अपनी वाणी मे समय की माग को स्वर दिया है। मुगलकालीन राजस्थान की साहित्य सम्पदा का जब सम्यक्तया अध्ययन किया जाएगा, तब यह तथ्य स्पष्ट होगा कि राजस्थान के कवि केवल प्रशस्ति परक काव्य रचना ही नही करते थे अपितु युग की आवश्यकता और भविष्य की दिशा का भी अपनी रचनाओ मे निर्देश करते थे।

समय के स्वर की अभिव्यक्ति चारण कविया अथवा इस कोटि के राव, मोतीसर एव ब्राह्मण कवियो या राज्याश्रयी कवियो के काव्य मे ही उच्चरित मिलती हो, सो बात भी नही है। भक्तिकाल के हिन्दी के कवियो ने सतन को कहा सीकरी काम' आदि लिखकर समय की माग को अस्वीकार किया किन्तु राजस्थान के जैन यतियो, मुनियो तक ने जो वैष्णव धर्म और साधना से सर्वथा अलग अहिंसा, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तो के प्रबलतम अनुयायी थे युग का स्वर पहिचाना और आततायियो के विरुद्ध ओजस्वी वाणी मे अत्याचार का शक्ति से प्रतिकार करने का सन्देश दिया।

मिर्जा राजा जयसिंह (आमेर) और महाराजा जसवन्तसिंह (जोधपुर) के निधन के बाद मुगल बादशाह औरगजेब की क्रूर दाढे राजस्थान की राजनीति, आचारनीति, धर्मनीति और व्यवहार नीति को आत्मसात् करने को उद्यत हुई तो 'अहिंसा परमो धर्म' के अनुयायियो ने भी पुरजोर साहस के साथ अन्याय के विरोध मे राजस्थानी समाज को शस्त्रबल से सनद्ध होकर सामुख्य करने की प्रेरणा दी। इस काल के जैन कवियो मे जयचन्द्र यति (माताजी री वचनिका), जयचन्द्र यति (सईकी-कार), थिरपाल वाचक तथा धर्मवर्द्धन प्रभृति कतिपय ऐसे काव्यकार हुए हैं, जिनकी वाणी समय की दृष्टि के स्वर से ओतप्रोत मिलती है।

इस काल के श्रेष्ठ एव प्रतिभाशाली कवियो मे थिरपाल वाचक अभी तक अज्ञात—से ही बने रहे हैं। कविवर थिरपाल वाचक-पदधारी जैन विद्वान थे। उनके द्वारा विरचित अद्यावधि कोई पन्द्रह-सोलह उच्चकोटि की कृतियाँ उपलब्ध हुई हैं।

राजस्थानी साहित्य के किसी भी इतिहास अथवा शोध ग्रंथ में थिरपाल का कहीं कोई उल्लेख मुझे पढ़ने को नहीं मिला है। कवि थिरपाल के परिचय के लिए अभी एक मात्र स्रोत उसकी 'भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेलि रूपक' कृति के छंद ही हैं। इन छंदों में कवि ने श्वेताम्बर हर्षप्रभसूरि, रत्नप्रभ, वडगच्छ और सुगुरु कल्याण आदि का उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट होता है कि थिरपाल वाचक श्वेताम्बर थे और वडगच्छ की परम्परा में हुए थे। कवि ने वेलि की समाप्ति में अपनी गुरु-परम्परा का निम्नलिखित रूप से वर्णन किया है,—

प्रथम गीता गुण किसन पयप, सजय वेदव्यास सुपसाय ।
श्रीधर कीध अरथ टीका श्रुत, गु थीयौ व्यास सस्कृत श्रुत गाय ॥
तिणि अनुसारि श्वेतवर तवीया, सुगुरु हरखप्रभु सूरि पसाय ।
पुहमी कमो चतुभु ज पाटपति, परालबधि गुरु हेत उपाय ॥
रतनप्रभू तसु पाटि विरागर, प्रतप लिखमी राज प्रतखि ।
गछ महिमा वडगच्छ गम गु थ्यौ, दीपक ग्यान दिन प्रतिदिन दाखि ॥
तसु गछ मडण पडित तन मन, सुगुरु कल्याण तणै सुप्रसादि ।
थान मान थिरपाल थापता, गुण्यौ अ यात हेत गुणादि ॥
पामीयौ परालबधि परमातम, परमारथ मारग दधि पाज ।
श्वेतबर वध शुक्ल ध्यान समभी, अविचळ ग्यान लह्यो मन आज ॥

इस प्रकार कवि थिरपाल ने अपना परिचय प्रस्तुत किया है। उसके अन्य ग्रंथ काल क्रमानुसार इस प्रकार है —

१	आदेश्वरी छद रचनाकाल	१७३९ विक्रमी
२	क्षमाबावनी ,,	१७५३ ,,
३	भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेलि रूपक	१७५८ ,,
४	परमात्म हस जखडी रचनाकाल	१७५८ ,,
५,	ग्यान-चेतन निशानी ,,	१७६१ ,,
६	एकादशी-कथा ,,	१७६३ ,,
७	ग्यान चतुदशी साखी ,,	१७६३ ,,
८	काया-पच्चीसी ,,	
९	आध्यात्म चद्रायना ,,	
१०	आध्यात्मगति कवित्त ,,	
११	आध्यात्म सवया ,,	
१२	बुद्धि प्रकाशिका पच्चीसी ,,	
१३	विवेक चतुदशी कवित्त ,,	
१४	सतोष चातुरी हितोपदेश ,,	
१५	तेरह काठिया स्वाध्याय ,,	
१६	सुपन विचार चोपई ,,	

इस प्रकार कवि रचित कृतियो के आधार पर कवि का काव्य सर्जनकाल सवत् १७३६ वि० से १७६३ विक्रमी स्थिर होता है।

राजस्थान मे यह काल घोर अशाति, मारकाट लूटखसोट और मुगलो के आक्रमणो का काल था। ढूढाड, मारवाड और मेवाड जसे राजस्थान के तीना बडे राज्य मुगल सत्ता क विरुद्ध अपने अस्तित्व के सघष मे जुटे हुए थे। मुगलो के आतक के कारण राजस्थान की तब की अस्थिर राजनीति मे कृषि, व्यापार आदि जीविका के साधन ध्वस्त ध्वस्त हो गए थे। दुभिक्ष और महामारी के प्रकोप से भी प्रजा त्रस्त और पीडित थी। कविवर "जयच" ने अपनी कृति 'सईकी' मे अकाल का रोमाचक वणन किया है। थिरपाल वाचक ने अपनी रचनाओ म सुर असुर सम्बोधन से राजस्थान के मुगल–राजपूत सघष का खुल कर वणन किया है। कवि प्रणीत आदेश्वरी छद' नाम की रचना (जो कि २१ दोहा ३१ मोतीदाम और २ कवित्त, कुल ५४ छदो मे पयवसित हुई है) मे लिखा है–

मध्यम बीसा प्रगटी, पह भूला भूपाळ ।
प्रजा पीडाणी मुरधरा, जगि लागी जजाळ ॥
वळ दुकाळ मारी दई, प्रज पीडिजइ पचार ।
लूसीजै खटब्र न लख, चित चूका आचार ॥
विसमी विरिया यू वणी, बदी पकडाणा बाल ।
उत्तिम नै मध्यिम थरा, खित पलटाणा खाळ ॥

कवि ने आदेश्वरी छद म तोतला जालपा हरसिद्धि, सगति आदि सम्बोधनो से देवी की स्तुती की है तथा देव प्रकोप एव आसुरी प्रपीडन से लोक समाज की रक्षा हतु वदना की है। मोतीदाम छद मे देवी के पौराणिक पराक्रम का निवशन करते हुए कहा है–

बतावो बुधि महा बळवत । सकज्जो साहसधारी सत ।
प्रिथम्मी पौरिसवत पुरस्स । जगावो जाति खत्री जयवस ॥
वडव्वड भीछ वधारण वीर । गढा पुर गाम वसावणगीर ।
वडो रिखपाळ म०१ वरियाम । हिंदूपति राज हरखित हाम ॥
विधोगति वेद पुराण वगीत । पारगति ग्यान परम्म प्रवीत ।
जयो ततसार विचारण आप । इसो नर अेकज आपो–आप ॥
प्रतख्य करी सिव सक्ति प्रगट्ट । घडे घट घाट वराट सुघट्ट ।
मिटत दिल्लेछा त्रास अजाद । प्रगट्टै साहस सत प्रसाद ॥

अत म कवि न शिव–पावती की वन्दना करते हुए थिर कहै चयण सोइ थिर करो, मया करो माहश्वरी' पक्ति के साथ अपनी रचना सम्पन्न की है।

एकादशी कथा की पुष्पिका मे कवि न पुराण म वर्णित चौबीस एकादशियो का पुराण–सम्मत वणन किया है। प्रत्यक एकादशी के मास, व्रत उपवास, नाम आदि का सविस्तार वणन किया है। रामा नामक एकादशी के लिए लिखा है –

मास मास मे उभय पख, एकादसी आराध ।
व्रत महिमा तत मत वरणो, समरस लखै सुसाध ॥

पुष्पिका मे एकादशी कथा को भी 'रूपक बंध' अंकित किया है । रूपक-बंध से संभवत कवि का प्रयोजन छंदबद्ध रचना रहा है। हमीर नामक लिपिकार ने लिखा है- इति पुराण स्मृतमते रामा एकादसी कृष्णव्रत कथा संपूरण । स० १७६३ वर्षे वाचक थिरपाल रूपकबंध कृत ।

कायाचेतन निशानी मे कवि ने जीव, काया, मूर्त्त, अमूर्त्त आदि के ज्ञान का निशानी छंद मे वर्णन किया है । यह रचना जोधपुर राज्यान्तर्गत ठाकुर उदयभान ठिकाना बाता मे उनके शासनकाल म रचित है । उदाहरण के लिए निशानी की अंतिम पंक्तियां उद्धृत हैं-

समरस सेती सासतो, जगि प्रेम जगाणा ।
अह अमूर्त मूर्त मय, आपे उळखाणा ॥
थिर आतम तत थापता, सिव सुख सुण ठाणो ॥

वाचक थिरपाल जैनाचार तथा वैदिक धर्मशास्त्रों पुराणों, स्मृतियों उपनिषदों का तो अध्येता था ही परन्तु काव्य, छंद, संगीत आदि का भी अच्छा ज्ञाता था । वह केवल उपदेशात्मक धार्मिक काव्य का प्रणेता अथवा प्रचारक मात्र नहीं था । वह अपने समय म राजस्थान मे घटित राजनैतिक घटनाओं का जागरूक पर्यवेक्षक भी था । वह लम्बे समय तक जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का समकालीन था । महाराजा जसवंतसिंह और अजितसिंह के शासनकाल म मारवाड म जैन यतियों का अच्छा प्रभाव रहा । यति ज्ञानविजय तो महाराजा अजितसिंह का शिक्षागुरु भी था । महाराजा ने ज्ञानविजय को बिलाडा भूभाग का पालासणी नामक ग्राम प्रदान कर सम्मानित किया था ।

वाचक थिरपाल संगीत का उत्तम जानकार था । उसने 'भवानी विनती' संबोधन से बिलावल राग म देवीस्तुती के पद लिखे हैं । इससे स्पष्ट होता है कि वह राग-रागिनियों का भी सुज्ञाता था ।

अध्यात्म चन्द्रायणा ३३ चन्द्रायणा छंदों की कृति है । इसमे जीव, आत्मा, परमात्मा एवं जीवप्रबोध पर लिखा गया है । अध्यात्म चन्द्रायणा म कवि की बहुज्ञता का बोध होता है । यहां प्रारंभ का एक चन्द्रायणा द्रष्टव्य है —

एक ऊरणो अनादि अक अपरपरा ।
धरियै तनि निज भाव धरम धुर धरा ॥
धणी आतम जाग थकी चित धारणा ।
परिहा, अेकत पण निज अेक ईस सु विचारण ॥

काया पच्चीसी' दोहा छंद म लिखित लघु रचना है । कवि ने इसम सांसारिक और सतों को यह प्रबोध दिया है कि कल्याणकारी पथ की साधना ही श्रेष्ठ कर्म है । मान अनन्त

है। इसमें उपदेश भी विविध दृष्टा ता से आपूर्ण है। यदि ज्ञान और कर्म का सामञ्जस्य नहीं है तो वाणी का ज्ञान केवल प्रलाप है। आचरण का ज्ञान से बढ़कर महत्व है। उदाहरण के लिए काया पच्चीसी के दोहे प्रस्तुत किये जाते हैं—

कर चेळा मन आकडो, कूड साच का तोल।
अ तरि कूडइ कोण अति, माप न आवै माल॥

काया पच्चीसी थिर कहै, हरि मन राखो हत्थ।
सत सयल मिळ साधज्या, सिव मग हुदो सत्थ॥

काया पच्चीसी की ही भांति कवि रचित 'बुद्धि प्रकासिका पच्चीसी' भी उपलब्ध है। इसमें कवि ने दोहा छन्द में कर्म, अकर्म, सुकर्म, शान्ति आदि की महत्ता का वर्णन कर अततोगत्वा सुकर्मफल से शिवपद प्राप्ति का साधन दर्शाया है। सरस्वती-वंदना करते हुए कवि ने प्रारंभ में कहा है—

सरस वचन सर सरसती, दान दयानिधि देसि।
देहि बुधि प्रकासिका सदवाइ, वल विश्वरूपिणी वेसि॥

क्षमाबावनी में कवि ने क्षमा के महत्व को विविध प्रकार से प्रकट किया है। साधुओं और गृहस्थों सब के लिए क्षमा गुण को विशेष रूप से ग्रहण करने तथा पालन करने का रचनाकार ने आग्रह किया है। शत्रु-मित्र में समदृष्टि दयाभाव, सयम, योगदृष्टि आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। यद्यपि लेखक ने कृति की संज्ञा बावनी रखी है, परन्तु दोहा और छप्पय सहित कुल ५८ छन्दों की यह रचना है। कवि की भाषा और वर्णन शैली की परिचिति के लिए ५४ वां छन्द द्रष्टव्य है —

वावनी वहु भांति सुकवि वर्णै सुधि साधी।
खिमा तणौ अधिकार सुणौ सम बुधि सुधि लाधी॥
आसधे अरिहत समकती सजम सधियो।
सत्र मित्र समद्रिष्ट वडिम खिमता व्रद बधियो॥
साधीया जोग समभाव सहि मम्ता तज मन वसि करण।
थिरपाल दया द्रिढ थापता थिर तन मन निपता भरण॥

कवि थिरपाल नामक राजस्थानी और सस्कृत दोनों भाषाओं का विद्वान था। उसके द्वारा लिपिकृत सस्कृत के ग्रन्थों और भागवत, गीता आदि के उल्लेख से भी यह प्रकट होता है कि वह सस्कृत का प्रौढ़ विद्वान था। संगीत आदि ललित-कलाओं के अतिरिक्त ज्योतिष, शकुनशास्त्र, स्वरोदय आदि का भी उसने अच्छा अध्ययन-अभ्यास किया था। 'सुपन चौपाई' नामक अपनी कृति में उसने शकुन, भविष्यफल, शुभाशुभ प्रभाव इत्यादि का ८२ चौपई छन्दों में वर्णन किया है। इसमें स्वप्न में दृष्ट कीट पंखी, पशु, जीव-जन्तु के अच्छे बुरे फलों का विवेचन किया गया है। उदाहरण देखिए —

धवलो सप डसै जब रंगि, वलि विसख जीमणौं अंगि ॥
सहस लाभ तसु अरथह तणो कृष्ण सप भलो नकु भण्यो ॥

तेरह काठिया' स्वाध्याय मे कवि ने जूआ, आलस्य शोक, भय, कुवचन कुतूहल, क्रोध, कृपणता अज्ञान भ्रम, निंदा, मद और मोह इन चित्तवृत्तियो एव हय प्रवृत्तिया को त्याज्य माना है। कवि इन भावो को पामरता कहता है। इन वृत्तियो से धर्म की हानि और जीव का अकल्याण होता है। वह कहता है—

जे वट पार बाट मे, करै उउद्रव जोर ।
तिहे घस गुजराति मे, कहै काठिया चोर ॥
त्या अ तेरह काठिया, कर धम की हानि ।
तातै तिन इन की कथा, कहो विसेष वखानि ॥

इसी प्रकार सबोध चातुरी, पच बोल प्रबध, परमात्माहस जखडी, ज्ञान चतुदशी, विवेक चतुदशी, सतोष चातुरी, आध्यात्म सवैया तथा आध्यात्म गीत और कवित्त लघु रचनाएं हैं। पचबोल प्रबन्ध ३३ छदो की रचना है। इन छोटी बडी सभी रचनाओ म कवि न जैनधम के सिद्धान्त, कवल्य-प्राप्ति के साधन, मानवधम आदि उच्च भावनाओ का प्रतिपादन किया है।

कवि की सब से महत्वपूर्ण कृति है "श्री भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेलि रूपक' । यह एक ऐसी कृति है, जो कवि को सामान्य कवि-कोटि से ऊपर उठाकर महाकवि क पद पर प्रतिष्ठित करने की क्षमता रखती है। यह कवि को धम विशेष की सीमा से बाहर निकाल कर महान् काव्यकार की श्रेणी मे बिठा देती है।

'भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेलि रूपक' महाभारत म वर्णित भीष्म पव तथा भगवद्गीता को आधार स्वरूप ग्रहण कर गीता-ज्ञान, ब्रह्मविद्या निरूपणकारी ग्रथ रत्न है। भगवद्-गीता के समान, इस म कवि ने अष्टादश अध्याय रखे हैं। यह कृति गीता का शब्दश अनुवाद नही है। इसका मूलाधार गीता है और भागवत तथा रामचरित आदि की सुन्दर सूक्तियाँ भी इसमे यत्रतत्र प्रयुक्त मिलती हैं। कवि ने प्रारम्भ म ही सरस्वती की वन्दना तथा विलसत जीव चरित्र सोई ईश्वर, सिव पूरण स्वछ ईस निवास' कथन क क्रम म कोई २५ विविध छन्दों मे श्रीकृष्ण-जन्म का वर्णन किया है। परमेश्वर, सद्गुरु और सरस्वती की वन्दना करते हुए कवि कहता है —

पद पकज प्रणाम करिसि परमेसुर, सद्गुरु नामि प्रणम्य सदीव ।
सुप्रसन वचन प्रकासि सरसती, तत ग्यान जगाविसि जीव ॥१॥
तत वचन प्रकासि किसन क्रम, तत मत विध विवक सुधि ब्रह्मविलास ।
सवद अरथ सुधि सार प्रमसा, वदु सुमति छद वाद सुवास ॥२॥
किसु कहिस सहु ग्यान अनत क्रम, अलप बुधि मम ग्यानअपार ।
सुरू तदापि कहिसि तो कीरत्तन, चितवसि भगवति वसु चेतन सार ॥३॥

ग्रहा पसाय प्रकासिय वाणी, ग्रचळ ग्रनादि थकी ग्रवकास।
बहु विषय तुझ भगति तणे वसि, उगति सास्त्र सुधि ध्यान ग्रावास ।।४।।
इसवर चरणकमळि चित ग्राणे, वन्दिसि हू निज सीस निवास ।
विलसित जीव चरित्र सोई ईस्वर, सिव पूरण स्वछ ईस निवास ।।५।।

पच्चीसवें छंद म श्रीकृष्ण जन्म ग्रौर उनके प्रवाडो की घोषणा करते हुए कहा गया है—

जादव बसदव घरा जनमियो, नदराय थियो जगनाह ।
कान्हड घणा पवाडा कारिण, रुघे रहियो सब व्रजराह ।।२५।।

तदनन्तर ६२ सारसी छदो म श्रीकृष्ण के ग्रवतार लेने का कारण साधु-समाज का प्रति पालन, धम का उद्धार, कसादि कटको का विनाश तथा ग्रन्य लीलाग्रो का सार रूप म उल्लेख किया गया है —

लिव लीध द्वापर-जुग लीला ग्राप माया ग्रापणी ।
प्रति साधुजन प्रतिपाल प्रगट्यो, ध्रम उधारण निज धणी ।।
कसादि कटक भय विडारण, डंड कजि उदिम कियौ।
ग्रगीकार करणा तेण कारणि लीला ग्रवतार ज मैं लियो ।।६२।।

इस प्रकार लीलाधाम श्रीकृष्ण की लीलाग्रो के वर्णनोपरान्त सजय तथा धृतराष्ट्र के सम्वाद के साथ गीता की कथा का छद ऊधोर मे ग्रालेखन प्रारम्भ किया है—

कुजर सिख ताहरी निज सुधि । जीपै को न सकइ जुधि ।
तिणथी सको पांम त्रास । रहस्यै सुभट तम निरास ।।६३।।

छन्द दोहा

जुद्ध करेवा या जुगति, ग्राप समोवडि ग्रग।
कुळ बळ पौरिस तन कळा, जोड समोवडि जग ।।६।।
खेत सुरगो खत्रीया सत साहस ग्रम सुध्धि ।
सयणा ज्यु हित सामु हाँ वयणे नहीं विरुध्धि ।।७।।
कुण कुण मिळिया राडि कजि मुझ वायक निज मोड ।
जुधि वछुहूं जन जके, ज्या जुध करवा जोड ।।८।।

कौरव ग्रौर पाण्डव उभयपक्षीय योद्धाग्रो का श्रीकृष्ण द्वारा धनुधर ग्रर्जुन को निरीक्षण करवाने पर ग्रजुन को मोह उत्पन्न हुग्रा । सन्नाह-सन्नद्ध उन वीरो पर शस्त्र उठाने स ग्रजुन हिचकने लगा । ग्रपने मित्रो स्नेहियो पारिवारिको परिचितो ग्रौर स्वजातीयजनों को देखकर वह करुणार्द्र हो उठा । कवि ने १९ दोहो मे यह वणन कर छद नाराच मे ग्रर्जुन की कातर-भावापन्नता का चित्रण किया है—

पेखन्ति सेन जुध कन कीजिय न कातरा ।
पर्याप्त मित्र सिज खेत्र पुत्र मित्र आपरा ॥
पिता पितामह प्रडान वधवादि बापरा ।
सगा समध सुस्सरा सना बिहू सघात रा ॥१२१॥

सना को देखकर करुणा-विह्वल अर्जुन श्रीकृष्ण की एक गीत छद मे इस प्रकार स्तुति करता है —

वसुदेव सुतन विबुध गुण वदनि, मदन कस चाणूर मुकद ।
देवकी परम आणद पद दाता, वन्यै किसन सोइज गोविंद ॥
गोविंद तणी गति अगम अगोचर, इद्र वसि आणय निज आप ।
इन्द्रिया तणो वोद साई ईस्वर, वसि मन राख ईस विआप ॥
ईस्वर इसो जियो घट अतरि, अध्यापि उणहार इणि ।
परमाणद आणद पद परठै, गुरु सोई गोविंद प्रेम गिणि ॥
मूकापति वाच दीव मधसूदन, पागा चाढ गिरधर पाज ।
गिणु कृपा तूझ तणी जगत गुरु, बदसि परमाणद निवाज ।

अग्रिम वर्णन को ५५ कवित्त छदो मे समेटते हुए निम्नलिखित पक्तियो के साथ प्रथम अध्याय को समाप्त किया गया है —

"महाभारये श्रीकृष्णार्जुन सवाद कौरव पाडवा जुधवाद नामा प्रथमाध्याय रूपक वेलि सपूरण ।"

द्वितीय अध्याय मे सजय के मुख से मुर दानव दारण, मधुदानव मारण लीलाओ का चित्रण कर गीता के द्वितीय अध्याय के मूल विषय को प्रारम्भ किया गया है। दोहा तथा छप्पय नामक ७९ छदो मे इस अध्याय को समाप्त किया गया है। कवि स्थान-स्थान पर वैष्णव, जैन और शव धर्मो के सिद्धातो का समन्वय करता चला है। इस अध्याय क कलश कवित्त मे उसने कहा है—

अति धरम आराधि प्रेम परमातम पूरा ।
परमाणद प्रामीयै सहे दुख छंद सरीरा ॥
खिमा रूप करि खड्ग सिंघ ज्यू साहसधारी ।
सघण जेम सतुष्ट ग्यान ग्राम परउपगारी ॥
उपदेश ईस दिल अतरइ उदै अनक उन्तारीयै ।
थिरपाल अचळ गीता सुथिर चित आचार सचारीय ॥

कवि थिरपाल ने सप्तम अध्याय मे ९५ वेलियो गीतो का प्रयोग किया है। अन्यत्र दोहा, सोरठा, सारसी, ऊधोर मोतीदाम, छप्पय भुजग-प्रयात, नाराच तथा गयणगति आदि छदो का भी प्रचुरता से व्यवहार हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि थिरपाल न राजस्थानी और हिन्दी के छन्द-शास्त्रो का पूर्ण अनुशीलन किया था। राजस्थानी छन्द-

शास्त्र और भाषा पर तो उसका पूर्ण अधिकार था। पन्द्रह द्वाला के एक गयणगति गीत म पारब्रह्म की व्याख्या करते हुए उसका स्वरूप-वर्णन इस प्रकार किया है —

जाणिजै विवेक जोय, पामिज तिको प्रयाग ।
उपसम आंणि अगि, सुग्यानी लखै प्रसगि ॥१॥
मोग्य सु अग्रत मन्नि मरतौ नथि प्रतगिग ।
मूकाणो सो मास्य मूळ, चातुरी सामूळचूळ ।२॥
उतपति नो खपत्ति, सुजाति विजाति नत्ति ।
मही भेद विना सुय, पाप उर नाहि पुय ॥३॥
ग्यान ता गुपति गह, दीस ता प्रतखि रेह
सही दिस्ट नावै सोय, जडता प्रतखि जोय ॥४॥
पखो रूप पिण्ड—पिण्ड, पिड म ब्रह्माण्ड
ग्यान तो अछन्न गूझ, वूझ नहीं जे वूझ ॥५॥
बिहु भेद सुय सोय, अलख लखै न कोय ।
लीला मु भुलति लोय, हरि ब्रह्म कैस होय ॥६॥
बुधि सु कळयो न जाय, बचन्ने छळयो न जाय ।
गोचरे इन्द्री न ग्रहाय, पारब्रह्म सो कहाय ॥७॥
इमही न होव आहि, होवै सो दीसै इस माहि।
दीसइ ना मुणीजइ दाहि, निरुपाधि सब माहि ॥८॥
वरणावर—— ओटि, कर चरणादि कोटि ।
अवयव वय अगि, अम जाणिजै अभगि ॥९॥
समस्त नण मुख्व मोडि, ठावो दीस ठोडि ठोडि ।
जाति नै विजाति जाणि वरणा आवरण खाणि ॥१०॥
माटिम तुम्हारी मेख, विश्व सु आवरयौ भेख ।
करण चरणादि जोग, माया फरसि मिछि लोग ॥११॥
आसका सु उरजन्न माया सु फरसि मन ।
भ्रम सका मेटि माण विसन्न करा कल्याण ॥१२॥
करम्म इन्द्री कारणीक, पचे ग्यान इन्द्री ठीक ।
मन्न चित्त बुधि माँहि, व्यापार मिळत नाहि ॥१३॥
आचरति श्रेणि लोक, लहति तिके प्रलोकि ।
परब्रह्म अप्रपार समस्त जीवा समार ॥१४॥
प्राणिया उतार पार आप रहइ निराधारि ।
समस्त मिल्यौ ससारि, आतमा लिय ऊधारि ॥१५॥

आत्मा का उद्धार कर इन्द्रियों को निजाधीन करने वाले समबुद्धि पुरुष ही 'मनसा जती' कहलाते हैं। वह ब्रह्म-स्वरूप बिना इन्द्रियों—नेत्र, घ्राण, स्पर्श, श्रवण और चरणों के समस्त लोकों में भ्रमण और समस्त भोगों का भोग करता है। वह तीनों लोकों का दृष्टा, नियामक और भांति-भांति के नादों का श्रोता है—

आतम सेत ऊधारि, निजाधीन निज सगति सु ।
समबुधि सु ससारि, जीपत हइ मनसा जती ॥१६॥

कवि ने एक मोतीदाम छंद में परब्रह्म की काम-शक्ति, कर्म-व्यापार का वर्णन निम्नांकित रूप में निबद्ध किया है—

इहु परिब्रह्म तणौ निज रूप। भवनि विकार विवर्जित भूप।
समस्त इन्द्री विणज व्यापार। करै व्यापार अनेक प्रकार ॥१७॥
इन्द्रियां विण भोगी भोग अनंत। सहज सरूप उदार महंत।
नयणां विण जे निज रूप निहाळी। वैरागि सरग त्रिंत पयाळि ॥१८॥
विणा चरणां गति ज्यां ब्रहमंडि। गिणै विण नण जिता जगि पिंडि।
सुणै श्रमणां विण सार सबद्द। नवनव्व वाजित दुदंभि नद्द ॥१९॥

त्रयोदश अध्याय में प्राकृत पुरुष विवेक का विवेचन किया गया है। और इस प्रकार कवि ने गीता के सम्पूर्ण विषय को अध्यायानुसार प्रतिपादित किया है।

अंतिम अष्टादश अध्याय में अनेक छंदों के प्रयोग किये गये हैं। साथ ही काव्यात्मक पुष्पिका चाल छंद वेलि प्राय छंद में इस प्रकार अंकित की है—

संजय रिख कीध प्रतज्ञा साची, परम हरखि निज रूप सपरखि।
श्रीपति रूप श्रीकार प्रति श्रीधर, दिव्य दृष्टि सु उरजन देखि ॥१८॥
इण ठामि किसन उरजन हित आतम, लिखमी थिर तिणि ठामि ठिकाउ।
विजय थिर वास सवदा विलसै, संजय वेदव्यास सुपसाऊ ॥१९॥
सात स सिलोक कह्या वेदव्यासह, किसन सबद संवाद संकेत।
सत मत ग्रंथ रच्यौ गीता तिण, सद बुधि भेद मिळण तन सेत ॥१२०॥
धतीयो चित उरजन श्रीपति वचन, चेतावौ तम सकौ श्रोतारि।
सबद अरथ मन सुधि साचवतां, पामैं सोइ ज निहच भव पारि ॥१२१॥
प्रथम गीतगुण किसन पयप, संजय वेदव्यास सुपसाय।
श्रीधर कीध अरथ टीका श्रुत, गु थीयौ ग्यान संस्कृत श्रुत पाय ॥१२२॥

तदुपरान्त कवि ने अपनी गुरु-परम्परा प्रकट करते हुए गुरुकृपा से सन्मार्ग प्राप्ति तथा इस वेलि रूपक की निर्माण तिथि का उल्लेख किया है—

लाध्यो सदमारग अध्यातम लीला, बुधि–बळ सुणता लहै सवग।
मिळै श्रधावत तजे मिथ्यामति, ततखिण मिळै ग्यान तन तेग ॥१२७॥
ग्यानि मिळ ग्यान सु सग्रह, मिथ्याती माया सग्रह मूळ।
समता भाव मिळइ सयासी, जती महतम जाणि अनुकूल ॥१२८॥
सत्रसइ पचावनइ सवछरि, सुदी वशाख त्रितीया दिन साज।
दीपक वेलि ग्यान गुण मदिर, कहीया यो ग्यान सुगम हित काज ॥१२९॥

कवि न समस्त ग्रथ म सब द्वाला (छद) २^८३ सूचित किय हैं। आग गीता रूपक वे का माहात्म्य वणन करते हुए कवि कहता है—

पढ़ै श्रधावत समझइ, अलप मति समझ न अजाण।
विरळा लखै भगति पारथ सुगुण, विचक्षण लखइ सुजाण ॥१३०॥
सयासी ब्रह्मचार जती सहि पामै भगति सम जोग उपाय।
उत्तम ग्यान अध्यातम अविचळ, म मुख भण सुण मन भाय ॥१३१॥
पूरण मन कीध प्रतग्या पार्थिव, मिळै महातम ग्यान समध।
तत मत वीतराग चेतावण, निहुच गीता ग्यान निबध ॥१३२॥
थिर बुधि लख आतमा थानिक, थिर ग्यानता बळ सुद्रिढ थपाय।
थायै निर्वाण थिरपाल सदा थिर, प्रतखि देव गुण दरसण पसाय ॥१३३॥

8997

यह कृति स्वय कवि द्वारा लिपिकृत है। मारवाड के बातों ग्राम म इसकी रचना करन का कवि न उल्लेख किया है। अतिम छन्द कलश के कवित्त मे पुन रचना-सवत् का उल्लख किया गया है—

पचावने प्रसिधि सतरसै वरस समेत।
गीता ग्यान सुगम्य ग्रथ गुण वेलि सुहेत ॥
निज सपद निज नत्र पखि प्राणिया प्रससा।
हरि सर्वातमा हेत मन तन पवित्र मसा ॥
आतमा हेत परमातम अति, परखि परम गुरु पखियइ।
गीताय ग्यान चेतन सगति, दरसण निज द्रव देखियइ ॥

कवि थिरपाल की रचनाओ के अवलोकन तथा परीशीलन से स्पष्ट प्रकट होता है कि वह सस्कृत का सुज्ञाता, शास्त्र पुराणो का अध्येता, सगीत, शकुन, छ द आदि अनेक विद्याओ तथा कलाओ का विद्वान् था। वह राजस्थानी भाषा तथा वयणसगाई, गीत आदि का श्रेष्ठ अध्ययनशील कवि था। गीता जसी महान ज्ञाननिधि का राजस्थानी म लखन सहज काय नही है। उसके हाथ की लिपिकृत 'नागदमण' तथा 'गुण निदास्तुति' भी उपलब्ध हैं। इसस यह भी ज्ञात होता है कि वह राजस्थानी की ग्र थ-राशि का उत्तम पाठक भी था। उसकी शिष्य परम्परा म हम्मीर और चोहथ दो व्यक्तियो का उल्लेख प्राप्त है।